Chapter 1	अध्याय–१
'Education and the Significance of Life'	**शिक्षा और जीवन का तात्पर्य**
When one travels around the world, one notices to what an extraordinary degree human nature is the same, whether in India or America, in Europe or Australia. This is especially true in colleges and universities. We are turning out, as if through a mould, a type of human being whose chief interest is to find security, to become somebody important, or to have a good time with as little thought as possible.	कोई व्यक्ति जब विश्व में चारों ओर भ्रमण करता है तो वह देखता है कि चाहे भारत हो या अमेरिका, यूरोप हो अथवा ऑस्ट्रेलिया, सभी जगह हद तक मानव स्वभाव एक समान है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के संदर्भ में तो यह एकदम सच है। मानो किसी सांचे में हम एक ख़ास किस्म के मनुष्य को ढालते जा रहे हैं जिसकी प्रमुख रुचि सुरक्षा की खोज है, या जिसे कोई महत्त्वपूर्ण पद को पाना है, अथवा बुद्धि और विवेक का कम–से–कम प्रयोग करते हुए मौज–मस्ती में समय बिताना है।
Conventional education makes independent thinking extremely difficult. Conformity leads to mediocrity. To be different from the group or to resist environment is not easy and is often risky as long as we worship success. The urge to be successful, which is the pursuit of reward whether in the material or in the so-called spiritual sphere, the search for inward or outward security, the desire for comfort - this whole process smothers discontent, puts an end to spontaneity and breeds fear; and fear blocks the intelligent understanding of life. With increasing age, dullness of mind and heart sets in.	परंपरागत शिक्षा स्वतंत्र चिंतन को असंभव बना देती है। अनुकरण औसत दर्जे की मानसिकता पैदा करता है। किसी समूह से भिन्न होना अथवा परिवेश का प्रतिरोध करना सरल नहीं है; और जब तक हम सफलता की उपासना में जुटे हैं, यह ख़तरनाक भी है। सफल होने की उत्कंठा, यानी पुरस्कार पाने की दौड़ में लगे रहना, – चाहे वह भौतिक क्षेत्र में हो या तथाकथित आध्यात्मिक क्षेत्र में – अर्थात आंतरिक या बाह्य सुरक्षा की खोज, सुख–सुविधाओं की कामना–यह सारी–की–सारी प्रक्रिया असंतोष को कुंठित करने के साथ सहजता का अंत कर देती है और भय के बीज बोती है; और भय जीवन को विवेकपूर्ण ढंग से समझने में बाधक बनता है। बढ़ती हुई आयु के साथ मन और हृदय भी स्फूर्तिहीन होने लगते हैं।
In seeking comfort, we generally find a quiet corner in life where there is a minimum of conflict, and then we are	होता यह है कि सुख–सुविधा की खोज में हम जीवन का कोई शांत कोना खोज लेते

afraid to step out of that seclusion. This fear of life, this fear of struggle and of new experience, kills in us the spirit of adventure; our whole upbringing and education have made us afraid to be different from our neighbour, afraid to think contrary to the established pattern of society, falsely respectful of authority and tradition.	हैं जहां न्यूनतम द्वंद्व हो और तब उस एकांत कोने से बाहर निकलने में हमें भय लगता है। जीवन का यह भय, संघर्ष एवं नवीन अनुभवों का यह भय, हमारे अंदर साहसी उपक्रमों की भावना नष्ट कर देता है। हमारे समस्त पालन-पोषण तथा शिक्षा के कारण हम अपने पड़ोसी से भिन्न होने से डरते हैं, समाज के प्रचलित तौर-तरीकों के विपरीत सोचने से डरते हैं। हम सत्ता, प्रामाण्य और परंपरा का झूठा सम्मान करते हैं।
Fortunately, there are a few who are in earnest, who are willing to examine our human problems without the prejudice of the right or of the left; but in the vast majority of us, there is no real spirit of discontent, of revolt. When we yield uncomprehendingly to environment, any spirit of revolt that we may have had dies down, and our responsibilities soon put an end to it.	सौभाग्य से कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो गंभीर हैं। वे वामपंथी अथवा दक्षिणपंथी पूर्वाग्रहों के बिना ही हमारी मानवीय समस्याओं की छानबीन करने की इच्छा रखते हैं और उसके लिए तैयार हैं; परंतु हममें से अधिकांश व्यक्तियों में असंतोष अथवा विद्रोह की कोई वास्तविक प्रवृत्ति नहीं है। जब हम परिवेश के प्रति, बिना उसे समझे ही, आत्म-समर्पण कर देते हैं तो विद्रोह की जो भी भावना हमारे अंदर होती है, मर जाती है, और हमारी ज़िम्मेदारियां शीघ्र ही उसे ख़त्म कर देती हैं।
Revolt is of two kinds: there is violent revolt, which is mere reaction, without understanding, against the existing order; and there is the deep psychological revolt of intelligence. There are many who revolt against the established orthodoxies only to fall into new orthodoxies, further illusions and concealed self-indulgences. What generally happens is that we break away from one group or set of ideals and join another group, take up other ideals, thus creating a new pattern of thought against which we will again have to revolt. Reaction only breeds opposition, and reform needs further reform.	विद्रोह दो प्रकार का होता है। एक तो हिंसात्मक विद्रोह, जो स्थापित व्यवस्था के विरोध में बिना समझे-बूझे की हुई एक प्रतिक्रिया-मात्र होता है और दूसरा विवेकजन्य गहरा मनोवैज्ञानिक विद्रोह। ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो स्थापित रूढ़िवादी व्यवस्थाओं के विरोध में विद्रोह तो करते हैं, लेकिन फिर नई किस्म की रूढ़िवादी व्यवस्थाओं, नई भ्रांतियों एवं अप्रकट आत्म-तुष्टीकरणों में फंसते ही जाते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि हम एक तरह के आदर्शों को छोड़कर दूसरी तरह के आदर्शों को अपना लेते हैं और इस प्रकार विचारों की एक नवीन व्यवस्था-प्रणाली का सृजन करते हैं जिसके प्रति पुनः विद्रोह करना पड़ता है। सुधार में और सुधार की हमेशा ज़रूरत रहती है। प्रतिक्रिया से तो

	केवल विरोध ही उपजता है।
But there is an intelligent revolt which is not reaction, and which comes with self-knowledge through the awareness of one's own thought and feeling. It is only when we face experience as it comes and do not avoid disturbance that we keep intelligence highly awakened; and intelligence highly awakened is intuition, which is the only true guide in life.	परंतु एक ऐसा भी विवेकपूर्ण विद्रोह होता है जो प्रतिक्रिया–मात्र नहीं होता और जो अपने विचारों और भावनाओं के प्रति सजगता से उत्पन्न आत्मबोध के साथ आता है। केवल तभी हम अपनी प्रज्ञा को अत्यधिक जागृत अवस्था में रख सकते हैं, जब हम जो कुछ भी हो रहा है उसका सामना करते हैं और परेशानियों से बचने का यत्न नहीं करते। सर्वाधिक जागृत प्रज्ञा ही अंतश्चेतना होती है;यही जीवन में वास्तविक मार्ग–निर्देशक होती है।
Now, what is the significance of life? What are we living and struggling for? If we are being educated merely to achieve distinction, to get a better job, to be more efficient, to have wider domination over others, then our lives will be shallow and empty. If we are being educated only to be scientists, to be scholars wedded to books, or specialists addicted to knowledge, then we shall be contributing to the destruction and misery of the world.	जीवन का महत्त्व क्या है? हम जीवित क्यों हैं, क्यों संघर्ष कर रहे हैं? यदि हम मात्र कोई विशेष योग्यता पाने के लिए, अच्छी नौकरी पाने के लिए, अधिक कार्यकुशल होने के लिए, दूसरों पर अधिकाधिक आधिपत्य जमाने के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तो हमारा जीवन को छिछला और खोखला होगा। यदि हम केवल वैज्ञानिक बनने के लिए, पुस्तकों में लीन विद्वान होने के लिए या ज्ञान के व्यसन में पड़ा कोई विशेषज्ञ बनने के लिए शिक्षित हो रहे हैं तो हम विश्व में विनाश और दुख ही लाएंगे।
Though there is a higher and wider significance to life, of what value is our education if we never discover it? We may be highly educated, but if we are without deep integration of thought and feeling, our lives are incomplete, contradictory and torn with many fears; and as long as education does not cultivate an integrated outlook on life, it has very little significance.	जीवन का गहन और व्यापक तात्पर्य है अवश्य, लेकिन यदि हम इस तात्पर्य को कभी खोजते ही नहीं तो हमारी शिक्षा किस काम की? हम बहुत अधिक शिक्षित हो सकते हैं, परंतु यदि हमारे विचार और भावना में गहरा समन्वय नहीं है तो हमारा जीवन अपूर्ण एवं अन्तर्विरोधी होगा तथा हम भय से पीड़ित होंगे; और जब तक शिक्षा जीवन के प्रति इस समन्वित दृष्टिकोण को नहीं विकसित करती, उसका महत्त्व न के बराबर है।
In our present civilization we have divided life into so many departments that **education** has very little meaning,	अपनी वर्तमान सभ्यता में जीवन को हमने इतने अधिक विभागों में बांट दिया है कि शिक्षा का इससे अधिक और कोई अर्थ

except in learning a particular technique or profession. Instead of awakening the integrated intelligence of the individual, **education** is encouraging him to conform to a pattern and so is hindering his comprehension of himself as a total process. To attempt to solve the many problems of existence at their respective levels, separated as they are into various categories, indicates an utter lack of comprehension.	नहीं रह गया कि उससे केवल हम कोई विशेष तकनीक या व्यवसाय को सीख लें। व्यक्ति की समन्वित प्रज्ञा को जागृत करने के स्थान पर शिक्षा उसे किसी सांचे के अनुरूप बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है और इस प्रकार स्वयं को एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखने-समझने में बाधक बनती है। अस्तित्व की अनेक समस्याओं का उनके अपने-अपने स्तरों पर ही समाधान करने का प्रयत्न करना, मानो वे भिन्न-भिन्न वर्ग-कोटियों में बंटी हुई हों, इस तथ्य की ओर इशारा है कि हमने उन्हें बिल्कुल समझा ही नहीं है।
The individual is made up of different entities, but to emphasize the differences and to encourage the development of a definite type leads to many complexities and contradictions. **Education** should bring about the integration of these separate entities - for without integration, life becomes a series of conflicts and sorrows. Of what value is it to be trained as lawyers if we perpetuate litigation? Of what value is knowledge if we continue in our confusion? What significance has technical and industrial capacity if we use it to destroy one another? What is the point of our existence if it leads to violence and utter misery? Though we may have money or are capable of earning it, though we have our pleasures and our organized religions, we are in endless conflict.	व्यक्ति विभिन्न इकाइयों से मिलकर बना है, परंतु इन भिन्नताओं पर जोर देने और किसी निश्चित ढांचे के विकास को प्रोत्साहित करने से अनेक प्रकार की जटिलताओं एवं अंतर्विरोधों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा को इन पृथक इकाइयों में समन्वय लाना चाहिए, क्योंकि बिना समन्वय के जीवन दुखों और द्वंद्वों की शृंखला बन जाता है। वकील के रूप में हमारे प्रशिक्षित होने से क्या लाभ है यदि हमें मुकदमेबाजी को प्रोत्साहित ही करना है? यदि हमें अपनी भ्रांति में ही बने रहना है तो ज्ञान का क्या अर्थ है? तकनीकी और औद्योगिकी क्षमता का मतलब ही क्या है यदि हमें उनका प्रयोग एक-दूसरे को नष्ट करने के लिए करना है? हमारे अस्तित्व का क्या अर्थ है यदि उसका परिणाम हिंसा एवं अधिकाधिक कष्ट ही है? हालांकि हमारे पास संपत्ति है या उसको अर्जित करने की क्षमता है, हमारे अपने भोग-विलास हैं और संगठित धर्म भी हैं, फिर भी हम एक ऐसे द्वंद्व में पड़े हैं जिसका कोई अंत नहीं है।
We must distinguish between the personal and the individual. The personal is the accidental; and by the accidental I mean the circumstances of birth, the environment in which we	हमें व्यक्तिगत और व्यष्टिगत में जो भेद है उसे समझना चाहिए। जो व्यक्तिगत है वह आकस्मिक है; आकस्मिक से मेरा तात्पर्य जन्म की परिस्थितियां और वह परिवेश है जिसमें हमारा पोषण हुआ है, जिसमें

happen to have been brought up, with its nationalism, superstitions, class distinctions and prejudices. The personal or accidental is but momentary, though that moment may last a lifetime; and as the present system of **education** is based on the personal, the accidental, the momentary, it leads to perversion of thought and the inculcation of self-defensive fears.	राष्ट्रीयता, अंधविश्वास, वर्ग–भेद तथा पूर्वाग्रह निहित हैं। व्यक्तिगत अथवा आकस्मिक क्षणिक मात्र है, हालांकि वह क्षण जीवन भर खींचा जा सकता है, और चूंकि शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था इस व्यक्तिगत, आकस्मिक एवं क्षणिक पर ही आधारित है, इसलिए यह विचारों की भ्रष्टता तथा आत्मसुरक्षात्मक भयों को बढ़ावा देती है।
All of us have been trained by **education** and environment to seek personal gain and security, and to fight for ourselves. Though we cover it over with pleasant phrases, we have been **educated** for various professions within a system which is based on exploitation and acquisitive fear. Such a training must inevitably bring confusion and misery to ourselves and to the world, for it creates in each individual those psychological barriers which separate and hold him apart from others.	हममें से सभी को शिक्षा ने तथा परिवेश ने इसी बात के लिए प्रशिक्षित किया है कि हम व्यक्तिगत लाभ और सुरक्षा खोजें और अपने लिए संघर्ष करें। हालांकि हम उसे अलंकृत शब्दावलियों से ढंके रहते हैं, परंतु हमें एक ऐसी व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न व्यवसायों के लिए शिक्षित किया गया है जो शोषण और संचय में निहित भय पर आधारित है। ऐसे प्रशिक्षण का परिणाम निस्संदेह विश्व में तथा हमारे अंदर दुख और भ्रांति उत्पन्न करना ही होगा, क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति में उन मानसिक अवरोधों को उत्पन्न करता है जो उसे दूसरों से अलग किए रहते हैं।
Education is not merely a matter of training the mind. Training makes for efficiency, but it does not bring about completeness. A mind that has merely been trained is the continuation of the past, and such a mind can never discover the new. That is why, to find out what is right **education**, we will have to inquire into the whole significance of living.	मन को प्रशिक्षित करना ही शिक्षा नहीं है। प्रशिक्षण कार्यकुशलता तो लाता है, पर वह पूर्णता नहीं लाता। जो मन केवल प्रशिक्षण में ही रहा हो, वह वास्तव में अतीत को ही ढो रहा होता है। ऐसा मन कभी भी 'नवीन' की खोज नहीं कर सकता। इसी कारण यह जानने के लिए कि उचित शिक्षा क्या है, हमें जीवन–प्रक्रिया के संपूर्ण तात्पर्य की जांच करनी पड़ेगी।
To most of us, the meaning of life as a whole is not of primary importance, and our **education** emphasizes secondary values, merely making us proficient in some branch of knowledge. Though knowledge and efficiency are necessary, to lay chief	हममें से अधिकांश व्यक्तियों के लिए इसका कोई मूलभूत महत्त्व नहीं है कि समग्र रूप में जीवन का क्या अर्थ है; हमारी शिक्षा सतही मूल्यों पर ही ज़ोर देती है तथा ज्ञान के किसी खास हिस्से में ही वह हमें कार्य–कुशल बनाती है।

emphasis on them only leads to conflict and confusion.	हालांकि ज्ञान तथा कार्यकुशलता आवश्यक हैं, केवल उन्हीं को विशेष महत्त्व देने से भ्रांति तथा द्वंद्व पैदा होता है।
There is an efficiency inspired by love which goes far beyond and is much greater than the efficiency of ambition; and without love, which brings an integrated understanding of life, efficiency breeds ruthlessness. Is this not what is actually taking place all over the world? Our present **education** is geared to industrialization and war, its principal aim being to develop efficiency; and we are caught in this machine of ruthless competition and mutual destruction. If **education** leads to war, if it teaches us to destroy or be destroyed, has it not utterly failed?	कार्यकुशलता यदि प्रेम से प्रेरित है तो वह काफी दूर तक प्रभावी होती है और यह महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित कार्यक्षमता से कहीं श्रेष्ठ होती है; जबकि जीवन के समन्वित बोध को जन्म देने वाले प्रेम के अभाव में कार्यकुशलता कठोरता को ही जन्म देती है। क्या विश्व में सर्वत्र प्रेम-विहीन कार्यक्षमता का ही विकास नहीं हो रहा? हमारी वर्तमान शिक्षा को औद्योगीकरण तथा युद्ध के अनुकूल बनाया गया है, उसका मुख्य लक्ष्य कार्यक्षमता का विकास करना है; और हम हृदयहीन प्रतिद्वंद्विता तथा परस्पर-विनाश के इस मशीन में फंस कर रह गये हैं। यदि शिक्षा युद्ध की ओर ले जाती है, यदि यह हमें नष्ट करना अथवा नष्ट होना सिखाती है तो क्या वह पूर्णतया असफल नहीं हुई है?
To bring about right **education**, we must obviously understand the meaning of life as a whole, and for that we have to be able to think, not consistently, but directly and truly. A consistent thinker is a thoughtless person, because he conforms to a pattern; he repeats phrases and thinks in a groove. We cannot understand existence abstractly or theoretically. To understand life is to understand ourselves, and that is both the beginning and the end of **education**.	स्पष्ट है कि उचित शिक्षा को संभव बनाने के लिए हमें जीवन के अर्थ को उसकी समग्रता में समझना पड़ेगा और उसके लिए आवश्यक है कि हम सीधे और सच्चे तौर पर विचार कर सकें, न कि केवल सुसंगत, तार्किक ढंग से। दृढ़ता और सुसंगत ढंग से सोचने वाला व्यक्ति विचारहीन होता है, क्योंकि वह किसी प्रारूप का अनुयायी होता है; वह वाक्यों को दोहराता है तथा एक लीक पर ही सोचता है। अस्तित्व को निष्कर्षों अथवा सिद्धांतों में नहीं समझा जा सकता। जीवन को समझने का अर्थ स्वयं अपने को समझना है, और यही शिक्षा का आरंभ है और अंत भी।
Education is not merely acquiring knowledge, gathering and correlating facts; it is to see the **significance of life** as a whole. But the whole cannot be approached through the part - which is	जनकारी इकट्ठी करना एवं तथ्यों को एकत्रित और उन्हें आपस में मिलाना ही शिक्षा नहीं है; शिक्षा तो जीवन के अभिप्राय को उसकी समग्रता में देखना-समझना है। परंतु किसी समग्रता

what governments, organized religions and authoritarian parties are attempting to do.	को उसके टुकड़ों के माध्यम से नहीं देखा जा सकता, जब कि सरकारें, संगठित धर्म एवं सत्तावादी दल सभी यही करने का प्रयत्न कर रहे हैं।
The function of **education** is to create human beings who are integrated and therefore intelligent. We may take degrees and be mechanically efficient without being intelligent. Intelligence is not mere information; it is not derived from books, nor does it consist of clever self-defensive responses and aggressive assertions. One who has not studied may be more intelligent than the learned. We have made examinations and degrees the criterion of intelligence and have developed cunning minds that avoid vital human issues. Intelligence is the capacity to perceive the essential, the what is; and to awaken this capacity, in oneself and in others, is **education**.	शिक्षा का कार्य ऐसे मनुष्य उत्पन्न करना है जो पूर्ण, समन्वित अर्थात् प्रज्ञाशील हों। हम बिना प्रज्ञाशील हुए भी डिग्री प्राप्त कर सकते हैं तथा यांत्रिक रूप से सक्षम हो सकते हैं। प्रज्ञाशीलता का अर्थ तथ्यसंग्रह नहीं है; वह पुस्तकों से नहीं आती और न ही चालाक आत्मसमर्थक प्रतिक्रियाओं या आक्रामक आग्रहों में निहित होती है। विद्वानों की अपेक्षा एक साधारण आदमी जिसने अध्ययन नहीं किया है अधिक विवेकपूर्ण हो सकता है। हमने परीक्षाओं और उपाधियों को प्रज्ञा का मापदण्ड बना लिया है और चालाकी से भरे ऐसे मन को विकसित किया है जो महत्त्वपूर्ण मानवीय समस्याओं की उपेक्षा करता है, उनसे बच निकलता है। मौलिक, सारभूत यानी *जो है* को पूर्ण रूप से देख पाने की क्षमता प्रज्ञाशीलता है तथा स्वयं में और दूसरों में इस क्षमता को जगाने का अर्थ है शिक्षा।
Education should help us to discover lasting values so that we do not merely cling to formulas or repeat slogans; it should help us to break down our national and social barriers, instead of emphasizing them, for they breed antagonism between man and man. Unfortunately, the present system of **education** is making us subservient, mechanical and deeply thoughtless; though it awakens us intellectually, inwardly it leaves us incomplete, stultified and uncreative.	शिक्षा को गहरे जीवन–मूल्यों की खोज में हमारी सहायता करनी चाहिए, ताकि हम फार्मूलों से ही न चिपके रहें या नारों को ही न दोहराते रहें; राष्ट्रीय और सामाजिक वरोधों पर बल देने के बजाय उन्हें तोड़ने में उसे हमारी सहायता करनी चाहिए, क्योंकि वे मानव–मानव के बीच शत्रुता उत्पन्न करते हैं। दुर्भाग्य से शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था हमें गुलाम, यंत्रवत् और घोर विचारहीन बना रही है। हालांकि बौद्धिक रूप से वह हमें जगाती है, परंतु आंतरिक रूप से वह हमें अपूर्ण, कुंठित और यंत्रवत् बना डालती है, जिसमें सृजनशीलता के लिए कोई स्थान नहीं रहता।
Without an integrated understanding of	जीवन को बिना समन्वित रूप में समझे

life, our individual and collective problems will only deepen and extend. The purpose of **education** is not to produce mere scholars, technicians and job hunters, but integrated men and women who are free of fear; for only between such human beings can there be enduring peace.	हमारी व्यक्तिगत तथा सामूहिक समस्याएं और अधिक गंभीर और व्यापक ही होती जाएंगी। शिक्षा का लक्ष्य केवल विद्वानों, टेक्नीशियनों तथा नौकरी की तलाश में लगे लोगों को तैयार करना नहीं है; उसका लक्ष्य ऐसे पूर्ण स्त्री एवं पुरुष बनाना है जो भय से मुक्त हों; क्योंकि केवल ऐसे ही व्यक्तियों के बीच में स्थायी शांति संभव है।
It is in the understanding of ourselves that fear comes to an end. If the individual is to grapple with life from moment to moment, if he is to face its intricacies, its miseries and sudden demands, he must be infinitely pliable and therefore free of theories and particular patterns of thought.	अपने को समझने के साथ ही भय का अंत होता है। यदि क्षण-क्षण व्यक्ति को जीवन का सामना करना है, उसकी जटिलताओं, उसके दुखों और उसकी आकस्मिक आवश्यकताओं का सामना करना है, तो उसे अपरिमित रूप से विनम्र होना होगा; सिद्धांतों से तथा विचार के ख़ास प्रारूपों से भी मुक्त होना होगा।
Education should not encourage the individual to conform to society or to be negatively harmonious with it, but help him to discover the true values which come with unbiased investigation and self-awareness. When there is no self-knowledge, self-expression becomes self-assertion, with all its aggressive and ambitious conflicts. **Education** should awaken the capacity to be self-aware and not merely indulge in gratifying self-expression.	शिक्षा का कार्य व्यक्ति को न तो समाज के अनुरूप बनने के लिए प्रोत्साहित करना है, और न ही समाज के साथ नकारात्मक सामंजस्य लाने के लिए। वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज में व्यक्ति की सहायता करना ही शिक्षा का कार्य है और ये मूल्य निष्पक्ष अन्वेषण तथा आत्म-सजगता से ही आते हैं। आत्मबोध के अभाव में आत्म-अभिव्यक्ति अहंकार बन जाती है और उसके साथ तमाम आक्रामक एवं महत्त्वाकांक्षी द्वंद्व उत्पन्न हो जाते हैं। शिक्षा का कार्य आत्म-सजगता की क्षमता को जागृत करना है, न कि तुष्टिकरण वाली आत्माभिव्यक्ति में लिप्त करना।
What is the good of learning if in the process of living we are destroying ourselves? As we are having a series of devastating wars, one right after another, there is obviously something radically wrong with the way we bring up our children. I think most of us are aware of this, but we do not know how to deal with it.	यदि ज़िंदगी जीते-जीते हम खुद को ही तबाह करने जा रहे हैं तो ऐसी पढ़ाई से क्या लाभ? विनाशकारी युद्धों की श्रृंखला को देखकर यह ज़ाहिर है कि जिस प्रकार हम बच्चों का पालन-पोषण कर रहे हैं उसमें कोई मौलिक दोष है। मैं समझता हूं कि हममें से अधिकांश व्यक्ति इस बात से परिचित हैं, परंतु हम नहीं जानते कि उसका सामना कैसे करें।

Systems, whether educational or political, are not changed mysteriously; they are transformed when there is a fundamental change in ourselves. The individual is of first importance, not the system; and as long as the individual does not understand the total process of himself, no system, whether of the left or of the right, can bring order and peace to the world.	व्यवस्था–प्रणालियां – चाहे वे शैक्षिक हों अथवा राजनीतिक – किसी रहस्यमय ढंग से नहीं बदली जातीं; उनमें परिवर्तन तभी होता है जब हमारे अपने अंदर कोई मौलिक परिवर्तन होता है। सबसे पहले व्यक्ति का महत्त्व है, न कि व्यवस्था का, और जब तक व्यक्ति स्वयं अपनी समग्र प्रक्रिया को नहीं समझता, कोई भी व्यवस्था, चाहे वह वामपंथी हो अथवा दक्षिणपंथी, विश्व में शांति और व्यवस्था नहीं ला सकतीं।
Chapter-2	
'The Right Kind of Education'	**सही शिक्षा**
THE ignorant man is not the unlearned, but he who does not know himself, and the learned man is stupid when he relies on books, on knowledge and on authority to give him understanding. Understanding comes only through self-knowledge, which is awareness of one's total psychological process. Thus **education**, in the true sense, is the understanding of oneself, for it is within each one of us that the whole of existence is gathered.	अज्ञानी वह व्यक्ति नहीं है जो विद्वान नहीं है; अज्ञानी वह है जो स्वयं अपने को नहीं जानता; और ऐसा विद्वान व्यक्ति मूढ़ है जो समझ अथवा बोध के लिए किताबों पर, जानकारियों पर और प्रामाण्य पर निर्भर करता है। बोध केवल आत्मज्ञान से आता है, और आत्मज्ञान आता है अपने समस्त मानसिक प्रक्रिया के प्रति सजगता से। इस प्रकार शिक्षा का वास्तविक अर्थ स्वयं अपने को समझना है, क्योंकि हममें से प्रत्येक में संपूर्ण अस्तित्व समाहित है।
What we now call **education** is a matter of accumulating information and knowledge from books, which anyone can do who can read. Such **education** offers a subtle form of escape from ourselves and, like all escapes, it inevitably creates increasing misery. Conflict and confusion result from our own wrong relationship with people, things and ideas, and until we understand that relationship and alter it, mere learning, the gathering of facts and the acquiring of various skills, can only lead us to engulfing chaos and	जिसे हम शिक्षा कहते हैं वह केवल पुस्तकों से सूचनाओं एवं ज्ञान को संकलित करना है और यह कोई भी साक्षर व्यक्ति कर सकता है। ऐसी शिक्षा स्वयं को अपने से पलायन का एक बहुत सूक्ष्म तरीका देती है, और सभी पलायनों की भांति वह भी अनिवार्यतः अधिकाधिक कष्ट पैदा करती है। व्यक्तियों, वस्तुओं और विचारों के साथ हमारे अपने दोषपूर्ण संबंधों का परिणाम है द्वंद्व और भ्रांति। और, जब तक हम उस संबंध को नहीं समझते हैं तथा उसे नहीं बदलते हैं तब तक मात्र विद्वत्ता अर्थात तथ्यों का संकलन

destruction.	एवं विभिन्न प्रकार की कार्य-कुशलताओं की उपलब्धि हमें लगातार बढ़ने वाले विनाश और अराजकता की ओर ही ले जाएगी।
As society is now organized, we send our children to school to learn some technique by which they can eventually earn a livelihood. We want to make the child first and foremost a specialist, hoping thus to give him a secure economic position. But does the cultivation of a technique enable us to understand ourselves?	आज जिस रूप में समाज संगठित है उसमें हम अपने बच्चों को जीविकोपार्जन की तकनीक सीखने के लिये स्कूल भेजते हैं हम बच्चे को सबसे पहले एक विशेषज्ञ बनाना चाहते हैं, इस आशा से कि उसे आर्थिक दृष्टि से कोई सुरक्षित पद मिल जाएगा। परंतु क्या तकनीक का यह संवर्द्धन हमें स्वयं अपने को समझने के योग्य बना सकता है?
Life is pain, joy, beauty, ugliness, love, and when we understand it as a whole, at every level, that understanding creates its own technique. But the contrary is not true: technique can never bring about creative understanding.	कष्ट, आनंद, सौंदर्य, कुरूपता और प्रेम, ये सब जीवन में शामिल हैं और जब हम उन्हें समग्रता से प्रत्येक स्तर पर समझ लेते हैं, तो यह समझना स्वयं अपनी तकनीक भी ले आता है। परंतु इसका विलोम सत्य नहीं है। तकनीक कभी भी सृजनशील बोध नहीं पैदा कर सकती।
Present-day **education** is a complete failure because it has overemphasized technique. In overemphasizing technique we destroy man. To cultivate capacity and efficiency without understanding life, without having a comprehensive perception of the ways of thought and desire, will only make us increasingly ruthless, which is to engender wars and jeopardize our physical security. The exclusive cultivation of technique has produced scientists, mathematicians, bridge builders, space conquerors; but do they understand the total process of life? Can any specialist experience life as a whole? Only when he ceases to be a specialist.	आज की शिक्षा पूर्णतया असफल है, क्योंकि तकनीक पर अधिक बल दिया है। तकनीक पर आवश्यकता से अधिक बल देकर हम मनुष्य को बरबाद कर देते हैं। जीवन को समझे बिना, विचार और तृष्णा की प्रक्रिया का व्यापक साक्षात्कार किए बिना, क्षमता और कार्यकुशलता का विकास करना हमें केवल अधिकाधिक निष्ठुर बना देगा, जिससे युद्ध उपजेंगे और हमारी भैतिक सुरक्षा भी ख़तरे में पड़ जाएगी। तकनीक मात्र के संवर्द्धन ने वैज्ञानिकों को, गणितज्ञों को, पुल-निर्माताओं को, अंतरिक्ष विजेताओं को पैदा किया है; परंतु क्या वे जीवन की समस्त प्रक्रिया को समझते हैं? क्या कोई विशेषज्ञ जीवन को समग्र रूप में अनुभव कर सकता है? केवल तभी जब वह विशेषज्ञ नहीं रह जाता।
Technological progress does solve	इसमें कोई संदेह नहीं कि तकनीक की

certain kinds of problems for some people at one level, but it introduces wider and deeper issues too. To live at one level, disregarding the total process of life, is to invite misery and destruction. The greatest need and most pressing problem for every individual is to have an integrated comprehension of life, which will enable him to meet its everincreasing complexities.	उन्नति एक स्तर पर कुछ लोगों की कुछ प्रकार की समस्याओं का समाधान करती है, लेकिन वह दूसरी ओर पहले से अधिक गहरी और व्यापक समस्याओं को पैदा भी करती है। जीवन की समग्र प्रक्रिया की उपेक्षा कर किसी एक स्तर पर ही हमारे जीवित रहने का अर्थ कष्ट और नाश को निमंत्रण देना है। प्रत्येक व्यक्ति की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता और सर्वाधिक निकट समस्या है जीवन का एकीकृत, समग्र बोध, वह बोध जो निरन्तर बढ़ने वाली जटिलताओं का सामना करने में उसे सक्षम बना सके।
Technical knowledge, however necessary, will in no way resolve our inner, psychological pressures and conflict; and it is because we have acquired technical knowledge without understanding the total process of life that technology has become a means of destroying ourselves. The man who knows how to split the atom but has no love in his heart becomes a monster. We choose a vocation according to our capacities; but will the following of a vocation lead us out of conflict and confusion? Some form of technical training seems necessary; but when we have become engineers, physicians, accountants - then what? Is the practice of a profession the fulfilment of life? Apparently with most of us it is. Our various professions may keep us busy for the greater part of our existence; but the very things that we produce and are so entranced with are causing destruction and misery. Our attitudes and values make of things and occupations the instruments of envy, bitterness and hate.	तकनीकी जानकारी चाहे कितना भी ज़रूरी क्यों न हो, वह हमारे आंतरिक, मनोवैज्ञानिक दबावों और द्वंद्वों का समाधान नहीं कर सकेगी; और चूंकि जीवन की समग्र प्रक्रिया को समझे बिना ही हमने तकनीक की जानकारी हासिल की है, इसलिए तकनीक आत्मनाश का साधन मात्र बन गई है। मनुष्य जो परमाणु का विखंडन करना जानता है, परंतु उसके हृदय में यदि प्रेम नहीं है, तो वह दानव बन जाता है। हम अपनी क्षमता के अनुसार किसी व्यवसाय को चुनते हैं; परंतु क्या उस व्यवसाय का अनुगमन हमें द्वंद्व और दुर्व्यवस्था से मुक्ति करेगा? यह ठीक है कि किसी-न-किसी रूप में तकनीक का प्रशिक्षण आवश्यक प्रतीत होता है। परंतु जब हम इंजीनियर, डॉक्टर, एकाउंटेंट बन गए तो फिर उसके बाद क्या? किसी व्यवसाय का कार्य ही क्या जीवन की पूर्णता है? सामान्यतः जीवन के अधिकांश भाग में हमारे व्यवसाय हमको व्यस्त रखते हैं; परंतु वही वस्तुएं जिन्हें हम उत्पन्न करते हैं और जिनसे हम इतने अधिक अभिभूत हैं, विनाश और कष्ट का कारण बन रही हैं। हमारी अभिवृत्तियां और हमारे जीवन-मूल्य ही वस्तुओं और व्यवसायों को द्वेष, कटुता और घृणा का साधन बनाते हैं।

Without understanding ourselves, mere occupation leads to frustration, with its inevitable escapes through all kinds of mischievous activities. Technique without understanding leads to enmity and ruthlessness, which we cover up with pleasant-sounding phrases. Of what value is it to emphasize technique and become efficient entities if the result is mutual destruction? Our technical progress is fantastic, but it has only increased our powers of destroying one another, and there is starvation and misery in every land. We are not peaceful and happy people.	बिना अपने को समझे केवल किसी व्यवसाय के कार्य से कुंठा उत्पन्न होती है और उससे बचने के लिए अनिवार्यतः हम अनेक प्रकार की हानिकर क्रियाओं द्वारा पलायन करते हैं। बोध के अभाव में तकनीक हमें शत्रुता और क्रूरता की ओर ले जाती है, यद्यपि उसे हम कर्णप्रिय मुहावरों या उक्तियों के आवरण से ढके रहते हैं। तकनीक पर बल देने और हमारे कार्य–कुशल बन जाने का महत्त्व ही क्या है, यदि उसका परिणाम परस्पर विनाश ही होना है? हमारी तकनीकी उन्नति अद्‌भुत है, परंतु इसने केवल एक–दूसरे को नष्ट करने की हमारी शक्ति में ही वृद्धि की है, और सभी देशों में भुखमरी और कष्ट है। हम शांत और सुखी लोग नहीं हैं।
Another factor in the cultivation of technique is that it gives us a sense of security, not only economic, but psychological as well. It is reassuring to know that we are capable and efficient. To know that we can play the piano or build a house gives us a feeling of vitality, of aggressive independence; but to emphasize capacity because of a desire for psychological security is to deny the fullness of life. The whole content of life can never be foreseen, it must be experienced anew from moment to moment; but we are afraid of the unknown, and so we establish for ourselves psychological zones of safety in the form of systems, techniques and beliefs. As long as we are seeking inward security, the total process of life cannot be understood.	तकनीक के संवर्द्धन का एक दूसरा कारण यह भी है कि वह हमें एक सुरक्षा का भाव प्रदान करती है, केवल आर्थिक सुरक्षा ही नहीं वरन् मनोवैज्ञानिक सुरक्षा भी – हम सक्षम हैं और हम कुशल हैं यह जानकर मनुष्य के अंदर हिम्मत बनी रहती है। हम पियानो बजा सकते हैं अथवा मकान का निर्माण कर सकते हैं, यह ज्ञान हमें शक्ति एवं आक्रामक स्वतंत्रता का भाव प्रदान करता है; परंतु मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की आकांक्षा के कारण कार्य–कुशलता पर बल देना वस्तुतः जीवन की समग्रता को नकारना है। जीवन की संपूर्ण विषय–वस्तु को पहले से कदापि नहीं देखा जा सकता; उसका क्षण–प्रतिक्षण नवीन अनुभव करना पड़ता है। परंतु हम 'अज्ञात' से भयभीत रहते हैं और इसलिए प्रणालियों, तकनीकों तथा विश्वासों के रूप में हम अपने लिए सुरक्षा के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र स्थापित करते हैं। जब तक हम आंतरिक सुरक्षा की खोज में लगे हैं, तब तक जीवन की समग्र प्रक्रिया को हम नहीं समझ सकते।

The right kind of **education**, while encouraging the learning of a technique, should accomplish something which is of far greater importance: it should help man to experience the integrated process of life. It is this experiencing that will put capacity and technique in their right place. If one really has something to say, the very saying of it creates its own style; but learning a style without inward experiencing can only lead to superficiality.	सही शिक्षा का अर्थ है कि वह किसी तकनीक के ज्ञान को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ कुछ ऐसा करे जो कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है; यानी वह जीवन की अखंड प्रक्रिया का अनुभव करने में भी मनुष्य की सहायता करे। यही वह अनुभव है जो क्षमता और तकनीक को उसका उचित स्थान देगा। यदि किसी व्यक्ति के पास वास्तव में अभिव्यक्ति करने लायक कुछ है तो उसकी अभिव्यक्ति ही अपनी शैली का सृजन कर लेगी; लेकिन आंतरिक अनुभव के अभाव में बस किसी शैली को सीखना हमें केवल एक छिछलेपन की ओर ले जाएगा।
Throughout the world, engineers are frantically designing machines which do not need men to operate them. In a life run almost entirely by machines, what is to become of human beings? We shall have more and more leisure without knowing wisely how to employ it, and we shall seek escape through knowledge, through enfeebling amusements, or through ideals.	संसार भर में इंजीनियर ऐसे यंत्रों का निर्माण कर रहे हैं जिनको चलाने के लिए मनुष्य की आवश्यकता ही नहीं है। यदि जीवन पूर्णतया यंत्रों द्वारा ही चलेगा तो मनुष्यों का क्या होगा? हमारे पास अधिकाधिक विश्राम का ही समय होगा, परंतु हम यह नहीं जानते होंगे कि उसका बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग कैसे किया जाए। और हम ज्ञान, दुर्बल व मतिमंद बनाने वाले मनोविनोदों या किन्हीं आदर्शों में पलायन का प्रयास करेंगे।
I believe volumes have been written about educational ideals, yet we are in greater confusion than ever before. There is no method by which to **educate** a child to be integrated and free. As long as we are concerned with principles, ideals and methods, we are not helping the individual to be free from his own self-centred activity with all its fears and conflicts.	मैं समझता हूं कि शिक्षा-संबंधी आदर्शों के बारे में ग्रंथ पर ग्रंथ लिखे गए हैं। परंतु हम पहले से भी कहीं अधिक भ्रांति में हैं। कोई ऐसी पद्धति नहीं है जिसके द्वारा बच्चों को विवेकपूर्ण एवं मुक्त होने के लिए शिक्षित किया जा सके। जब तक हम सिद्धांतों, आदर्शों और पद्धतियों के प्रति चिंतित हैं, तब तक हम आत्म-केंद्रित क्रियाओं से, भयों और द्वंद्वों से मुक्त होने में व्यक्ति की सहायता नहीं कर सकते।
Ideals and blueprints for a perfect Utopia will never bring about the radical change of heart which is essential if there is to be an end to war and universal destruction. Ideals cannot change our present values: they can be changed only by the right kind	आदर्श अथवा यूटोपिया (काल्पनिक स्वर्ग-राज्य) की कोई भी रूपरेखा कभी भी हृदय में मौलिक परिवर्तन नहीं ला सकेगी, और यदि युद्ध तथा चारों ओर हो रहे विनाश को रोकना है तो यह परिवर्तन अनिवार्य है। आदर्श हमारे वर्तमान जीवन-मूल्यों को परिवर्तित नहीं कर

of **education**, which is to foster the understanding of what is.	सकते; यह परिवर्तन उचित प्रकार की शिक्षा से ही हो सकता है और जो वास्तविकता है उसको समझने में सहयोग करना ही यह शिक्षा है।
When we are working together for an ideal, for the future, we shape individuals according to our conception of that future; we are not concerned with human beings at all, but with our idea of what they should be. The what should be becomes far more important to us than what is, namely, the individual with his complexities. If we begin to understand the individual directly instead of looking at him through the screen of what we think he should be, then we are concerned with what is. Then we no longer want to transform the individual into something else; our only concern is to help him to understand himself, and in this there is no personal motive or gain. If we are fully aware of what is, we shall understand it and so be free of it; but to be aware of what we are, we must stop struggling after something which we are not.	जब हम किसी आदर्श के लिए, किसी भविष्य के लिए, एक साथ काम करते हैं तब हम उस भविष्य की अपनी अवधारणा के ही अनुसार व्यक्तियों को रूप प्रदान करते हैं; हमें मनुष्यों की चिंता होती ही नहीं, हमारा सरोकार होता है केवल अपनी उसी अवधारणा से जो यह बताती है कि उन्हें क्या होना चाहिए। जो वास्तव में 'है', यानी व्यक्ति और उसकी जटिलताएं, उसकी चिंता हमें नहीं होती, बल्कि जो 'होना चाहिए' वह हमारे लिए कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। यदि हम व्यक्ति को सीधे तौर पर समझना शुरू कर दें न कि 'उसे कैसा होना चाहिए' इस नज़र से उसे देंखे, तो वास्तविकता पर ही हमारा ध्यान रहेगा। तब हम व्यक्ति को किसी दूसरी वस्तु में बदलने की इच्छा नहीं करते; तब हमारा सरोकार केवल यही होगा कि अपने को समझने में हम उसकी सहायता करें और इसमें कोई व्यक्तिगत लाभ या स्वार्थ नहीं होता। यदि 'जो है' उसके प्रति पूरी सजगता है तो उसे हम समझ लेंगे और उससे मुक्त हो जाएंगे; परंतु 'जो हम हैं' उसके प्रति जागरूक होने के लिए जरूरी है कि हमें उस संघर्ष का अन्त करना पड़ेगा जिसे हम कुछ ऐसा बनने के लिए करते हैं 'जो हम नहीं हैं'।
Ideals have no place in **education** for they prevent the comprehension of the present. Surely, we can be aware of what is only when we do not escape into the future. To look to the future, to strain after an ideal, indicates sluggishness of mind and a desire to avoid the present.	आदर्शों का शिक्षा में कोई स्थान नहीं है, क्योंकि वे 'वर्तमान' के अवबोध में बाधक बनते हैं। जो वास्तविकता है उसके प्रति निस्संदेह हम तभी जागरूक हो सकते हैं जब हम भविष्य में पलायन नहीं करते। भविष्य की ओर देखना या किसी आदर्श के लिए संघर्षशील होना इसका सूचक है कि हम वर्तमान से बचना चाहते हैं तथा हमारा मन स्फूर्तिविहीन है।
Is not the pursuit of a ready-made Utopia a denial of the freedom and	एक पूर्व-कल्पित यूटोपिया (काल्पनिक स्वर्गराज्य) की खोज क्या व्यक्ति की

integration of the individual? When one follows an ideal, a pattern, when one has a formula for what should be, does one not live a very superficial, automatic life? We need, not idealists or entities with mechanical minds, but integrated human beings who are intelligent and free. Merely to have a design for a perfect society is to wrangle and shed blood for what should be while ignoring what is.	स्वतन्त्रता तथा उसके समन्वित जीवन का निषेध नहीं है? जब व्यक्ति किसी आदर्श का, किसी नमूने का, अनुगमन कर रहा है, या जब उसके पास एक सूत्र है कि उसे क्या होना चाहिए, तो क्या वह व्यक्ति अत्यन्त छिछला एवं यंत्रवत् जीवन नहीं जी रहा? हमें आदर्शवादियों की अथवा यांत्रिक मन से भरे व्यक्तियों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि आवश्यकता हमें ऐसे समन्वित व्यक्तियों की है जो प्रज्ञावान और स्वतंत्र हैं। परिपूर्ण समाज की कल्पना का कोई विशेष प्रारूप जुटाने के प्रयत्न का अन्त झगड़ों में तथा रक्त बहाने में होता है; क्योंकि 'क्या होना चाहिए' प्रमुख हो जाता है और 'क्या है' की उपेक्षा होती है।
If human beings were mechanical entities, automatic machines, then the future would be predictable and the plans for a perfect Utopia could be drawn up; then we would be able to plan carefully a future society and work towards it. But human beings are not machines to be established according to a definite pattern.	यदि मनुष्य यांत्रिक हस्तियाँ अर्थात स्वचालित यंत्र ही होते तो भविष्यकी पूर्व–घोषणा की जा सकती थी और एक सम्पूर्ण यूटोपिया की योजना बनाई जा सकती थी। उस अवस्था में हम सावधानी से एक भावी समाज की योजना बना सकते थे और उसके लिए कार्य कर सकते थे; परंतु मनुष्य यंत्र नहीं है कि उसको एक निश्चित प्रारूप के अनुसार स्थापित किया जा सके।
Between now and the future there is an immense gap in which many influences are at work upon each one of us, and in sacrificing the present for the future we are pursuing wrong means to a probable right end. But the means determine the end; and besides, who are we to decide what man should be? By what right do we seek to mould him according to a particular pattern, learnt from some book or determined by our own ambitions, hopes and fears?	वर्तमान और भविष्य के बीच एक बहुत बड़ी दूरी है, और उस दूरी के बीच हममें से प्रत्येक पर अनेक प्रकार के प्रभाव कार्य कर रहे हैं। तो उस भविष्य के लिए वर्तमान का बलिदान करने में हम एक संभाव्य उचित साध्य के लिए अनुचित साधन का अनुशीलन करते हैं। परंतु साधन साध्य को निर्धारित करता है। यही नहीं, आखिर हम होते ही कौन हैं कि हम यह निश्चय करें कि मनुष्य को क्या होना चाहिए? किस अधिकार से हम उसे एक विशेष प्रारूप में ढालने का प्रयत्न करते हैं – वह प्रारूप जिसे हमने किसी पुस्तक से सीखा है अथवा जो हमारी महत्त्वाकांक्षाओं, आशाओं और भयों द्वारा निर्धारित है?

The right kind of **education** is not concerned with any ideology, however much it may promise a future Utopia: it is not based on any system, however carefully thought out; nor is it a means of conditioning the individual in some special manner. **Education** in the true sense is helping the individual to be mature and free, to flower greatly in love and goodness. That is what we should be interested in, and not in shaping the child according to some idealistic pattern.	उचित प्रकार की शिक्षा का किसी विचार-सिद्धान्त से लगाव नहीं होता, वह विचार-सिद्धान्त चाहे जितना भी भविष्य के यूटोपिया की आशा दिलाता हो; उचित शिक्षा किसी व्यवस्था पर भी आधारित नहीं होती, चाहे वह व्यवस्था कितनी भी सावधानी से बनाई गई हो। इसी प्रकार उचित शिक्षा व्यक्ति को किसी विशेष प्रकार से प्रतिबद्ध करने का साधन भी नहीं है। शिक्षा का सही अर्थ व्यक्ति के परिपक्व तथा मुक्त होने में, प्रेम तथा अच्छाई में अधिकाधिक पनपने में, सहायता करना है। इसी में हमारी रुचि होनी चाहिए, न कि बालक को किसी आदर्शवादी नमूनों के साँचे में ढालने में।
Any method which classifies children according to temperament and aptitude merely emphasizes their differences; it breeds antagonism, encourages divisions in society and does not help to develop integrated human beings. It is obvious that no method or system can provide the right kind of **education**, and strict adherence to a particular method indicates sluggishness on the part of the educator. As long as **education** is based on cut-and-dried principles, it can turn out men and women who are efficient, but it cannot produce creative human beings.	ऐसी कोई भी प्रणाली, जो बालकों को उनके स्वभाव और अभिरुचि के आधार पर वर्गीकृत करती है, केवल उनकी भिन्नता पर बल देती है; वह बैरभाव उत्पन्न करती है, समाज में विभाजन को प्रोत्साहित करती है; समन्वित मनुष्यों के विकास में वह सहायक नहीं सिद्ध होती। यह स्पष्ट है कि कोई भी पद्धति अथवा व्यवस्था-प्रणाली सम्यक शिक्षा नहीं प्रदान कर सकती और यदि कोई शिक्षक कठोरता से किसी विशेष पद्धति का पालन करता है तो स्पष्ट है कि वह स्फूर्तिविहीन है। जब तक शिक्षा बने बनाए सिद्धान्तों पर आधारित है तब तक यद्यपि वह ऐसे स्त्री और पुरुष का निर्माण कर सकती है जो कार्य-कुशल हों, परंतु वह सृजनशील मनुष्यों को नहीं उत्पन्न कर सकती।
Only love can bring about the understanding of another. Where there is love there is instantaneous communion with the other, on the same level and at the same time. It is because we ourselves are so dry, empty and without love that we have allowed governments and systems to take over the **education** of our children and the direction of our lives; but governments want efficient technicians, not human beings, because human beings become	दूसरों को समझना केवल प्रेम द्वारा ही सम्भव होता है, जहाँ प्रेम होता है वहाँ तत्क्षण ही एक ही स्तर और एक ही काल में परस्पर संवाद हो जाता है। हम अत्यन्त नीरस, खोखले तथा प्रेमविहीन हैं और इसीलिए अपने बच्चों की शिक्षा का तथा अपने जीवन के मार्ग-निर्देशन का अधिकार हमने सरकारों और व्यवस्था-प्रणालियों को सौंप दिया है। परंतु सरकारों को तो कार्यक्षम टेक्नीशियन चाहिए न कि मनुष्य; क्योंकि मनुष्य

dangerous to governments - and to organized religions as well. That is why governments and religious organizations seek to control **education**.	सरकारों के लिए और संगठित धर्म-सम्प्रदायों के लिए भी खतरनाक हो जाते हैं। यही कारण है कि सरकारें और धार्मिक सम्प्रदाय शिक्षा पर नियंत्रण करने का प्रयत्न करते हैं।
Life cannot be made to conform to a system, it cannot be forced into a framework, however nobly conceived; and a mind that has merely been trained in factual knowledge is incapable of meeting life with its variety, its subtlety, its depths and great heights. When we train our children according to a system of thought or a particular discipline, when we teach them to think within departmental divisions, we prevent them from growing into integrated men and women, and therefore they are incapable of thinking intelligently, which is to meet life as a whole.	जीवन को ऐसा नहीं बनाया जा सकता कि वह किसी व्यवस्था के अनुरूप हो जाए। उसे किसी साँचे में ढलने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता, वह साँचा चाहे कितना भी आदर्शवादी ढंग से सोचा गया हो। जिसे केवल तथ्यों से सम्बन्धित ज्ञान में प्रशिक्षित किया गया है ऐसा मन जीवन का उसकी विविधता में, उसकी सूक्ष्मता में, उसकी गहराइयों तथा उसकी महान् उँचाइयों में सामना करने में असमर्थ होता है। जब हम किसी विचार-व्यवस्था अथवा किसी विशेष अनुशासन के अनुसार अपने बच्चों को प्रशिक्षित करते हैं, जब हम उन्हें सिखाते हैं कि वे विभागीय विभाजनों की परिधि में ही सोचें तब हम समन्वित स्त्री और पुरुष के रूप में उनके विकास में बाधक बनते हैं और इस प्रकार उनमें बुद्धिपूर्वक विचार करने की क्षमता नहीं रह जाती - बुद्धिपूर्वक विचार करने का अर्थ है समग्र जीवन का साक्षात्कार।
The highest function of **education** is to bring about an integrated individual who is capable of dealing with life as a whole. The idealist, like the specialist, is not concerned with the whole, but only with a part. There can be no integration as long as one is pursuing an ideal pattern of action; and most teachers who are idealists have put away love, they have dry minds and hard hearts. To study a child, one has to be alert, watchful, self-aware, and this demands far greater intelligence and affection than to encourage him to follow an ideal.	शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य एक ऐसे समन्वित व्यक्ति को उत्पन्न करना है जो जीवन का उसकी समग्रता में साक्षात्कार करे। एक विशेषज्ञ की भाँति ही आदर्शवादी व्यक्ति को भी समग्रता से लगाव नहीं होता, उसका संबंध केवल अंश से ही होता है। जब तक व्यक्ति कर्म के किसी आदर्श प्रारूप का अनुशीलन कर रहा है तब तक उसके लिए समन्वित होना संभव नहीं है; और अधिकांश अध्यापक, जो आदर्शवादी होते हैं, प्रेम को उठाकर एक ओर रख देते हैं; उनका मन नीरस तथा हृदय कठोर होता है। यदि हमें किसी बालक का अध्ययन करना हो तो यह आवश्यक है कि हम सजग, सावधान और आत्म-सचेत हों और इसके लिए

	अपार प्रज्ञा और प्रेम की आवश्यकता है, न कि उसे किसी आदर्श का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करने की।
Another function of **education** is to create new values. Merely to implant existing values in the mind of the child, to make him conform to ideals, is to condition him without awakening his intelligence. **Education** is intimately related to the present world crisis, and the educator who sees the causes of this universal chaos should ask himself how to awaken intelligence in the student, thus helping the coming generation not to bring about further conflict and disaster. He must give all his thought, all his care and affection to the creation of right environment and to the development of understanding, so that when the child grows into maturity he will be capable of dealing intelligently with the human problems that confront him. But in order to do this, the educator must understand himself instead of relying on ideologies, systems and beliefs.	शिक्षा का दूसरा कार्य नवीन मूल्यों का सृजन करना है। बालक के मन में केवल प्रचलित मूल्यों को आरोपित करना एवं उसको आदर्शों के अनुकूल बनाना उसे प्रतिबद्ध करना है और इससे उसकी सम्यक् बुद्धि जागृत नहीं होगी। शिक्षा का वर्तमान विश्व-संकट से घनिष्ट संबंध है और उस शिक्षक को जो इस वैश्विक दुर्व्यवस्था को देखता है अपने से यह प्रश्न करना चाहिए कि छात्र में इस बुद्धि को कैसे जगाया जाए और इस प्रकार, आनेवाली पीढ़ी को और अधिक द्वंद्व तथा विनाश उत्पन्न करने से कैसे रोका जाए? शिक्षकों को उचित प्रकार के परिवेश का सृजन करने में तथा जीवन-बोध का विकास करने में अपनी समस्त विचार-क्रिया, समस्त सावधानियाँ तथा अपने समस्त प्रेम को लगा देना चाहिए ताकि वह बच्चा परिपक्व हो, वह उन मानवी समस्याओं का विवेकपूर्ण ढंग से सामना कर सके जो उसके सामने खड़ी हैं। परंतु ऐसा करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक विचार प्रणालियों, व्यवस्थाओं और विश्वासों पर निर्भर रहने की अपेक्षा स्वयं अपने को समझे।
Let us not think in terms of principles and ideals, but be concerned with things as they are; for it is the consideration of what is that awakens intelligence, and the intelligence of the educator is far more important than his knowledge of a new method of **education**. When one follows a method, even if it has been worked out by a thoughtful and intelligent person, the method becomes very important, and the children are important only as they fit into it. One measures and classifies the child, and then proceeds to **educate** him according to some chart. This process of **education** may	सिद्धान्तों और आदर्शों की भाषा में सोचना छोड़कर हमारा संबंध वस्तुओं के उस वास्तविक रूप से होना चाहिए जैसे कि वे हैं; क्योंकि जो वास्तविकता है उसकी और ध्यान देना सम्यक् बुद्धि को जागृत करना है, और शिक्षक की सम्यक् बुद्धि शिक्षा-संबंधी किसी नई प्रणाली के उसके ज्ञान की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। जब कोई व्यक्ति किसी प्रणाली का अनुगमन करता है, चाहे वह प्रणाली कितने ही बुद्धिमान तथा विचारवान व्यक्ति द्वारा बनाई गई हो, तो स्वयं प्रणाली ही बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है और बच्चे वहीं तक महत्त्वपूर्ण रहते हैं जहाँ तक वे उसके

be convenient for the teacher, but neither the practice of a system nor the tyranny of opinion and learning can bring about an integrated human being.	प्रारूप में ठीक बैठते हैं। अध्यापक बालक की नाप–जोख करता है, उसे वर्गीकृत करता है और तब किसी चार्ट के अनुसार उसे शिक्षित करना आरम्भ करता है। शिक्षण की यह प्रक्रिया किसी अध्यापक के लिए सुविधाजनक हो सकती है; परंतु न तो इस प्रकार की किसी व्यवस्था–प्रणाली का अभ्यास ही और न पांडित्य और गणमान्यता का दबाव ही ऐसे मानव के समन्वित विकास को सम्भव बना सकता है।
The right kind of **education** consists in understanding the child as he is without imposing upon him an ideal of what we think he should be. To enclose him in the framework of an ideal is to encourage him to conform, which breeds fear and produces in him a constant conflict between what he is and what he should be; and all inward conflicts have their outward manifestations in society. Ideals are an actual hindrance to our understanding of the child and to the child's understanding of himself.	'बच्चों को क्या होना चाहिए' इस आदर्श के आरोपण के बिना बच्चे के यथार्थ को देखना–समझना ही उचित शिक्षा है। किसी आदर्श के चौखटे में उसे बन्द करने का अर्थ है उसे उसके अनुरूप बनने के लिए प्रोत्साहित करना; यह भय को तथा 'वह क्या है' और उसे 'क्या होना चाहिए' के अनवरत संघर्ष को उत्पन्न करता है। इन सभी आंतरिक द्वन्द्वों की अपनी बाह्य अभिव्यक्तियाँ होती हैं जो समाज में प्रकट होती हैं। आदर्श वास्तव में वे बाधाएँ हैं जिनके कारण हम बच्चों को नहीं समझ पाते और न बच्चा ही स्वयं अपने को समझ पाता है।
A parent who really desires to understand his child does not look at him through the screen of an ideal. If he loves the child, he observes him, he studies his tendencies, his moods and peculiarities. It is only when one feels no love for the child that one imposes upon him an ideal, for then one's ambitions are trying to fulfil themselves in him, wanting him to become this or that. If one loves, not the ideal, but the child, then there is a possibility of helping him to understand himself as he is.	कोई अभिभावक यदि अपने बालक को वास्तव में समझने की इच्छा रखेगा, तो उसे किसी आदर्श के आवरण के माध्यम से नहीं देखेगा। यदि वह बालक से प्रेम करता है तो वह उसका अवलोकन करेगा, उसकी प्रवृत्तियों का, मनःस्थितियों का उसकी विशेषताओं का अध्ययन करेगा। जब व्यक्ति को बालक से प्रेम नहीं होता है तभी वह उसके ऊपर किसी आदर्श को आरोपित करता है, क्योंकि तब उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ बालक के माध्यम से अपने तुष्टीकरण का प्रयत्न करती हैं और उसे 'यह' अथवा 'वह' बनाना चाहती हैं। यदि व्यक्ति बालक से प्रेम करता है, न कि आदर्श से, तो इस बात की संभावना होती है कि वह बालक को स्वयं अपने को समझने में उसकी सहायता कर सके।
If a child tells lies, for example, of	उदाहरणार्थ यदि कोई बालक झूठ बोलता

what value is it to put before him the ideal of truth? One has to find out why he is telling lies. To help the child, one has to take time to study and observe him, which demands patience, love and care; but when one has no love, no understanding, then one forces the child into a pattern of action which we call an ideal.	है तो उसके सामने सत्य का आदर्श रखने से क्या लाभ? यह पता लगाना होता है कि वह झूठ क्यों बोल रहा है। यदि बालक की सहायता करनी है तो हमें उसका अध्ययन एवं अन्वीक्षण करने का हमारे पास समय होना चाहिए और उसके लिए धैर्य, प्रेम तथा सावधानी की आवश्यकता होती है; परंतु जब प्रेम नहीं है, तो बालक को व्यवहार के किसी ऐसे साँचे में ढलने के लिए बाध्य किया जाता है जिसे हम आदर्श कहते हैं।
Ideals are a convenient escape, and the teacher who follows them is incapable of understanding his students and dealing with them intelligently; for him, the future ideal, the what should be, is far more important than the present child. The pursuit of an ideal excludes love, and without love no human problem can be solved.	सभी आदर्श एक सुविधाजनक पलायन हैं और जो अध्यापक उनका अनुगमन करता है वह अपने छात्रों को समझने की क्षमता नहीं रखता एवं उनसे बुद्धिमत्तापूर्वक व्यवहार नहीं करता; उसके लिए वर्तमान बालक से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।भविष्य का आदर्श 'क्या होना चाहिए'। दरअसल आदर्श का अनुशीलन प्रेम का बहिष्कार है और प्रेम के बिना किसी भी मानवीय समस्या का समाधान नहीं हो सकता।
If the teacher is of the right kind, he will not depend on a method, but will study each individual pupil. In our relationship with children and young people, we are not dealing with mechanical devices that can be quickly repaired, but with living beings who are impressionable, volatile, sensitive, afraid, affectionate; and to deal with them, we have to have great understanding, the strength of patience and love. When we lack these, we look to quick and easy remedies and hope for marvellous and automatic results. If we are unaware, mechanical in our attitudes and actions, we fight shy of any demand upon us that is disturbing and that cannot be met by an automatic response, and this is one of our major difficulties in **education**.	यदि अध्यापक सही ढंग का है तो वह किसी प्रणाली पर निर्भर नहीं रहेगा, वरन् अपने प्रत्येक शिष्य का अध्ययन करेगा। जब हम बच्चों या युवा लोगों के सम्पर्क में आते हैं तो हमें समझना चाहिए कि हम किसी ऐसी संरचना के साथ व्यवहार नहीं कर रहे हैं जिसकी हम जल्दी से मरम्मत कर उसे ठीक कर सकते हों, वरन् ऐसे जीवित प्राणियों से व्यवहार कर रहे हैं जिनको आसानी से प्रभावित किया जा सकता है, जो चंचल और संवेदनशील हैं, जो भय और प्रेम से परिपूर्ण हैं। उनके साथ व्यवहार करने में हमें अत्यधिक समझ, धैर्य और प्रेम की एक बड़ी शक्ति की आवश्यकता है। जब हममें इसका अभाव होता है, तब हम सरल तथा तत्काल लाभ देने वाले उपाय खोजते हैं और आशा करते हैं कि उनसे अद्‌भुत और स्वतः प्रेरित परिणाम निकलेंगे। यदि हम अवधान रहित हैं, अपनी अभिवृत्तियों और कार्यों में यंत्रवत हैं, तब हम प्रत्येक

	ऐसी समस्या का सामना करने से बचते हैं जो हमें परेशान करती है और जिसका किसी यांत्रिक अनुक्रिया से समाधान नहीं किया जा सकता। और यही हमारी शिक्षा की एक बहुत बड़ी कठिनाई है।
The child is the result of both the past and the present and is therefore already conditioned. If we transmit our background to the child, we perpetuate both his and our own conditioning. There is radical transformation only when we understand our own conditioning and are free of it. To discuss what should be the right kind of **education** while we ourselves are conditioned is utterly futile.	बालक अतीत और वर्तमान दोनों का ही परिणाम है और इसलिए पहले से ही संस्कारबद्ध है। यदि हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बालक के व्यक्तित्व में उतारते हैं तो हम स्वयं अपनी और बालक दोनों की संस्कारबद्धता को बरकरार रखते हैं। मौलिक परिवर्तन तभी संभव है जब हम स्वयं अपनी संस्कारबद्धता को समझें और उससे मुक्त हों। जब हम स्वयं संस्कारबद्ध हैं तो इस पर वार्ता करना कि सम्यक् शिक्षा क्या है, पूर्णतया निरर्थक है।
While the children are young, we must of course protect them from physical harm and prevent them from feeling physically insecure. But unfortunately we do not stop there; we want to shape their ways of thinking and feeling, we want to mould them in accordance with our own cravings and intentions. We seek to fulfil ourselves in our children, to perpetuate ourselves through them. We build walls around them, condition them by our beliefs and ideologies, fears and hopes - and then we cry and pray when they are killed or maimed in wars, or otherwise made to suffer by the experiences of life.	जब बच्चे छोटे हैं तो हमें निस्संदेह इसका ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें कोई शारीरिक चोट न लगे और वे शारीरिक दृष्टि से अपने को असुरक्षित भी अनुभव न करें। परंतु दुर्भाग्य से हम यहीं पर नहीं थमते ; हम उनके विचार के तरीकों को तथा उनकी भावनाओं को स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं, अपनी तृष्णाओं और मंशाओं के अनुसार हम उन्हें किसी साँचे में ढालना चाहते हैं। हम अपने बच्चों में अपना परितोष चाहते हैं; उनके माध्यम से अपने को बनाए रखना चाहते हैं। उनके चारों ओर हम दीवारें खड़ी करते हैं, अपने विश्वासों और विचार–प्रणालियों के द्वारा, आशंकाओं और आशाओं के द्वारा उन्हें संस्कारबद्ध करते हैं – और तब जब युद्धों में वे मरते हैं अथवा घायल होते हैं, अथवा दूसरे प्रकार के जीवन के अनुभवों में कष्ट उठाते हैं, तब हम रोते हैं एवं ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।
Such experiences do not bring about freedom; on the contrary, they strengthen the will of the self. The self is made up of a series of defensive and expansive reactions, and its fulfillment	ऐसे अनुभव मुक्ति नहीं लाते; बल्कि वे स्व की प्रवृत्ति को और दृढ़ करते हैं। 'स्व' सुरक्षात्मक और विस्तारक प्रतिक्रियाओं की शृंखलाओं से निर्मित है और उसको अपने प्रक्षेपणों तथा तुष्टि देने वाले तादात्म्य में

is always in its own projections and gratifying identifications. As long as we translate experience in terms of the self, of the "me" and the "mine," as long as the "I," the ego, maintains itself through its reactions, experience cannot be freed from conflict, confusion and pain. Freedom comes only when one understands the ways of the self, the experiencer. It is only when the self, with its accumulated reactions, is not the experiencer, that experience takes on an entirely different significance and becomes creation.	ही सदा परितोष मिलता है। जब तक अनुभव को हम 'स्व' तथा 'मैं' और 'मेरे' की भाषा में समझते हैं, जब तक 'मैं' अर्थात् अहं अपने को अपनी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से सुरक्षित रखता है, तब तक अनुभव को द्वन्द्व, भ्रान्ति और कष्ट से मुक्त नहीं किया जा सकता। मुक्ति तभी सम्भव होती है जब व्यक्ति 'स्व' को अर्थात अनुभवकर्त्ता की प्रक्रिया को समझता है। स्व अपनी संकलित प्रतिक्रियाओं के साथ जब अनुभवकर्त्ता नहीं रहता, केवल तभी अनुभव एक पूर्णतया विलक्षण अभिप्राय प्राप्त कर लेता है और नवसृजन में बदल जाता है।
If we would help the child to be free from the ways of the self, which cause so much suffering, then each one of us should set about altering deeply his attitude and relationship to the child. Parents and educators, by their own thought and conduct, can help the child to be free and to flower in love and goodness.	यदि हम स्व की प्रक्रिया, जो काफ़ी पीड़ा का कारण होती है, उससे मुक्त होने में बच्चे की सहायता करना चाहते हैं, तो हममें से प्रत्येक को बच्चे के प्रति अपने संबंध और अभिवृत्तियों को गहराई से बदलने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। अभिभावक एवं शिक्षक स्वयं अपने विचार और व्यवहार के द्वारा बच्चे के मुक्त होने में तथा प्रेम और अच्छाई में उनके पनपने में सहायता कर सकते हैं।
Education as it is at present in no way encourages the understanding of the inherited tendencies and environmental influences which condition the mind and heart and sustain fear, and therefore it does not help us to break through the conditioning and bring about an integrated human being. Any form of **education** that concerns itself with a part and not with the whole of man inevitably leads to increasing conflict and suffering.	व्यक्ति को विरासत में मिले झुकाव-रुझान तथा परिवेश-संबंधी प्रभाव उसके मन तथा हृदय को संस्कारबद्ध किए रहते हैं, परंतु शिक्षा का जो वर्तमान स्वरूप है वह उन्हें समझने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता और भय को बनाए रखता है। इसलिए वर्तमान शिक्षा इन प्रतिबद्धताओं को तोड़ने में तथा समन्वित मनुष्य के विकास में हमारी सहायता नहीं करती। जिस शिक्षा का संबंध केवल मनुष्य के किसी अंश से है, न कि सम्पूर्ण मनुष्य से, वह अनिवार्यतः द्वंद्व और कष्ट में वृद्धि ही करेगी।
It is only in individual freedom that love and goodness can flower; and the right kind of **education** alone can offer this freedom. Neither conformity to the present society nor the promise of a	केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता में ही प्रेम और अच्छाई प्रस्फुटित हो सकते हैं और यह स्वतंत्रता केवल उचित प्रकार की शिक्षा ही दे सकती है। वर्तमान समाज से अनुरूपता तथा भविष्य के किसी यूटोपिया की आशा,

future Utopia can ever give to the individual that insight without which he is constantly creating problems.	इन दोनों में से कोई भी, व्यक्ति को वह दृष्टि नहीं प्रदान कर सकते जिसके अभाव में वह निरन्तर समस्याओं को उत्पन्न करता जा रहा है।
The right kind of educator, seeing the inward nature of freedom, helps each individual student to observe and understand his own self-projected values and impositions; he helps him to become aware of the conditioning influences about him, and of his own desires, both of which limit his mind and breed fear; he helps him, as he grows to manhood, to observe and understand himself in relation to all things, for it is the craving for self-fulfilment that brings endless conflict and sorrow.	स्वतन्त्रता के इस आन्तरिक स्वरूप को समझ कर एक सही शिक्षक प्रत्येक छात्र की सहायता करता है जिससे कि वह स्वयं भी अपने आत्मप्रक्षिप्त मूल्यों तथा आरोपणों को देख सके एवं उन्हें समझ सके; जिससे कि वह अपने चारों ओर के संस्कारबद्ध करने वाले प्रभावों के प्रति और स्वयं अपनी इच्छाओं के प्रति जागरूक हो सके। ये दोनों ही उसके मन को परिसीमित करते हैं तथा भय उत्पन्न करते हैं। जैसे-जैसे बच्चा परिपक्व मनुष्य के रूप में विकसित होता जाता है शिक्षक उसकी सहायता करता है कि वह सभी वस्तुओं के साथ जुड़े हुए अपने आप का निरीक्षण करे तथा अपने को समझे, क्योंकि आत्म-परिपूर्ति की तृष्णा ही एक अंतहीन द्वंद्व एवं दुख का कारण है।
Surely, it is possible to help the individual to perceive the enduring values of life, without conditioning. Some may say that this full development of the individual will lead to chaos; but will it? There is already confusion in the world, and it has arisen because the individual has not been **educated** to understand himself. While he has been given some superficial freedom, he has also been taught to conform, to accept the existing values.	बिना किसी संस्कारबंधन के जीवन के शाश्वत मूल्यों का साक्षात्कार करने के लिए व्यक्ति की सहायता करना बेशक संभव है। कुछ लोग यह कह सकते हैं कि व्यक्ति का ऐसा समग्र विकास दुर्व्यवस्था उत्पन्न करेगा। परंतु क्या ऐसा होगा? विश्व में पहले से ही तमाम भ्रांतियाँ हैं और वे इसीलिए उत्पन्न हुई हैं क्योंकि व्यक्ति को आत्मबोध की शिक्षा नहीं दी गई। यदि एक ओर उसे कुछ छिछली स्वतन्त्रता दी भी गई है तो साथ ही उसे यह भी सिखाया गया है कि प्रचलित जीवन-मूल्यों के अनुकूल कैसे बना जाए, उन्हें कैसे स्वीकार किया जाए।
Against this regimentation, many are revolting; but unfortunately their revolt is a mere self-seeking reaction, which only further darkens our existence. The right kind of educator, aware of the mind's tendency to reaction, helps the student to alter present values, not out of reaction against them, but through	इस नियंत्रण के विरोध में अनेक लोग विद्रोह कर रहे हैं, परंतु दुर्भाग्य से उनका विद्रोह केवल आत्म-परितोष की प्रतिक्रिया मात्र है, जो हमारे अस्तित्व को और भी अधिक अन्धकारपूर्ण बना देता है। उचित प्रकार का शिक्षक मन की प्रतिक्रियाशील प्रवृत्ति के प्रति जागरूक रहता है और वह

understanding the total process of life. Full cooperation between man and man is not possible without the integration which right **education** can help to awaken in the individual.	प्रचलित मूल्यों को बदलने में छात्र की सहायता करता है, उन मूल्यों के प्रति विद्रोह के रूप में नहीं बल्कि जीवन की समग्र प्रक्रिया के रूप में। उस समन्वय के अभाव में, जिसको व्यक्ति में जागृत करने में सही शिक्षा ही सहायक बन सकती है, मनुष्य–मनुष्य के बीच पूर्ण सहयोग संभव नहीं है।
Why are we so sure that neither we nor the coming generation, through the right kind of **education**, can bring about a fundamental alteration in human relationship? We have never tried it; and as most of us seem to be fearful of the right kind of **education**, we are disinclined to try it. Without really inquiring into this whole question, we assert that human nature cannot be changed, we accept things as they are and encourage the child to fit into the present society; we condition him to our present ways of life, and hope for the best. But can such conformity to present values, which lead to war and starvation, be considered **education**?	हमारा यह निश्चित विश्वास क्यों है कि न तो हम और न तो आनेवाली पीढ़ी ही उचित शिक्षा के द्वारा मानव–संबंध में कोई मौलिक परिवर्तन उत्पन्न कर सकती है? क्योंकि हमने कभी उसके लिए प्रयत्न नहीं किया है; और चूँकि हममें से अधिकांश उचित प्रकार की शिक्षा के प्रति भयभीत प्रतीत होते हैं, इसलिए हमें उसका प्रयोग करने में कोई अभिरुचि भी नहीं है। इस सारे प्रश्न का वास्तव में अध्ययन किए बिना ही हम यह दावा करते हैं कि मानव स्वभाव को बदला नहीं जा सकता; हम वस्तुओं को जैसी वे हैं, स्वीकार कर लेते हैं और बालक को प्रोत्साहित करते हैं कि वह वर्तमान समाज के अनुकूल अपने को बनाए; जीवन के अपने प्रचलित तरीकों के प्रति हम बच्चों को संस्कारबद्ध करते हैं और फिर अच्छे परिणाम की आशा करते हैं। परंतु क्या युद्ध और भुखमरी पैदा करने वाले प्रचलित मूल्यों के अनुसरण को शिक्षा कहा जा सकता है?।
Let us not deceive ourselves that this conditioning is going to make for intelligence and happiness. If we remain fearful, devoid of affection, hopelessly apathetic, it means that we are really not interested in encouraging the individual to flower greatly in love and goodness, but prefer that he carry on the miseries with which we have burdened ourselves and of which he also is a part.	हम इस भ्रम में न रहें कि यह संस्कारबद्धता कभी सम्यक् बुद्धि एवं सुख उत्पन्न करने जा रही है। यदि हम भयभीत हैं, प्रेम से रहित हैं, अत्यधिक उदासीन हैं तो इसका यही अर्थ है कि हमें व्यक्ति को इसके लिए प्रोत्साहित करने में वास्तव में कोई रुचि है ही नहीं कि उसमें प्रेम और अच्छाई अधिकाधिक पनपे। हम यही पसन्द करते हैं कि वह उन्हीं कष्टों को बनाए रखे जिनके बोझ से हम पीड़ित हैं और वह भी जिनका एक अंग है।
To condition the student to accept the present environment is quite obviously stupid. Unless we voluntarily bring	छात्र को वर्तमान परिवेश को स्वीकार करने के लिए संस्कारबद्ध करना स्पष्टतया मूर्खतापूर्ण है। जब तक हम स्वेच्छा से

about a radical change in **education**, we are directly responsible for the perpetuation of chaos and misery; and when some mons and brutal revolution finally comes, it will only give opportunity to another group of people to exploit and to be ruthless. Each group in power develops its own means of oppression, whether through psychological persuasion or brute force.	शिक्षा में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं लाते तब तक दुर्व्यवस्था और कष्ट को बनाए रखने के लिए अपरोक्ष रूप से हम ही जिम्मेदार हैं; और ऐसी अवस्था में यदि अन्त में जब कोई भयानक एवं क्रूर क्रान्ति आएगी तो वह मनुष्यों के दूसरे वर्ग को अवसर देगी कि वे निष्ठुर बनें और शोषण करें। प्रत्येक सत्ताधारी वर्ग शोषण के अपने साधनों का विकास कर लेता है, चाहे वह शोषण मनोवैज्ञानिक दबाव द्वारा हो अथवा नग्न शक्ति-प्रदर्शन द्वारा।
For political and industrial reasons, discipline has become an important factor in the present social structure, and it is because of our desire to be psychologically secure that we accept and practise various forms of discipline. Discipline guarantees a result, and to us the end is more important than the means; but the means determine the end.	राजनीतिक और औद्यागिक कारणों से वर्तमान सामाजिक संरचना में अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, और चूँकि हमारे अन्दर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की इच्छा है, अनुशासन से निश्चय ही एक परिणाम निकलता है और हमारे लिए साध्य ही साधन की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण होता है; परंतु साधन ही साध्य के स्वरूप को निर्धारित करता है।
One of the dangers of discipline is that the system becomes more important than the human beings who are enclosed in it. Discipline then becomes a substitute for love, and it is because our hearts are empty that we cling to discipline. Freedom can never come through discipline, through resistance; freedom is not a goal, an end to be achieved. Freedom is at the beginning, not at the end, it is not to be found in some distant ideal.	अनुशासन के अनेक खतरों में से एक खतरा यह है कि उसमें मनुष्यों की अपेक्षा व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत वे घिरे होते हैं, अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। तब अनुशासन प्रेम का स्थान ले लेता है और चूँकि हमारे हृदय खोखले होते हैं इसलिए हम अनुशासन से चिपके रहते हैं। स्वतन्त्रता कभी भी अनुशासन अथवा प्रतिरोध के माध्यम से नहीं आ सकती, स्वतन्त्रता कोई लक्ष्य, कोई साध्य नहीं है, जिसे उपलब्ध करना है। स्वतन्त्रता तो आरम्भ में है, न कि अन्त में, उसे किसी दूर भविष्य के आदर्श में नहीं प्राप्त किया जाना है।
Freedom does not mean the opportunity for self-gratification or the setting aside of consideration for others. The teacher who is sincere will protect the children and help them in every possible way to grow towards the right kind of	स्वतन्त्रता का अर्थ न तो आत्म-परितोष के लिए अवसर की खोज है और न ही दूसरों के प्रति ख्याल की उपेक्षा। एक निष्ठावान अध्यापक बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखता है और सभी सम्भव तरीकों से उचित प्रकार की स्वतन्त्रता की ओर

freedom; but it will be impossible for him to do this if he himself is addicted to an ideology, if he is in any way dogmatic or self-seeking.	बढ़ने में उनकी सहायता करता है; परंतु यदि वह स्वयं किसी विचार-प्रणाली का आदी है, यदि वह स्वयं किसी प्रकार से रूढ़िवादी है अथवा आत्म-परितोष में लगा है तो उसके लिए ऐसा करना सम्भव न होगा।
Sensitivity can never be awakened through compulsion, One may compel a child to be outwardly quiet, but one has not come face to face with that which is making him obstinate, impudent, and so on. Compulsion breeds antagonism and fear. Reward and punishment in any form only make the mind subservient and dull; and if this is what we desire, then **education** through compulsion is an excellent way to proceed.	संवेदनशीलता को जोर-जबरदस्ती से कभी नहीं जगाया जा सकता। हम एक बच्चे को बाध्य कर सकते हैं कि वह बाहर से शान्त रहे, परंतु इसका अर्थ यह है कि हमने उस तत्त्व का सामना नहीं किया जो उसे जिद्दी, उद्दंड आदि बना रहा है। बाध्यता ही विरोध तथा भय उत्पन्न करती है। किसी भी प्रकार का पुरस्कार अथवा दण्ड, मन को उदास तथा स्फूर्ति-विहीन बनाता है, और यदि हम यही चाहते हैं तो जोर-जबरदस्ती वाली शिक्षा ही सर्वोत्तम विधि है और इसी को हमें आगे बढ़ाएं।
But such **education** cannot help us to understand the child, nor can it build a right social environment in which separatism and hatred will cease to exist. In the love of the child, right **education** is implied. But most of us do not love our children; we are ambitious for them - which means that we are ambitious for ourselves. Unfortunately, we are so busy with the occupations of the mind that we have little time for the promptings of the heart. After all, discipline implies resistance; and will resistance ever bring love? Discipline can only build walls about us; it is always exclusive, ever making for conflict. Discipline is not conducive to understanding; for understanding comes with observation, with inquiry in which all prejudice is set aside.	परंतु ऐसी शिक्षा बालक को समझने में हमारी सहायता नहीं कर सकती, न ही वह एक ऐसे उचित सामाजिक परिवेश का निर्माण कर सकती है जिसमें विघटनवाद और घृणा का अस्तित्व ही न हो। बच्चे के प्रति प्रेम में ही सही शिक्षा निहित है। परंतु हममें से अधिकांश अपने बच्चों से प्रेम नहीं करते; हम उनके प्रति महत्त्वाकांक्षी हैं - जिसका अर्थ है हम स्वयं अपने लिए महत्त्वाकांक्षी हैं। दुर्भाग्य से हम मन के कार्य-कलापों में इतने व्यस्त हैं कि हमारे पास हृदय के प्रबोधनों के लिए बहुत कम समय है। आखिर, अनुशासन में प्रतिरोध निहित है और क्या प्रतिरोध प्रेम ला सकता है? अनुशासन केवल हमारे चारों ओर दीवारें ही खड़ी कर सकता है; वह सदा निषेधात्मक होता है, सदा द्वंद्व उत्पन्न करता है। अनुशासन अवबोध के लिए कोई अनुकूलता नहीं उत्पन्न करता; क्योंकि अवबोध अन्वीक्षण से आता है, उस विचारणा से आता है जिसमें सभी पूर्वाग्रहों को दरकिनार कर दिया जाता है।
Discipline is an easy way to control a	अनुशासन बच्चे को नियंत्रित करने का

child, but it does not help him to understand the problems involved in living. Some form of compulsion, the discipline of punishment and reward, may be necessary to maintain order and seeming quietness among a large number of students herded together in a classroom; but with the right kind of educator and a small number of students, would any repression, politely called discipline, be required? If the classes are small and the teacher can give his full attention to each child, observing and helping him, then compulsion or domination in any form is obviously unnecessary. If, in such a group, a student persists in disorderliness or is unreasonably mischievous, the educator must inquire into the cause of his misbehaviour, which may be wrong diet, lack of rest, family wrangles, or some hidden fear.	एक सरल उपाय है, परंतु वह जीवन में निहित समस्याओं को समझने में बच्चे की सहायता नहीं करता। दण्ड, किसी प्रकार की ज़बरदस्ती और पुरस्कार का अनुशासन यद्यपि किसी कक्षा में अधिक संख्या में छात्रों को एक साथ रखने के लिए आवश्यक व्यवस्था तथा दिखावटी शांति स्थापित करने में उपयोगी हो सकता है; परंतु यदि कोई सच्चा अध्यापक हो और उसके छात्रों की संख्या कम हो तो क्या उस दमन की, जिसे विनम्रता से अनुशासन कहा जाता है, आवश्यकता होगी? यदि कक्षाएँ छोटी हैं और यदि अध्यापक प्रत्येक छात्र का निरीक्षण करते हुए तथा उसकी सहायता करते हुए उस पर अपना पूरा ध्यान दे पाता है तो किसी भी प्रकार की ज़बरदस्ती अथवा दबाव उसके लिए अनावश्यक होगा। यदि ऐसे समूह में कोई छात्र दुर्व्यवस्था फैलाने में तत्पर ही है अथवा निहायत शरारती है तो शिक्षक को उसके दुर्व्यवहार के कारण की खोज करनी चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि वह कारण गलत आहार, विश्राम का अभाव, पारिवारिक झगड़े, अथवा कोई प्रच्छन्न भय हो।
Implicit in right **education** is the cultivation of freedom and intelligence, which is not possible if there is any form of compulsion, with its fears. After all, the concern of the educator is to help the student to understand the complexities of his whole being. To require him to suppress one part of his nature for the benefit of some other part is to create in him an endless conflict which results in social antagonisms. It is intelligence that brings order, not discipline.	सम्यक् शिक्षा में निहित है मुक्ति तथा विवेक का संवर्द्धन और यह किसी भी प्रकार की ज़बरदस्ती में, उसमे निहित भय के माहौल में, सम्भव नहीं है। आखिर अपने व्यक्तित्व की तमाम जटिलताओं को समझने में छात्र की सहायता करना ही तो शिक्षक का उद्देश्य है। अतः जब अपने स्वभाव के एक अंश की उन्नति के हेतु उसके दूसरे अंश को दबाने के लिए हम छात्र को प्रेरित करते हैं तो हम उसके अन्दर एक अंतहीन द्वंद्व उत्पन्न करते हैं, जिसके परिणाम में सामाजिक संघर्ष होते हैं। सम्यक् बुद्धि या प्रज्ञा ही व्यवस्था स्थापित कर सकती है, न कि अनुशासन।
Conformity and obedience have no place in the right kind of **education**. Cooperation between teacher and student is impossible if there is no	सम्यक् शिक्षा में अनुवृत्ति, अनुरूपता एवं आज्ञा–पालन के लिए कोई स्थान नहीं है। यदि परस्पर प्रेम तथा सम्मान नहीं है तो शिक्षक एवं छात्र में सहयोग असम्भव है।

mutual affection, mutual respect. When the showing of respect to elders is required of children, it generally becomes a habit, a mere outward performance, and fear assumes the form of veneration. Without respect and consideration, no vital relationship is possible, especially when the teacher is merely an instrument of his knowledge.	जब बच्चों से यह आशा की जाती है कि वे बड़ों का सम्मान करें, तो वह प्रायः एक आदत, एक बाहरी दिखावा–मात्र बन जाता है और भय ही सम्मान का रूप धारण कर लेता है। सम्मान एवं सद्भाव के अभाव में कोई सजीव संबंध सम्भव नहीं है, विशेष रूप से जब अध्यापक केवल अपने ज्ञान का उपकरण मात्र होता है।
If the teacher demands respect from his pupils and has very little for them, it will obviously cause indifference and disrespect on their part. Without respect for human life, knowledge only leads to destruction and misery. The cultivation of respect for others is an essential part of right **education**, but if the educator himself has not this quality, he cannot help his students to an integrated life.	यदि शिक्षक अपने शिष्यों से सम्मान की माँग करता है और स्वयं उनका सम्मान नहीं करता, तो स्पष्ट है कि इससे शिष्यों में उसके प्रति उपेक्षा एवं असम्मान का भाव उत्पन्न होगा। मानव जीवन के प्रति आदर के अभाव में ज्ञान केवल विनाश एवं कष्ट की ओर ही ले जाएगा। दूसरों के प्रति सम्मान का संवर्द्धन सही शिक्षा का एक अनिवार्य अंग है, परंतु यदि स्वयं शिक्षक में ही यह गुण नहीं है तो वह समन्वित जीवन की उपलब्धि में छात्रों की सहायता नहीं कर सकता।
Intelligence is discernment of the essential, and to discern the essential there must be freedom from those hindrances which the mind projects in the search for its own security and comfort. Fear is inevitable as long as the mind is seeking security; and when human beings are regimented in any way, keen awareness and intelligence are destroyed.	सम्यक् बुद्धि या प्रज्ञा सारग्रहण की क्षमता है, और सारतत्त्व को पहचानने के लिए उन बाधाओं से मुक्त होना जरूरी है जिन्हें मन स्वयं अपनी सुरक्षा एवं सुविधा के लिए प्रक्षिप्त करता है। जब तक मन सुरक्षा को खोज रहा है, भय अनिवार्य है; और जब किसी भी रूप में मनुष्यों को नियन्त्रित कर एक व्यवस्था में बाँधा जाता है तब सूक्ष्म जागरूकता या उत्सुक सजगता एवं सम्यक् बुद्धि नष्ट हो जाती है।
The purpose of **education** is to cultivate right relationship, not only between individuals, but also between the individual and society; and that is why it is essential that **education** should, above all, help the individual to understand his own psychological process. Intelligence lies in understanding oneself and going above	शिक्षा का उद्देश्य, केवल व्यक्तियों के बीच ही नहीं वरन समाज एवं व्यक्ति के बीच भी उचित संबन्ध का संवर्द्धन करना है; और इसीलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा सबसे पहले व्यक्ति की स्वयं अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में सहायता करे। स्वयं अपने को समझने में तथा अपने से परे जाने में ही सम्यक् बुद्धि उजागर होती है; परंतु जब तक भय

and beyond oneself; but there cannot be intelligence as long as there is fear. Fear perverts intelligence and is one of the causes of self-centred action. Discipline may suppress fear but does not eradicate it, and the superficial knowledge which we receive in modern **education** only further conceals it.	है तब तक वहाँ सम्यक बुद्धि नहीं हो सकती। भय सम्यक् बुद्धि के लिए बाधक है एवं स्व–केन्द्रित कर्म का एक कारण है। अनुशासन भय को दबा सकता है, परंतु उसे नष्ट नहीं कर सकता, और वह छिछला ज्ञान जो हमें आधुनिक शिक्षा से मिलता है, उसे केवल और अधिक छिपाता है।
When we are young, fear is instilled into most of us both at home and at school. Neither parents nor teachers have the patience, the time or the wisdom to dispel the instinctive fears of childhood, which, as we grow up, dominate our attitudes and judgment and create a great many problems. The right kind of **education** must take into consideration this question of fear, because fear warps our whole outlook on life. To be without fear is the beginning of wisdom, and only the right kind of **education** can bring about the freedom from fear in which alone there is deep and creative intelligence.	जब हम छोटे होते हैं तभी से घर में तथा स्कूल में हममें से अधिकांश के अन्दर भय बैठा दिया जाता है। न तो अभिभावकों को और न अध्यापकों को ही इतना धैर्य, समय अथवा विवेक होता है कि वे बचपन के मूल प्रवृत्यात्मक भयों को समाप्त करें और ये भय, जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हमारी अभिवृत्तियों तथा निर्णयों पर अपना प्रभुत्व जमा लेते हैं तथा अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। उचित शिक्षा को भय के इस प्रश्न पर अवश्य विचार करना चाहिए, क्योंकि भय जीवन के हमारे समस्त दृष्टिकोणों को गुमराह कर देता है। निर्भयता ही प्रज्ञा का प्रारम्भ है और केवल उचित शिक्षा ही भय से विमुक्ति दिला सकती है। इस विमुक्ति में ही गहन एवं सृजनशील प्रज्ञा सम्भव है।
Reward or punishment for any action merely strengthens self-centredness. Action for the sake of another, in the name of the country or of God, leads to fear, and fear cannot be the basis for right action. If we would help a child to be considerate of others, we should not use love as a bribe, but take the time and have the patience to explain the ways of consideration.	किसी कार्य के लिए पुरस्कार अथवा दण्ड केवल अहं को शक्ति प्रदान करता है। किसी दूसरे के लिए कार्य करना, चाहे वह ईश्वर के नाम पर हो अथवा राष्ट्र के नाम पर, भय उत्पन्न करता है, और यह भय उचित कार्य का आधार नहीं हो सकता। यदि हम दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होने में बालक की सहायता करना चाहते हैं तो हमें प्रेम का प्रयोग रिश्वत के रूप में नहीं करना चाहिए; बल्कि उस सहानुभूति की प्रक्रिया को बड़े धीरज से समझाना चाहिए।
There is no respect for another when there is a reward for it, for the bribe or the punishment becomes far more significant than the feeling of respect.	जब दूसरों के प्रति सम्मान के लिए हमें पुरस्कार मिलता है तो वास्तव में वह सम्मान है ही नहीं, क्योंकि रिश्वत अथवा दण्ड सम्मान की भावना से कहीं अधिक

If we have no respect for the child but merely offer him a reward or threaten him with punishment, we are encouraging acquisitiveness and fear. Because we ourselves have been brought up to act for the sake of a result, we do not see that there can be action free of the desire to gain.	महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। यदि बच्चे के लिए हमारे अन्दर कोई सम्मान नहीं है और हम उसे केवल पुरस्कार देते रहते हैं अथवा दण्ड की धमकी देते हैं तो हम उसके अन्दर लिप्सा एवं भय को प्रोत्साहन देते हैं। स्वयं हमारा ही विकास इस प्रकार हुआ है कि हम सदा किसी परिणाम को प्राप्त करने के लिए ही कर्म करते हैं; फलस्वरूप हम यह नहीं देख पाते कि कोई ऐसा भी कर्म हो सकता है जो किसी लाभ की इच्छा के बिना ही किया जाए।
The right kind of **education** will encourage thoughtfulness and consideration for others without enticements or threats of any kind. If we no longer seek immediate results, we shall begin to see how important it is that both the educator and the child should be free from the fear of punishment and the hope of reward, and from every other form of compulsion; but compulsion will continue as long, as authority is part of relationship.	उचित शिक्षा बिना किन्हीं प्रलोभनों या धमकियों के दूसरों के प्रति विचारशीलता और सहृदयता को प्रोत्साहित करेगी। यदि हम तत्काल लाभ के लिए प्रयत्न न करें तो हम देखने लगेंगे कि शिक्षक एवं बालक दोनों ही के लिए दण्ड का भय अथवा पुरस्कार की लालसा एवं सभी प्रकार की दूसरी बाध्यताओं से मुक्त होना कितना महत्त्वपूर्ण है; परंतु बाध्यता बनी ही रहेगी जब तक पारस्परिक संबंध में सत्ता या अधिकारिता को स्थान प्राप्त रहेगा।
To follow authority has many advantages if one thinks in terms of personal motive and gain; but **education** based on individual advancement and profit can only build a social structure which is competitive, antagonistic and ruthless. This is the kind of society in which we have been brought up, and our animosity and confusion are obvious.	यदि व्यक्तिगत अभीष्ट एवं उपलब्धि की भाषा में ही सोचा जाए तो सत्ता के अनुगमन के अनेक लाभ हैं, परंतु व्यक्तिगत उन्नति एवं लाभ पर आधारित शिक्षा केवल एक ऐसी सामाजिक संरचना का ही निर्माण कर सकती है जो प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण है, संघर्षशील है एवं क्रूर है। जिस समाज में हमारा पोषण हुआ है वह ऐसा ही समाज है, उसमें हमारे द्वेष तथा हमारी भ्रान्तियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं।
We have been taught to conform to the authority of a teacher, of a book, of a party, because it is profitable to do so. The specialists in every department of life, from the priest to the bureaucrat, wield authority and dominate us; but any government or teacher that uses compulsion can never bring about the cooperation in relationship which is	हमें यह सिखाया गया है कि हम किसी अध्यापक, किसी ग्रन्थ या किसी दल की सत्ता के समरूप चलें; क्योंकि ऐसा करना लाभप्रद है। पुरोहित से लेकर नौकरशाह तक जीवन के प्रत्येक विभाग में विशेषज्ञ अपने सत्ताधिकार का प्रयोग करते हैं अथवा अपना प्रभुत्व हम पर जमाते हैं; परंतु कोई भी सरकार अथवा अध्यापक

essential for the welfare of society.	जो दबाव का प्रयोग करता है, कभी भी परस्पर संबंध के उस सहयोग को नहीं उत्पन्न कर सकता जो एक समाज के कल्याण के लिए अत्यावश्यक है।
If we are to have right relationship between human beings, there should be no compulsion nor even persuasion. How can there be affection and genuine co-operation between those who are in power and those who are subject to power? By dispassionately considering this question of authority and its many implications, by seeing that the very desire for power is in itself destructive, there comes a spontaneous understanding of the whole process of authority. The moment we discard authority we are in partnership, and only then is there cooperation and affection.	यदि हम मनुष्यों के बीच उचित संबंध चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि उसमें किसी प्रकार की बाध्यता अथवा दबाव नहीं हो। जो व्यक्ति सत्ता में हैं तथा जो सत्ता के अधीन हैं, उनके बीच प्रेम तथा वास्तविक सहकार हो ही कैसे सकता है? सत्ताधिकार के इस प्रश्न तथा उसके अनेक निहितार्थों पर यदि हम निष्पक्षता से विचार करें, यदि हम देखें कि सत्ता की लालसा ही स्वयं में विनाशकारी है, तो सत्ताधिकार की समस्त प्रक्रिया का हमें सहज ही अवबोध हो जाएगा। जैसे ही हम सत्ताधिकार का परित्याग कर देते हैं, हम एक दूसरे के सहभागी हो जाते हैं, और तभी सहकार एवं स्नेह होता है।
The real problem in **education** is the educator. Even a small group of student becomes the instrument of his personal importance if he uses authority as a means of his own release, if teaching is for him a self-expansive fulfilment. But mere intellectual or verbal agreement concerning the crippling effects of authority is stupid and vain.	शिक्षा की वास्तविक समस्या शिक्षक है। यदि शिक्षक सत्ता का उपयोग स्वयं अपनी मुक्ति के साधन के रूप में करता है, यदि अध्यापन उसके लिए आत्म–विस्तारण व आत्म–परितोष का साधन है, तो छात्रों का एक छोटा–सा समूह भी उसके व्यक्तिगत महत्त्व का साधन बन जाता है। परंतु सत्ताधिकार के इस दूषित, भयंकर प्रभाव के विषय में केवल बौद्धिक अथवा शाब्दिक रूप से सहमत हो जाना मूर्खतापूर्ण तथा व्यर्थ है।
There must be deep insight into the hidden motivations of authority and domination. If we see that intelligence can never be awakened through compulsion, the very awareness of that fact will burn away our fears, and then we shall begin to cultivate a new environment which will be contrary to and far transcend the present social order.	सत्ता तथा प्रभुत्व के प्रच्छन्न प्रयोजनों के विषय में गहन अन्तर्दृष्टि अपेक्षित है। यदि हम यह समझ लें कि बाध्यता से कभी भी सम्यक् बुद्धि को जागृत नहीं किया जा सकता, तो इस वास्तविकता के प्रति हमारा अवबोध ही हमारे समस्त भयों को नष्ट कर देगा और तब हम एक ऐसे नवीन परिवेश का संवर्द्धन करना प्रारम्भ कर देंगे जो वर्तमान समाज–व्यवस्था से अत्यधिक भिन्न तथा कहीं अधिक उत्कृष्ट होगा।
To understand the **significance of life** with its conflicts and pain, we must	जीवन के महत्त्व को, उसके तमाम द्वन्द्वों तथा कष्टों को समझने के लिए, हमें

think independently of any authority, including the authority of organized religion; but if in our desire to help the child we set before him authoritative examples, we shall only be encouraging fear, imitation and various forms of superstition.	संगठित धर्म की सत्ता व सभी प्रकार की सत्ता से मुक्त होकर सोचना होगा; परंतु दूसरी ओर यदि बालक की सहायता करने की भावना से हम उसके सामने सत्ताधिकारपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तो हम केवल भय, अनुकरण तथा विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वासों को ही प्रोत्साहित करेंगे।
Those who are religiously inclined try to impose upon the child the beliefs, hopes and fears which they in turn have acquired from their parents; and those who are anti-religious are equally keen to influence the child to accept the particular way of thinking which they happen to follow. We all want our children to accept our form of worship or take to heart our chosen ideology. It is so easy to get entangled in images and formulations, whether invented by ourselves or by others, and therefore it is necessary to be ever watchful and alert.	धार्मिक वृत्ति वाले व्यक्ति बालकों पर उन विश्वासों, आशाओं और आशंकाओं को आरोपित करते हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं अपने अभिभावकों से पाया है; दूसरी ओर वे व्यक्ति जो धर्म-विरोधी हैं, वे भी बड़े उत्सुक रहते हैं कि बच्चे उस विशेष विचारधारा को स्वीकार करें जिसका वे स्वयं अनुगमन करते हैं। हम सभी चाहते हैं कि बच्चे पूजा-उपासना के उसी स्वरूप को स्वीकार करें जिसे हम मानते हैं तथा हमारी ही विचार-प्रणाली को हृदयंगम करें। प्रतिमाओं तथा सूत्रों में फँसना बड़ा आसान है, चाहे ये प्रतिमाएँ तथा सूत्र हमारे द्वारा अन्वेषित हों अथवा दूसरों के द्वारा, और इसीलिए इस विषय में सतत जागरूकता एवं सावधानी आवश्यक है।
What we call religion is merely organized belief, with its dogmas, rituals, mysteries and superstitions. Each religion has its own sacred book, its mediator, its priests and its ways of threatening and holding people. Most of us have been conditioned to all this, which is considered religious **education**; but this conditioning sets man against man, it creates antagonism, not only among the believers, but also against those of other beliefs. Though all religions assert that they worship God and say that we must love one another, they instill fear through their doctrines of reward and punishment, and through their competitive dogmas they perpetuate suspicion and antagonism.	जिसे हम धर्म कहते हैं वह केवल संगठित विश्वास ओर उसकी रूढ़ियों, कर्मकाण्डों, रहस्यों एव अंधविश्वासों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। प्रत्येक धर्म की अपनी पवित्र पोथी होती है, अपना पैगम्बर होता है, अपने पुरोहित होते हैं तथा लोगों को धमकाने एवं संगठित करने के अपने तरीके होते हैं। हममें से अधिकांश को इसी प्रकार संस्कारबद्ध किया गया है और इसी को धार्मिक शिक्षा माना गया है; परंतु यह संस्कारबद्धता मनुष्य को मनुष्य के विरुद्ध खड़ी कर देती है - केवल एक सम्प्रदाय में भी संघर्ष उत्पन्न करती है। यद्यपि सभी धर्मों का दावा है कि वे ईश्वर के उपासक हैं और उनका उपदेश है कि हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए, परंतु वे अपने दण्ड तथा पुरस्कार के सिद्धान्तों के द्वारा भय उत्पन्न करते हैं तथा अपने-अपने प्रतिद्वन्द्वी सिद्धान्तों द्वारा

	सन्देह तथा द्वेष को बनाए रखते हैं।
Dogmas, mysteries and rituals are not conducive to a spiritual life. Religious **education** in the true sense is to encourage the child to understand his own relationship to people, to things and to nature. There is no existence without relationship; and without self-knowledge, all relationship, with the one and with the many, brings conflict and sorrow. Of course, to explain this fully to a child is impossible; but if the educator and the parents deeply grasp the full significance of relationship, then by their attitude, conduct and speech they will surely be able to convey to the child, without too many words and explanations, the meaning of a spiritual life.	रूढ़ि-सिद्धान्त, रहस्य तथा कर्मकाण्ड आध्यात्मिक जीवन के लिए अनुकूल नहीं है। धार्मिक शिक्षा का सही अर्थ यही है कि बच्चे को अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं तथा प्रकृति के साथ अपने संबंध को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। संबंध के बिना अस्तित्व ही नहीं है; और आत्म-ज्ञान के अभाव में किसी एक के साथ अथवा अनेक के साथ सभी संबंध, द्वंद्व तथा दुख उत्पन्न करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी बालक को यह सब भली-भाँति समझाना असम्भव है; परंतु यदि शिक्षक तथा अभिभावक संबंध के सम्पूर्ण महत्त्व को गहराई से समझ लें तो वे अपनी अभिवृत्ति, व्यवहार तथा संभाषण के द्वारा बिना अधिक शब्दों तथा व्याख्याओं के ही बच्चे को आध्यात्मिक जीवन का अर्थ सम्प्रेषित कर देंगे।
Our so called religious training discourages questioning and doubt, yet it is only when we inquire into the significance of the values which society and religion have placed about us that we begin to find out what is true. It is the function of the educator to examine deeply his own thoughts and feelings and to put aside those values which have given him security and comfort, for only then can he help his students to be self-aware and to understand their own urges and fears.	हमारा तथाकथित धार्मिक प्रशिक्षण प्रश्न करने अथवा सन्देह करने को हतोत्साहित करता है। परंतु सत्य क्या है, इसकी खोज तभी आरम्भ होती है जब हम उन मूल्यों के महत्त्व की जाँच करना आरम्भ करते हैं जिनको समाज अथवा धर्म ने हमारे चारों और फैला रखा है। यह शिक्षक का कार्य है कि वह अपने विचारों तथा अपनी भावनाओं की गहराई से जाँच करे तथा उन मूल्यों को एक तरफ कर दे जिन्होंने उसे सुरक्षा तथा सुविधा प्रदान की है; क्योंकि तभी वह अपने छात्रों की इसमें सहायता कर सकेगा कि वे अपने प्रति जागरूक हों तथा स्वयं अपनी प्रेरणाओं एवं आशंकाओं को समझें।
The time to grow straight and clear is when one is young; and those of us who are older can, if we have understanding, help the young to free themselves from the hindrances which society has imposed upon them, as well as from those which they themselves are projecting. If the child's mind and heart are not moulded by religious	बाल्यावस्था वह समय है जब व्यक्ति का स्पष्ट एवं सरल विकास होता है; और हममें से जो बड़े हैं उनमें यदि अवबोध है तो वे बच्चों की सहायता कर सकते हैं कि वे अपने को न केवल उन बाधाओं से मुक्त करें जो समाज ने उन पर आरोपित की है, वरन् उनसे भी मुक्त हों जो स्वयं उन्होंने ही प्रक्षेपित की हैं। धार्मिक पूर्व-धारणाओं तथा पूर्वाग्रहों द्वारा यदि

preconceptions and prejudices, then he will be free to discover through self-knowledge what is above and beyond himself.	बालक के मन व हृदय को किसी साँचे में नहीं ढाला जाता है, तो आत्म–ज्ञान के माध्यम से बालक उसकी खोज के लिए मुक्त होगा जो उसके परे है, जो परम है।
True religion is not a set of beliefs and rituals, hopes and fears; and if we can allow the child to grow up without these hindering influences, then perhaps, as he matures, he will begin to inquire into the nature of reality, of God. That is why, in **educating** a child, deep insight and understanding are necessary.	धार्मिक विश्वास एवं कर्मकाण्ड के नियम, आशाएँ एवं आशंकाएँ वास्तविक धर्म नहीं होते, ये सब बाधाएँ हैं और यदि हम बच्चे का विकास इन बाधक प्रभावों से मुक्त होकर होने दें, तो सम्भवतः जैसे–जैसे वह परिपक्व होगा, वह यथार्थ का, ईश्वर का, उसके स्वरूप का अन्वेषण करेगा। यही कारण है कि बालक के शिक्षण के लिए गहरी अन्तर्दृष्टि तथा अवबोध आवश्यक है।
Most people who are religiously inclined, who talk about God and immortality, do not fundamentally believe in individual freedom and integration; yet religion is the cultivation of freedom in the search for truth. There can be no compromise with freedom. Partial freedom for the individual is no freedom at all. Conditioning, of any kind, whether political or religious, is not freedom and it will never bring peace.	अधिकांश व्यक्ति जो धर्मावलम्बी हैं, जो ईश्वर तथा अमरत्व की चर्चा करते हैं, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा समन्वय में कोई मूलभूत विश्वास नहीं रखते; फिर भी सत्य की खोज में धर्म का अर्थ स्वतन्त्रता का संवर्द्धन है। मुक्ति के लिए किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। व्यक्ति के लिए आंशिक मुक्ति मुक्ति है ही नहीं । किसी प्रकार की संस्कारबद्धता भी मुक्ति नहीं होती, चाहे वह धार्मिक हो अथवा राजनैतिक, और वह कभी भी शान्ति नहीं ला सकती।
Religion is not a form of conditioning. It is a state of tranquillity in which there is reality, God; but that creative state can come into being only when there is self-knowledge and freedom. Freedom brings virtue, and without virtue there can be no tranquillity. The still mind is not a conditioned mind, it is not disciplined or trained to be still. Stillness comes only when the mind understands its own ways, which are the ways of the self.	संस्कारबद्धता किसी भी रूप में धर्म नहीं होती। धर्म परम शान्ति की एक अवस्था है जिसमें सत्यता है, ईश्वर है; परंतु वह सृजनशील अवस्था तभी सम्भव होती है जब आत्म–ज्ञान तथा मुक्ति हो। मुक्ति सद्‌गुण लाती है, और सद्‌गुण के अभाव में परम शान्ति सम्भव नहीं है। निश्चल मन संस्कारबद्ध मन नहीं होता; यह अनुशासित भी नहीं होता अथवा प्रशिक्षित करके मन को निश्चल बनाया भी नहीं जा सकता। शान्ति तभी आती है जब मन स्वयं अपनी प्रक्रियाओं को, 'स्व' की प्रक्रियाओं को, समझता है।

Organized religion is the frozen thought of man, out of which he builds temples and churches; it has become a solace for the fearful, an opiate for those who are in sorrow. But God or truth is far beyond thought and emotional demands. Parents and teachers who recognize the psychological processes which build up fear and sorrow should be able to help the young to observe and understand their own conflicts and trials.	संगठित धर्म मनुष्य के विचार का वह रूप है जो जड़ीभूत हो गया है, जिसके द्वारा वह मन्दिरों तथा गिरजाघरों का निर्माण करता है, जो भयाक्रान्त व्यक्ति के लिए एक विश्राम-स्थल बन जाता है, और जो दुख में हैं, उनके लिए अफीम का कार्य करता है। परंतु ईश्वर अथवा सत्य, विचार एवं संवेग की इन आवश्यकताओं से कहीं परे है। वे अभिभावक और अध्यापक, जो भय तथा दुख उत्पन्न करनेवाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को पहचानते हैं, बच्चों की अपने द्वन्द्वों तथा कठिनाइयों को देखने तथा समझने में शायद सहायता कर पायेंगे।
If we who are older can help the children, as they grow up, to think clearly and dispassionately, to love and not to breed animosity, what more is there to do? But if we are constantly at one another's throats, if we are incapable of bringing about order and peace in the world by deeply changing ourselves, of what value are the sacred books and the myths of the various religions?	हम जो बड़े हैं, यदि बालकों की सहायता कर सकें कि वे, जैसे-जैसे विकास करते जाएँ, रोग-द्वेष रहित होकर स्पष्ट रूप से चिन्तन करें, प्रेम करें तथा बैर-भाव न उत्पन्न करें, तो फिर और कुछ करने के लिए रहता ही क्या है? परंतु यदि हम निरन्तर एक-दूसरे की गर्दन काटने में लगे हैं, यदि मूलभूत रूप से अपने को बदल कर विश्व में शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित करने में हम समर्थ नहीं हैं तो विभिन्न धर्मों की पवित्र पोथियों का तथा पुराणकथाओं का मूल्य ही क्या है?
True religious **education** is to help the child to be intelligently aware, to discern for himself the temporary and the real, and to have a disinterested approach to life; and would it not have more meaning to begin each day at home or at school with a serious thought, or with a reading that has depth and significance, rather than mumble some oft-repeated words or phrases?	सच्ची धार्मिक शिक्षा का अर्थ है सम्यक् बुद्धि से परिपूर्ण जागरूकता, यथार्थ एवं अस्थायी के बीच विवेक, तथा जीवन के प्रति तटस्थ दृष्टि उपलब्ध करने में बालक की सहायता करना। किन्हीं शब्दों या सूत्रों के बारम्बार बुदबुदाने या दोहराए जाने की अपेक्षा घर अथवा स्कूल में प्रत्येक दिन का शुभारम्भ गहन चिन्तन तथा गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण पाठन से हो।
Past generations, with their ambitions, traditions and ideals, have brought misery and destruction to the world; perhaps the coming generations, with the right kind of **education**, can put an	अपनी महत्त्वाकांक्षाओं, परंपराओं तथा आदर्शों से हमारी बीती हुई पीढ़ियों ने विश्व में कष्ट तथा विनाश ही उत्पन्न किया है; आनेवाली पीढ़ियाँ सही शिक्षा के माध्यम से सम्भवतः इस दुर्व्यवस्था का

end to this chaos and build a happier social order. If those who are young have the spirit of inquiry, if they are constantly searching out the truth of all things, political and religious, personal and environmental, then youth will have great significance and there is hope for a better world.	अन्त कर सकती हैं तथा एक सुखकर समाज–व्यवस्था का निर्माण कर सकती हैं। जो छोटे हैं, जो युवक हैं, यदि उनमें अन्वेषण की भावना है, यदि वे राजनीतिक एवं धार्मिक, व्यक्तिगत तथा परिवेश–संबंधी, सभी वस्तुओं के सत्य की निरन्तर खोज कर रहे हैं तो निश्चय ही उनका बड़ा गौरव होगा और तब एक बेहतर विश्व की आशा की जा सकती है।
Most children are curious, they want to know; but their eager inquiry is dulled by our pontifical assertions, our superior impatience and our casual brushing aside of their curiosity. We do not encourage their inquiry, for we are rather apprehensive of what may be asked of us; we do not foster their discontent, for we ourselves have ceased to question.	अधिकांश बच्चे जिज्ञासु होते हैं; उनमें जानने की लालसा होती है; परंतु उनकी उत्सुकता, उनकी खोज हम अपने पुरोहिती दावों से, श्रेष्ठता की भावना से उत्पन्न अपनी अधीरता से तथा उनका सुना–अनसुना करके हतोत्साहित कर देते हैं। अन्वेषण करने के लिए उन्हें हम प्रोत्साहित नहीं करते, क्योंकि हमें भय रहता है कि पता नहीं वे हमसे क्या पूछ लें; हम उनके असंतोष का पोषण नहीं करते, क्योंकि स्वयं हमने ही प्रश्न करना बन्द कर दिया है।
Most parents and teachers are afraid of discontent because it is disturbing to all forms of security, and so they encourage the young to overcome it through safe jobs, inheritance, marriage and the consolation of religious dogmas. Elders, knowing only too well the many ways of blunting the mind and the heart, proceed to make the child as dull as they are by impressing upon him the authorities, traditions and beliefs which they themselves have accepted.	अधिकांश अभिभावक तथा अध्यापक असंतोष से भयभीत रहते हैं, क्योंकि सभी प्रकार की सुरक्षा के लिए वह परेशानी पैदा करनेवाला होता है; इसलिए वे युवकों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे सुरक्षित व्यवसाय अथवा नौकरी से, पैतृक सम्पत्ति से, विवाह से अथवा धार्मिक रूढ़ि–सिद्धान्तों से प्राप्त सांत्वना से उस असंतोष पर विजय प्राप्त करें। बड़े लोग भली–भाँति जानते हैं कि मन तथा हृदय को स्फूर्तिविहीन बनाने के विभिन्न तरीके क्या हैं और अधिकारिताओं, परंपराओं तथा विश्वासों से बालक को प्रभावित कर उसी प्रकार स्फूर्तिविहीन बना देते हैं जैसे कि वे स्वयं हैं।
Only by encouraging the child to question the book, whatever it be, to inquire into the validity of the existing social values, traditions, forms of government, religious beliefs and so on, can the educator and the parents hope to awaken and sustain his critical	सभी प्रकार की पोथियों के विरुद्ध प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करके तथा प्रचलित सामाजिक मूल्यों, परंपराओं, सरकार के रूपों, धार्मिक विश्वासों आदि के प्रति अन्वेषण की भावना को प्रेरित करके ही शिक्षक तथा अभिभावक बालक की आलोचनात्मक सतर्कता और तीव्र

alertness and keen insight.	अन्तर्दृष्टि को जागृत कर सकते हैं तथा उसे कायम रख सकते हैं।
The young, if they are at all alive, are full of hope and discontent; they must be, otherwise they are already old and dead. And the old are those who were once discontented, but who have successfully smothered that flame and have found security and comfort in various ways. They crave permanency for themselves and their families, they ardently desire certainty in ideas, in relationships, in possessions; so the moment they feel discontented, they become absorbed in their responsibilities, in their jobs, or in anything else, in order to escape from that disturbing feeling of discontent.	युवक, यदि वे जीवंत हैं, आशा एवं असंतोष से परिपूर्ण होते हैं; उन्हें ऐसा होना ही चाहिए, अन्यथा वे पहले से ही वृद्ध एवं निर्जीव हैं। वृद्ध वे ही व्यक्ति हैं, जो कभी असंतुष्ट तो थे, परंतु जिन्होंने असंतोष की उस अग्नि को सफलतापूर्वक बुझा दिया है और विभिन्न प्रकार की सुरक्षा एवं सुविधा को प्राप्त कर लिया है। उन्हें अपने तथा अपने परिवारों के स्थायित्व की लालसा है; विचारों में, संबंधों में, प्राप्त सम्पत्ति में, वे निश्चिन्त होना चाहते हैं; इसकी उन्हें बड़ी तीव्र अभिलाषा रहती है। अतः जैसे ही उनमें असंतोष का भाव उत्पन्न होता है, वे अपने दायित्वों में, अपने व्यवसायों में, अथवा अन्य किसी दूसरी वस्तु में अपने को व्यस्त कर लेते हैं, जिससे कि परेशान करने वाली असंतोष की इस भावना से बच सकें।
While we are young is the time to be discontented, not only with ourselves, but also with the things about us. We should learn to think clearly and without bias, so as not to be inwardly dependent and fearful. Independence is not for that coloured section of the map which we call our country, but for ourselves as individuals; and though outwardly we are dependent on one another, this mutual dependence does not become cruel or oppressive if inwardly we are free of the craving for power, position and authority.	जब तक हम युवक हैं तभी तक केवल समय है कि हम असन्तुष्ट हों, केवल अपने से ही नहीं वरन अपने चारों ओर की वस्तुओं से भी। हमें पूर्वाग्रह से मुक्त होकर स्पष्ट विचार करना सीखना चाहिए, जिससे हम अंदर से पराश्रित एवं भयाक्रान्त न हों। स्वतन्त्रता राष्ट्र के लिए नहीं होती; वह नक्शे में किसी रंगे हुए भाग के लिए नहीं होती; जिसे हम राष्ट्र कहते हैं; वह व्यक्ति के रूप में हमारे लिए है और यद्यपि हम एक-दूसरे पर बाह्य रूप से आश्रित हैं, परंतु यह परस्पराश्रितता क्रूर एवं परेशानी पैदा करने वाली नहीं होती यदि अभ्यंतर में हम शक्ति, पद तथा सत्ताधिकार की तृष्णा से मुक्त होते हैं।
We must understand discontent, of which most of us are afraid. Discontent may bring what appears to be disorder; but if it leads, as it should, to self-knowledge and self-abnegation, then it will create a new social order and enduring peace. With self-abnegation	असन्तोष से अधिकांश व्यक्ति भयभीत रहते हैं; आवश्यकता उसे समझने की है। असन्तोष द्वारा तथाकथित दुर्व्यवस्था उत्पन्न हो सकती है; परंतु यदि वह हमें आत्मबोध तथा आत्म-त्याग की ओर ले जाए, जैसा कि उसे ले जाना चाहिए, तो

comes immeasurable joy.	वह एक नवीन समाज–व्यवस्था तथा स्थायी शान्ति उत्पन्न करेगा। आत्म–त्याग से असीम आनन्द उत्पन्न होता है।
Discontent is the means to freedom; but in order to inquire without bias, there must be none of the emotional dissipation which often takes the form of political gatherings, the shouting of slogans, the search for a guru or spiritual teacher, and religious orgies of different kinds. This dissipation dulls the mind and heart, making them incapable of insight and therefore easily moulded by circumstances and fear. It is the burning desire to inquire, and not the easy imitation of the multitude, that will bring about a new understanding of the ways of life.	असन्तोष मुक्ति का साधन है; परंतु निष्पक्ष अन्वेषण के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ संवेगात्मक अपव्यय न हो जो प्रायः राजनीतिक सभाओं के, नारेबाजी के, गुरु अथवा आध्यात्मिक शिक्षक की खोज के रूप में अथवा विभिन्न प्रकार के धर्मोन्माद के रूप में प्रकट होता है। यह अपव्यय मन तथा हृदय को स्फूर्तिविहीन बना देता है, उन्हें सूक्ष्म दृष्टि के योग्य नहीं रहने देता और इस प्रकार की परिस्थितियों से तथा भय से आसानी से प्रभावित होने वाले बना देता है। भीड़ के पीछे चलना या उसकी नकल करना तो बड़ा आसान होता है, परंतु उससे जीवन की प्रक्रियाओं के प्रति नवीन अवबोध उत्पन्न नहीं हो सकता। यह अवबोध केवल अन्वेषण की तीव्र इच्छा से ही उत्पन्न होता है।
The young are so easily persuaded by the priest or the politician, by the rich or the poor, to think in a particular way; but the right kind of **education** should help them to be watchful of these influences so that they do not repeat slogans like parrots or fall into any cunning trap of greed, whether their own or that of another. They must not allow authority to stifle their minds and hearts. To follow another, however great, or to give one's adherence to a gratifying ideology, will not bring about a peaceful world.	पुरोहित अथवा राजनीतिज्ञ, धनी अथवा निर्धन, बड़ी सरलता से युवकों को एक विशेष प्रकार से सोचने के लिए प्रभावित कर लेते हैं; परंतु उचित शिक्षा के लिए युवकों की सहायता करनी चाहिए ताकि वे इन प्रभावों के प्रति जागरूक बन सकें एवं तोते की तरह उनके नारों को न दोहराएँ और न तो लालच भरे उनके किसी जाल में ही फँसें, चाहे वे जाल स्वयं उनके ही हों अथवा किसी दूसरे के। किसी भी सत्ता या अधिकारिता को उन्हें अपने मन तथा हृदय को दमन करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति का अनुगमन, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, अथवा परितुष्ट करने वाली किसी भी विचार–प्रणाली का समर्थन, एक शान्तिमय विश्व की रचना नहीं कर सकता।
When we leave school or college, many of us put away books and seem to feel that we are done with learning; and there are those who are stimulated to think further afield, who keep on	जब हम स्कूल अथवा कालेज छोड़ देते हैं, हममें से अधिकांश लोग पुस्तकों को एक ओर रख देते हैं और ऐसा अनुभव करते हें कि हमारा शिक्षण समाप्त हो गया है; और दूसरी ओर वे व्यक्ति हैं जो किसी

reading and absorbing what others have said, and become addicted to knowledge. As long as there is the worship of knowledge or technique as a means to success and dominance, there must be ruthless competition, antagonism and the ceaseless struggle for bread.	क्षेत्र में आगे सोचने के लिए प्रेरित होते हैं, दूसरों ने जो कहा है उसे पढ़ना तथा आत्मसात करना जारी रखते हैं और ज्ञानार्जन के अभ्यस्त हो जाते हैं। जब तक ज्ञान अथवा तकनीक की, सफलता एवं प्रभुत्व के साधन के रूप में, उपासना होती रहेगी तब तक वह निष्ठुर स्पर्धा, वैरभाव तथा रोटी के लिए अथक संघर्ष जारी रहेगा।
As long as success is our goal we cannot be rid of fear, for the desire to succeed inevitably breeds the fear of failure. That is why the young should not be taught to worship success. Most people seek success in one form or another, whether on the tennis court, in the business world, or in politics. We all want to be on top, and this desire creates constant conflict within ourselves and with our neighbours; it leads to competition, envy, animosity and finally to war.	जब तक सफलता हमारा लक्ष्य है तब तक हम भय से मुक्त नहीं हो सकते, क्योंकि सफलता की आकांक्षा अनिवार्यतः असफलता के भय को उत्पन्न करती है। इसीलिए युवकों को सफलता की उपासना करना नहीं सिखाया जाना चाहिए। अधिकांश व्यक्ति किसी एक अथवा दूसरे प्रकार की सफलता चाहते ही हैं, चाहे वह टेनिस कोर्ट पर हों, व्यापार की दुनिया में हों अथवा राजनीति में हों। हम सभी चोटी पर रहना चाहते हैं, और यह इच्छा हमारे अन्दर तथा हमारे पड़ोसी के साथ निरन्तर द्वंद्व का कारण बनती है; यही हमें प्रतिद्वन्द्विता, द्वेष, बैरभाव तथा अन्त में युद्ध तक ले जाती है।
Like the older generation, the young also seek success and security; though at first they may be discontented, they soon become respectable and are afraid to say no to society. The walls of their own desires begin to enclose them, and they fall in line and assume the reins of authority. Their discontent, which is the very flame of inquiry, of search, of understanding, grows dull and dies away, and in its place there comes the desire for a better job, a rich marriage, a successful career, all of which is the craving for more security.	बड़े बुजुर्गों की तरह बच्चे सफलता एवं सुरक्षा की खोज करते हैं; यद्यपि आरम्भ में वे असन्तुष्ट हो सकते हैं, परंतु वे शीघ्र ही सम्मानित बन जाते हैं, तथा समाज का निषेध करने में भय खाते हैं। उनकी अपनी तृष्णाओं की दीवारें उन्हें घेरना आरम्भ कर देती हैं और वे समाज के अनुकूल बन जाते हैं तथा सत्ताधिकार की लगाम अपने हाथ में ले लेते हैं। उनका असंतोष ही तो अन्वेषण की, खोज की, अवबोध की ज्वाला है और वही मन्द हो जाता है तथा बुझ जाता है। उसके स्थान पर आ जाती है किसी अच्छे व्यवसाय की, धन-सम्पन्न विवाह की, अथवा सफल जीवनवृत्ति की इच्छा, जो सब-की-सब अधिकाधिक सुरक्षा की लालसा ही है।
There is no essential difference between the old and the young, for both are slaves to their own desires and	बुजुर्गों और बच्चों में कोई मौलिक अन्तर नहीं है, क्योंकि दोनों ही अपनी इच्डाओं के तथा परितोषों के दास हैं। परिपक्वता

gratifications. Maturity is not a matter of age, it comes with understanding. The ardent spirit of inquiry is perhaps easier for the young, because those who are older have been battered about by life, conflicts have worn them out and death in different forms awaits them. This does not mean that they are incapable of purposive inquiry, but only that it is more difficult for them.	आयु से नहीं वरन अवबोध से आती है। अन्वेषण की तीव्र भावना सम्भवतः बच्चों के लिए सहज है क्योंकि जो बड़े-बुजुर्ग हैं वे जीवन के थपेड़ों से चूर-चूर हो चुके हैं, द्वन्द्वों ने उन्हें थका दिया है और अनेक रूपों में मृत्यु उनकी प्रतीक्षा कर रही है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे किसी सार्थक अन्वेषण के अयोग्य हैं, बल्कि उनके लिए वह अधिक कठिन है।
Many adults are immature and rather childish, and this is a contributing cause of the confusion and misery in the world. It is the older people who are responsible for the prevailing economic and moral crisis; and one of our unfortunate weaknesses is that we want someone else to act for us and change the course of our lives. We wait for others to revolt and build anew, and we remain inactive until we are assured of the outcome.	अनेक प्रौढ़ व्यक्ति अपरिपक्व ही नहीं होते, उनमें लड़कपन भी होता है और विश्व में भ्रांति एवं कष्ट का यह भी एक कारण है। बुजुर्ग व्यक्ति ही वर्तमान आर्थिक तथा नैतिक संकट के लिए जिम्मेदार है; और हमारी दुर्भाग्यपूर्ण दुर्बलताओं में से एक दुर्बलता यह भी है कि हम चाहते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति ही हमारे कामों को करे तथा हमारे जीवन के मार्ग को बदले। हम प्रतीक्षा करते हैं कि दूसरे विद्रोह करें तथा पुनर्निर्माण करें और हम तब तक निष्क्रिय बने रहें जब तक हम परिणाम के प्रति आश्वस्त न हो जाएँ।
It is security and success that most of us are after; and a mind that is seeking security, that craves success, is not intelligent, and is therefore incapable of integrated action. There can be integrated action only if one is aware of one's own conditioning, of one's racial, national, political and religious prejudices; that is, only if one realizes that the ways of the self are ever separative.	यह सुरक्षा तथा सफलता ही है जिसके पीछे हममें से अधिकांश व्यक्ति पड़े हैं; एक ऐसा मन जो सुरक्षा की खोज में रत है और जो सफलता की कामना कर रहा है वस्तुतः प्रज्ञावान नहीं है, और इसलिए वह समन्वित कर्म के लिए अक्षम है। समन्वित कर्म तभी सम्भव है जब व्यक्ति स्वयं अपनी संस्कारबद्धता के प्रति, अपनी जातीय, राष्ट्रीय, राजनीतिक पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूक हो, अर्थात जब व्यक्ति यह अनुभव करता हो कि 'स्व' की प्रक्रिया सदा ही विभाजन का कारण होती है।
Life is a well of deep waters. One can come to it with small buckets and draw only a little water, or one can come with large vessels, drawing plentiful waters that will nourish and sustain. While one is young is the time to	जीवन एक कुएँ के समान है जिसमें अथाह जल है। कुछ व्यक्ति छोटी बाल्टी लेकर आते हैं तथा थोड़ा-सा जल खींचते हैं, दूसरे व्यक्ति बड़ा बर्तन लेकर आते हैं तथा विपुल जल खींच लेते हैं - ऐसा जल जो उनका पोषण करता है और उन्हें

investigate, to experiment with everything. The school should help its young people to discover their vocations and responsibilities, and not merely cram their minds with facts and technical knowledge; it should be the soil in which they can grow without fear, happily and integrally.	बनाए रखता है। जब तक कम उम्र है तब तक समय है अन्वेषण करने का, प्रत्येक वस्तु के विषय में प्रयोग करने का। अपने कर्म–व्यवसाय तथा दायित्वों को खोजने में विद्यालयों को बच्चों की सहायता करनी चाहिए, न कि केवल तथ्यों से तथा तकनीकी ज्ञान से उनके मस्तिष्क को भरने में; विद्यालय की भूमि ऐसी होनी चाहिए जहाँ वे बिना भय के सुखपूर्वक समन्वित रूप में अपना विकास कर सकें।
To **educate** a child is to help him to understand freedom and integration. To have freedom there must be order, which virtue alone can give; and integration can take place only when there is great simplicity. From innumerable complexities we must grow to simplicity; we must become simple in our inward life and in our outward needs.	बालक को शिक्षा देने का अर्थ है कि स्वतन्त्रता एवं समन्वय के प्रति अवबोध में उसकी सहायता की जाए। स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए व्यवस्था आवश्यक है; वह केवल सद्गुण से ही सम्भव होती है; और समन्वय तभी सम्भव होता है जब अत्यधिक सरलता होती है। अगणित जटिलताओं से निकलकर हमें सरलता की ओर विकसित होना चाहिए; अपने आंतरिक जीवन में तथा अपनी बाह्य आवश्यकताओं में हमें सरल बनना चाहिए।
Education is at present concerned with outward efficiency, and it utterly disregards, or deliberately perverts, the inward nature of man; it develops only one part of him and leaves the rest to drag along as best it can. Our inner confusion, antagonism and fear ever overcome the outer structure of society, however nobly conceived and cunningly built. When there is not the right kind of **education** we destroy one another, and physical security for every individual is denied. To **educate** the student rightly is to help him to understand the total process of himself; for it is only when there is integration of the mind and heart in everyday action that there can be intelligence and inward transformation.	वर्तमान में शिक्षा का संबंध बाह्य कार्य–क्षमता से है; मनुष्य की आभ्यन्तरिक प्रकृति की या तो शिक्षा पूर्णतया उपेक्षा कर देती है या उन्हें जान–बूझकर विरूपित कर देती है। वह उसके केवल एक अंश का ही विकास करती है तथा शेष को बोझ के रूप में घिसटते रहने के लिए छोड़ देती है। समाज की बाहरी संरचना चाहे जितनी उदात्त भाव से कल्पित तथा धूर्तता से रचित हो, हमारी आंतरिक भ्रान्ति, शत्रुता एवं भीति उसको मात करते हैं। जब उचित प्रकार की शिक्षा नहीं होती तब हम एक–दूसरे को नष्ट करते हैं, हर व्यक्ति को जो भौतिक सुरक्षा मिलनी चाहिए उससे वंचित करते हैं। छात्र को उचित शिक्षा देने का अर्थ है कि अपनी समग्र प्रक्रिया को स्वयं समझ सकने के योग्य बनने में उसकी सहायता की जाए; क्योंकि सम्यक् बुद्धि तथा आन्तरिक परिवर्तन की सम्भावना तभी होती है जब दिन–प्रतिदिन के कार्यों में मन और हृदय

	का समन्वय हो जाता है।
While offering information and technical training, **education** should above all encourage an integrated outlook on life; it should help the student to recognize and break down in himself all social distinctions and prejudices, and discourage the acquisitive pursuit of power and domination. It should encourage the right kind of self-observation and the experiencing of life as a whole, which is not to give significance to the part, to the "me" and the"mine," but to help the mind to go above and beyond itself to discover the real.	जानकारी तथा तकनीकी प्रशिक्षण देने के साथ ही सबसे अधिक आवश्यक है कि शिक्षा, हमारे जीवन के प्रति एक समन्वित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करे; उसे छात्र की सहायता करनी चाहिए ताकि वह अपने अन्दर की तमाम सामाजिक विषमताओं तथा पूर्वाग्रहों को तोड़ सके तथा शक्ति एवं प्रभुत्व के लिए होनेवाली लोलुपतापूर्ण दौड़ को हतोत्साहित कर सके। उसे सही प्रकार के आत्म-निरीक्षण के लिए तथा जीवन को उसकी समग्रता में अनुभव करने के लिए प्रयास करने चाहिए; जिसका अर्थ है कि उसके किसी अंश को, 'मैं' और 'मेरे' को, महत्त्व न दिया जाए, बल्कि मन की सहायता की जाए कि वह अपने से ऊपर एवं परे जाकर यथार्थ की खोज करे।
Freedom comes into being only through self-knowledge in one's daily occupations, that is, in one's relationship with people, with things, with ideas and with nature. If the educator is helping the student to be integrated, there can be no fanatical or unreasonable emphasis on any particular phase of life. It is the understanding of the total process of existence that brings integration. When there is self-knowledge, the power of creating illusions ceases, and only then is it possible for reality or God, to be.	अपने दिन-प्रति-दिन के कार्य-कलापों में अर्थात व्यक्तियों, वस्तुओं, विचारों तथा प्रकृति के साथ अपने संबंध में होनेवाले आत्मज्ञान के माध्यम से ही स्वतन्त्रता सम्भव होती है। यदि शिक्षक समन्वित होने में छात्र की सहायता कर रहा है तो जीवन के किसी एक विशेष पक्ष पर किसी प्रकार का धर्मान्धतायुक्त या अविवेकपूर्ण बल नहीं दिया जाएगा। अस्तित्व की समग्र प्रक्रिया को समझने से ही समन्वय संभव होता है। जब व्यक्ति को आत्मज्ञान होता है तो भ्रम उत्पन्न करने की शक्ति समाप्त हो जाती है और तभी ईश्वर अथवा यथार्थता का होना सम्भव होता है।
Human beings must be integrated if they are to come out of any crisis, and especially the present world crisis, without being broken; therefore, to parents and teachers who are really interested in **education**, the main problem is how to develop an integrated individual. To do this, the educator himself must obviously be integrated; so the right kind of **education** is of the highest importance,	यदि मानव जाति को खण्ड-खण्ड हुए बिना किसी संकट से, विशेषरूप से वर्तमान विश्व संकट से, उबरना है तो उसका समन्वय आवश्यक है, अतः उन अभिभावकों तथा अध्यापकों के लिए जो वास्तव में शिक्षा में रुचि रखते हैं, मुख्य समस्या यह है कि कैसे एक समन्वित व्यक्ति का विकास हो। ऐसा करने के लिए स्पष्ट है कि स्वयं शिक्षक को समन्वित होना पड़ेगा। अतः उचित प्रकार की शिक्षा

not only for the young, but also for the older generation if they are willing to learn and are not too set in their ways. What we are in ourselves is much more important than the traditional question of what to teach the child, and if we love our children we will see to it that they have the right kind of educators.	का महत्त्व सर्वाधिक है, और यह महत्त्व न ही केवल बच्चों के लिए है, बल्कि बुजुर्गों के लिए भी, यदि वे सीखने के लिए तैयार हैं और अपनी आदतों से अत्यधिक मजबूर नहीं हैं। 'बच्चों को क्या पढ़ाया जाए' इस पारंपरिक प्रश्न से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हम स्वयं क्या हैं और यदि हम अपने बालकों से प्रेम करते हैं तो निश्चय ही हम इस विषय में सावधानी बरतेंगे कि उन्हें सही प्रकार के शिक्षक मिलें।
Teaching should not become a specialist's profession. When it does, as is so often the case, love fades away; and love is essential to the process of integration. To be integrated there must be freedom from fear. Fearlessness brings independence without ruthlessness, without contempt for another, and this is the most essential factor in life. Without love we cannot work out our many conflicting increases confusion and leads to self-destruction.	शिक्षण को किसी विशेषज्ञ का व्यवसाय नहीं बनना चाहिए। जब ऐसा होता है, और प्रायः ऐसा होता ही है, तो प्रेम मुरझा जाता है; जब कि समन्वय की प्रक्रिया के लिए प्रेम अनिवार्य है। समन्वय के लिए भय से मुक्ति आवश्यक है। निर्भयता बिना क्रूरता के स्वतन्त्रता लाती है, और यह जीवन में सर्वाधिक आवश्यक है। बिना प्रेम के ज्ञान का संग्रह केवल भ्रांति उत्पन्न करेगा तथा आत्म–विनाश की ओर ले चलेगा।
The integrated human being will come to technique through experiencing, for the creative impulse makes its own technique - and that is the greatest art. When a child has the creative impulse to paint, he paints, he does not bother about technique. Likewise people who are experiencing, and therefore teaching, are the only real teachers, and they too will create their own technique.	समन्वित मनुष्य तकनीक तक अपनी अनुभव–प्रक्रिया के द्वारा पहुँचेगा, क्योंकि सृजनशील प्रेरणा स्वयं अपनी तकनीक बनाती है – और यही सबसे बड़ी कला है। एक बच्चे में जब पेन्टिंग करने की सृजनशील प्रेरणा होती हे तो वह पेन्टिंग करता है; वह तकनीक की चिन्ता नहीं करता। इसी प्रकार केवल वे लोग ही जो अनुभव कर रहे हैं और इसीलिए अध्यापन कार्य कर रहे हैं, वे ही वास्तविक अध्यापक हैं और वे अपनी तकनीक का भी सृजन कर लेंगे।
This sounds very simple, but it is really a deep revolution. If we think about it we can see the extraordinary effect it will have on society. At present most of us are washed out at the age of forty-five or fifty by slavery to routine;	सुनने में यह बड़ा सरल प्रतीत होता है, परंतु वास्तव में यह एक गहरी क्रान्ति है। यदि इसके विषय में हम विचार करें तो समाज पर उसके विलक्षण प्रभाव को हम समझ सकते हैं। इस समय हममें से अधिकांश व्यक्ति पैंतालिस अथवा पचास

through compliance, through fear and acceptance, we are finished, though we struggle on in a society that has very little meaning except for those who dominate it and are secure. If the teacher sees this and is himself really experiencing, then whatever his temperament and capacities may be, his teaching will not be a matter of routine but will become an instrument of help.	वर्ष की आयु तक आते–आते दिन–प्रति–दिन के कार्य–चक्र की दासता से दुर्बल हो जाते हैं। आदेश पालन करते–करते, भय से तथा स्वीकार से हम बुझ जाते हैं, यद्यपि एक ऐसे समाज में हम संघर्ष कर रहे होते हैं जिसकी सार्थकता केवल उन्हीं लोगों के लिए है जिनका उस पर प्रभुत्व है और जो सुरक्षित हैं। यदि अध्यापक इस सबको समझता है तथा इसका स्वयं अनुभव कर रहा है, तो उसका स्वभाव कैसा भी हो, उसकी क्षमताएँ चाहें जो भी हों, उसका पढ़ाना केवल रोज़मर्रा का कार्य–चक्र पूरा करना ही न होगा, बल्कि बच्चे की सहायता का एक साधन बनेगा।
To understand a child we have to watch him at play, study him in his different moods; we cannot project upon him our own prejudices, hopes and fears, or mould him to fit the pattern of our desires. If we are constantly judging the child according to our personal likes and dislikes, we are bound to create barriers and hindrances in our relationship with him and in his relationships with the world. Unfortunately, most of us desire to shape the child in a way that is gratifying to our own vanities and idiosyncrasies; we find varying degrees of comfort and satisfaction in exclusive ownership and domination.	बच्चे को यदि समझना है तो हमें खेलते समय उसका सतर्क अवलोकन करना होगा, उसका अध्ययन करना होगा – विविध मनोदशाओं में। हम उसके ऊपर स्वयं अपने पूर्वाग्रह, आशाएँ तथा आशंकाएँ आरोपित नहीं कर सकते और न अपने चाहे हुए किसी प्रारूप के साँचे में ही उसे ढाल सकते हैं। यदि अपने व्यक्तिगत राग–द्वेषों के अनुसार हम निरन्तर बच्चे के विषय में निर्णय लेंगे तो अनिवार्य है कि हम अपने एवं बच्चे के संबंधों के बीच तथा बच्चे एवं विश्व के संबंधों के बीच बाधाएँ एवं रुकावटें खड़ी करेंगे। दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश व्यक्ति बच्चों को इस प्रकार का एक स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं जो कि हमारे अहंकार को तथा हमारी भावना एवं स्वभाव को सन्तुष्टि प्रदान करने वाला हो; अपने अधिकार एवं प्रभुत्व में हमें विभिन्न मात्राओं में सुख एवं सन्तोष मिलता है।
Surely, this process is not relationship, but mere imposition, and it is therefore essential to understand the difficult and complex desire to dominate. It takes many subtle forms; and in its self-righteous aspect, it is very obstinate. The desire to "serve" with the unconscious longing to dominate is	निस्संदेह, यह प्रक्रिया संबंध नहीं है – यह आरोपण–मात्र है; अतः प्रभुत्व प्राप्त करने की इस जटिल और पेचीदा तृष्णा को समझना बड़ा आवश्यक है। यह अनेक सूक्ष्म रूप धारण कर लेती है; और अपने दंभी स्वभाव में वह बड़ी दुराग्रही होती है। 'सेवा' करने की इच्छा, जिसके पीछे प्रभुत्व की अचेतन आकांक्षा छिपी

difficult to understand. Can there be love where there is possessiveness? Can we be in communion with those whom we seek to control? To dominate is to use another for self-gratification, and where there is the use of another there is no love.	होती है, को समझना आसान नहीं। जब स्वामित्व की भावना हो, तो क्या वहाँ प्रेम हो सकता है? प्रभुत्व का अर्थ है दूसरे का आत्म-तुष्टीकरण के लिए उपयोग करना, और जहाँ दूसरे का इस्तेमाल है वहाँ प्रेम नहीं हो सकता।
When there is love there is consideration, not only for the children but for every human being. Unless we are deeply touched by the problem, we will never find the right way of **education**. Mere technical training inevitably makes for ruthlessness, and to **educate** our children we must be sensitive to the whole movement of life. What we think, what we do, what we say matters infinitely, because it creates the environment, and the environment either helps or hinders the child.	जहाँ प्रेम है वहाँ सहानुभूति होती है - यह सहानुभूति केवल बच्चों के लिए नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य के लिए होती है। जब तक यह समस्या हमारे अन्तस्तल को नहीं स्पर्श करती, उचित शिक्षा का मार्ग हमें नहीं मिल सकता। तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त होने से अनिवार्यतः निष्ठुरता उत्पन्न होती है, और यदि अपने बालकों को हम उचित शिक्षा देना चाहते हैं तो जीवन की समस्त गति के प्रति हमें संवेदनशील होना होगा। हम क्या सोचते हैं, हम क्या करते हैं, हम क्या कहते हैं, इसका महत्त्व अत्यधिक है, क्योंकि परिवेश ही बच्चे के लिए या तो सहायक सिद्ध होता है या बाधक बनता है।
Obviously, then, those of us who are deeply interested in this problem will have to begin to understand ourselves and thereby help to transform society; we will make it our direct responsibility to bring about a new approach to **education**. If we love our children, will we not find a way of putting an end to war? But if we are merely using the word"love" without substance, then the whole complex problem of human misery will remain. The way out of this problem lies through ourselves. We must begin to understand our relationship with our fellow men, with nature, with ideas and with things, for without that understanding there is no hope, there is no way out of conflict and suffering.	स्पष्ट है कि उन व्यक्तियों को जो गहराई से इस समस्या में रुचि रखते हैं, अपने को समझना प्रारम्भ करना होगा और इस प्रकार समाज को परिवर्तित करने में मदद करनी होगी; शिक्षा में नवीन दृष्टि का विकास करना हम सीधे अपनी ज़िम्मेदारी मानने लगेंगे। यदि हम अपने बच्चों से प्रेम करते हैं तो क्या हम युद्ध के अन्त का मार्ग नहीं खोजेंगे? परंतु यदि हम 'प्रेम' का प्रयोग केवल शब्द के रूप में कर रहे हैं जिसका हमारे लिए कोई अर्थ नहीं है, तो मानवीय कष्ट की तमाम जटिल समस्याएँ बनी ही रहेंगी। इस समस्या का समाधान स्वयं हमारे अंदर ही है। हमें अपने साथियों के साथ, प्रकृति के साथ, विचारों एवं वस्तुओं के साथ अपने संबंधों को समझना चाहिए, क्योंकि बिना इस समझ के न तो कोई आशा ही है और न द्वंद्व एवं दुख से मुक्ति ही।
The bringing up of a child requires intelligent observation and care.	बालक के पालन-पोषण के लिए प्रज्ञापूर्ण निरीक्षण तथा सावधानी की आवश्यकता

Experts and their knowledge can never replace the parents' love, but most parents corrupt that love by their own fears and ambitions, which condition and distort the outlook of the child. So few of us are concerned with love, but we are vastly taken up with the appearance of love.	है। विशेषज्ञ का ज्ञान कभी अभिभावकों के प्रेम का स्थान नहीं ले सकता, परंतु अधिकांश अभिभावक उस प्रेम को स्वयं अपनी आशंकाओं तथा महत्त्वाकांक्षाओं से भ्रष्ट कर देते हैं, और यह भ्रष्ट प्रेम बच्चे के दृष्टिकोण को संस्कारबद्ध करता है तथा उसे विरूपित कर देता है। अतः बहुत कम व्यक्ति ऐसे हैं जिनका संबंध प्रेम से है; हम अधिकांशतः प्रेम के प्रदर्शन में ही बह जाते हैं।
The present educational and social structure does not help the individual towards freedom and integration; and if the parents are at all in earnest and desire that the child shall grow to his fullest integral capacity, they must begin to alter the influence of the home and set about creating schools with the right kind of educators.	वर्तमान शैक्षिक तथा सामाजिक संरचना मुक्ति तथा समन्वय लाने में व्यक्ति की सहायता नहीं करती; और यदि अभिभावक वास्तव में चाहते हैं कि बालक की समन्वित संपूर्ण क्षमता का विकास हो, तो उन्हें अपने घर के वातावरण एवं प्रभाव को बदलना आरम्भ कर देना चाहिए तथा उचित शिक्षकों को साथ लेकर विद्यालयों का निर्माण आरंभ करना चाहिए।
The influence of the home and that of the school must not be in any way contradictory, so both parents and teachers must re-**educate** themselves. The contradiction which so often exists between the private life of the individual and his life as a member of the group creates an endless battle within himself and in his relationships.	घर तथा विद्यालय के प्रभाव को किसी प्रकार से परस्पर विरोधी नहीं होना चाहिए, अतः अभिभावक एवं अध्यापक दोनों को ही अपने को पुनः शिक्षित करना आवश्यक होगा। व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन तथा उसके समूहगत जीवन में जो विरोध प्रायः बना रहता है वह व्यक्ति के अपने अन्दर तथा उसके संबंधों के बीच एक अंतहीन संघर्ष का कारण बनता है।
This conflict is encouraged and sustained through the wrong kind of **education**, and both governments and organized religions add to the confusion by their contradictory doctrines. The child is divided within himself from the very start, which results in personal and social disasters.	ग़लत शिक्षा इस संघर्ष को प्रोत्साहित करती है तथा इसे बनाए रखती है, तथा सरकारें एवं संगठित धर्म दोनों ही अपने परस्पर विरोधी सिद्धान्तों द्वारा इस भ्रांति को बढ़ाते हैं। शुरू से ही बच्चे का अपने अंदर विभाजन हो जाता है, जिसका परिणाम व्यक्तिगत तथा सामाजिक संकट होता है।
If those of us who love our children and see the urgency of this problem will set our minds and hearts to it, then, however few we may be, through right **education** and an intelligent home	यदि हममें से वे लोग जो अपने बच्चों से प्रेम करते हैं तथा इस समस्या के प्राथमिक महत्त्व से परिचित हैं, इस समस्या के समाधान में अपने मन तथा

environment, we can help to bring about integrated human beings; but if, like so many others, we fill our hearts with the cunning things of the mind, then we shall continue to see our children destroyed in wars, in famines, and by their own psychological conflicts.	हृदय को लगाएँ तो हमारी संख्या चाहे जितनी भी कम क्यों न हो, उचित शिक्षा तथा घर के विवेकपूर्ण परिवेश के द्वारा समन्वित मनुष्यों को तैयार करने में हम सहायक हो सकेंगे, परंतु यदि दूसरे तमाम व्यक्तियों की भाँति हम अपने हृदय को मन की चालाकियों से भरते रहेंगे, तो अपने बच्चों को युद्धों में, अकालों में, तथा उनके अपने मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों के द्वारा नष्ट होते देखने को हम विवश होते रहेंगे।
Right **education** comes with the transformation of ourselves. We must re-**educate** ourselves not to kill one another for any cause, however righteous, for any ideology, however promising it may appear to be for the future happiness of the world. We must learn to be compassionate, to be content with little, and to seek the Supreme, for only then can there be the true salvation of mankind.	सही शिक्षा आती है अपने आप में बदलाव से। हमें अपने को पुनः शिक्षित करना है कि हम किसी भी कारण से एक-दूसरे की हत्या न करें - वह कारण चाहे कितना भी उचित क्यों न हो, किसी एक विचार-प्रणाली के लिए भी नहीं, चाहे विश्व के भविष्य के सुख के लिए वह कितना भी आशाप्रद क्यों न हो। हमें करुणामय होना सीखना पड़ेगा, थोड़े में संतुष्ट रहना तथा 'सर्वोच्च' या 'परम' की खोज करना सीखना होगा; क्योंकि तभी मानवजाति की वास्तविक मुक्ति संभव है।
Chapter 3	बुद्धि, सत्ता एवं प्रज्ञा
J. Krishnamurti Education and the Significance of Life 'Intellect, Authority and Intelligence'	
MANY of us seem to think that by teaching every human being to read and write, we shall solve our human problems; but this idea has proved to be false. The so-called educated are not peace-loving, integrated people, and they too are responsible for the confusion and misery of the world.	लगता है हममें से अधिकांश व्यक्ति यह सोचते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को पढ़ना-लिखना सिखाकर हम अपनी मानवीय समस्याओं का समाधान कर लेंगे; परन्तु यह विचार भ्रामक सिद्ध हुआ है। जिन्हें शिक्षित कहा जाता है वे शान्ति-प्रिय एवं समन्वित व्यक्ति नहीं हैं, और विश्व में व्याप्त भ्रान्ति तथा कष्ट के लिए वे भी जिम्मेदार हैं।
The right kind of education means the awakening of intelligence, the fostering of an integrated life, and only such education can create a new culture and a peaceful world; but to bring about	उचित प्रकार की शिक्षा का अर्थ है प्रज्ञा को जागृत करना तथा समन्वित जीवन का पोषण करना, और केवल ऐसी ही शिक्षा एक नवीन संस्कृति तथा शांतिमय विश्व की स्थापना कर सकेगी; परन्तु इस प्रकार

this new kind of education, we must make a fresh start on an entirely different basis.	की नवीन शिक्षा लाने के लिए हमें एक पूर्णतया भिन्न आधार-भूमि पर नये सिरे से कार्य आरंभ करना होगा।
With the world falling into ruin about us, we discuss theories and vain political questions, and play with superficial reforms. Does this not indicate utter thoughtlessness on our part? Some may agree that it does, but they will go on doing exactly as they have always done - and that is the sadness of existence. When we hear a truth and do not act upon it, it becomes a poison within ourselves, and that poison spreads, bringing psychological disturbances, unbalance and ill health. Only when creative intelligence is awakened in the individual is there a possibility of a peaceful and happy life.	हमारे चारों ओर विश्व में विनाश फैला है, परन्तु हम सिद्धान्तों तथा व्यर्थ के राजनीतिक प्रश्नों पर विवाद में व्यस्त रहते हैं तथा औपचारिक सुधारों का खेल खेलते हैं। क्या यह बात हमारी आत्यंतिक विचारशून्यता को नहीं दर्शाती? कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें इस परिस्थिति की सत्यता का आभास है परन्तु वे ठीक वही करते जाएँगे जिसे वे अब तक कर रहे थे, और यही हमारे अस्तित्व का दुखद पक्ष है। जब हम किसी सत्य को सुनते हैं, लेकिन उसके अनुसार कार्य नहीं करते तो वह सत्य हमारे अन्दर विष का कार्य करता है, वह विष फैलता है तथा मनोवैज्ञानिक विक्षोभ, असंतुलन तथा स्वास्थ्यहीनता को उत्पन्न करता है। शान्त एवं सुखी जीवन की सम्भावना तो केवल तभी होती है जब व्यक्ति में सृजनशील प्रज्ञा जागृत होती है।
We cannot be intelligent by merely substituting one government for another, one party or class for another, one exploiter for another. Bloody revolution can never solve our problems. Only a profound inward revolution which alters all our values can create a different environment, an intelligent social structure, and such a revolution can be brought about only by you and me. No new order will arise until we individually break down our own psychological barriers and are free.	केवल एक सरकार के स्थान पर दूसरी सरकार, एक दल या वर्ग के स्थान पर दूसरे दल या वर्ग को, एक शोषक के स्थान पर दूसरे शोषक को स्थापित करके हम प्रज्ञावान नहीं हो सकते। खूनी क्रान्तियाँ कभी हमारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकतीं। तमाम मूल्यों को बदल डालने वाली एक आमूल आंतरिक क्रान्ति ही अलग प्रकार का वातावरण, एक अर्थपूर्ण सामाजिक ढांचा, तैयार कर सकती है और ऐसी क्रान्ति केवल आप और हम ही ला सकते हैं। जब तक हम व्यक्तिगत रूप से स्वयं अपनी मनोवैज्ञानिक दीवारों को नहीं तोड़ते तथा स्वतन्त्र नहीं होते, तब तक नवीन व्यवस्था का निर्माण नहीं हो सकता।
On paper we can draw the blueprints for a brilliant Utopia, a brave new world; but the sacrifice of the present to an unknown future will certainly never solve any of our problems. There are	कागज पर हम बढ़िया-से-बढ़िया यूटोपिया या स्वर्गराज्य का नक्शा खींच सकते हैं, एक नई शक्तिशाली दुनिया बना सकते हैं, परन्तु किसी अज्ञात भविष्य के लिए वर्तमान का बलिदान निश्चित ही हमारी

so many elements intervening between now and the future, that no man can know what the future will be. What we can and must do if we are in earnest, is to tackle our problems now, and not postpone them to the future. Eternity is not in the future; eternity is now. Our problems exist in the present, and it is only in the present that they can be solved.	किसी भी समस्या का समाधान नहीं करेगा। वर्तमान और भविष्य के बीच इतने तत्त्व विद्यमान हैं कि कोई भी व्यक्ति यह नहीं जान सकता कि भविष्य क्या होगा। यदि हम ईमानदार हैं तो जो हमें करना चाहिए और जो हम कर सकते हैं वह यही है कि अपनी समस्याओं से अभी वर्तमान में ही अभी निपटें, उन्हें भविष्य के लिए स्थगित न करें। शाश्वत कहीं भविष्य में नहीं है, शाश्वत 'अभी' है। हमारी समस्याओं का अस्तित्व वर्तमान में है और वर्तमान में ही उनका समाधान हो सकता है।
Those of us who are serious must regenerate ourselves; but there can be regeneration only when we break away from those values which we have created through our self-protective and aggressive desires. Self-knowledge is the beginning of freedom, and it is only when we know ourselves that we can bring about order and peace.	हममें से जो वास्तव में इन समस्याओं के प्रति गम्भीर हैं उन्हें अपने को पुनरुज्जीवित करना चाहिए; परन्तु पुनरुज्जीवन केवल तभी संभव है जब उन मूल्यों से हम अपने को पृथक कर लें जिनको हमने अपनी आत्म-सुरक्षात्मक तथा आक्रामक वासनाओं के द्वारा निर्मित किया है। आत्मज्ञान ही मुक्ति का आरंभ है, और जब हम अपने को जानेंगे तभी हम व्यवस्था एवं शांति ला सकेंगे।
Now, some may ask, `What can a single individual do that will affect history? Can he accomplish anything at all by the way he lives?" Certainly he can. You and I are obviously not going to stop the immediate wars, or create an instantaneous understanding between nations; but at least we can bring about, in the world of our everyday relationships, a fundamental change which will have its own effect.	कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं कि 'अकेला एक व्यक्ति कर ही क्या सकता है जिससे इतिहास प्रभावित हो सके? जिस प्रकार से वह जीवन-यापन करता है, क्या वह कोई भी कार्य पूर्ण कर सकता है?' निस्संदेह वह कर सकता है। आप और मैं निकट आनेवाले युद्धों को नहीं रोक सकते और न तो राष्ट्रों के बीच तुरन्त ही कोई निकटता उत्पन्न कर सकते हैं, परन्तु अपने दिन-प्रति-दिन के सम्बन्धों के संसार में हम एक ऐसा मौलिक परिवर्तन तो ला ही सकते हैं जिसका अपना प्रभाव होगा।
Individual enlightenment does affect large groups of people, but only if one is not eager for results. If one thinks in terms of gain and effect, right transformation of oneself is not possible.	व्यक्तिगत ज्ञान के प्रकाश से बड़ा समुदाय भी प्रभावित होता है, परन्तु तभी जब व्यक्ति स्वयं परिणामों के लिए बहुत उत्सुक नहीं होता। यदि व्यक्ति लाभ एवं परिणाम की भाषा में सोचता है, तो सही रूप में उसका ही परिवर्तन संभव न होगा।

Human problems are not simple, they are very complex. To understand them requires patience and insight, and it is of the highest importance that we as individuals understand and resolve them for ourselves. They are not to be understood through easy formulas or slogans; nor can they be solved at their own level by specialists working along a particular line, which only leads to further confusion and misery. Our many problems can be understood and resolved only when we are aware of ourselves as a total process, that is, when we understand our whole psychological make-up; and no religious or political leader can give us the key to that understanding.	मानवी समस्याएँ सरल नहीं हैं, वे बड़ी जटिल हैं। उनको समझने के लिए धैर्य एवं अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है, और यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कि व्यक्ति के रूप में हम स्वयं उन समस्याओं को समझें तथा अपने लिए उनका समाधान करें। किन्हीं सुविधाजनक फार्मूलों तथा नारों के माध्यम से उनको नहीं समझा जा सकता और न तो अपने–अपने क्षेत्र में कार्य कर रहे विशेषज्ञों द्वारा ही उनका समाधान किया जा सकता है। इससे तो और अधिक भ्रांति एवं कष्ट ही उत्पन्न होगा। हमारी अनेक समस्याओं को तो तभी समझा जा सकेगा तथा उनका समाधान किया जा सकेगा जब हम स्वयं अपने प्रति एक समग्र प्रक्रिया के रूप में जागरूक हों, अर्थात जब हम अपनी समस्त मनोवैज्ञानिक रचना को समझें; कोई भी धार्मिक अथवा राजनीतिक नेता यह अवबोध की कुंजी, यह समझ, हमें नहीं दे सकता।
To understand ourselves, we must be aware of our relationship, not only with people, but also with property, with ideas and with nature. If we are to bring about a true revolution in human relationship, which is the basis of all society, there must be a fundamental change in our own values and outlook; but we avoid the necessary and fundamental transformation of ourselves, and try to bring about political revolutions in the world, which always leads to bloodshed and disaster.	अपने को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम केवल व्यक्तियों के साथ अपने सम्बन्ध को नहीं वरन सम्पत्ति के साथ, विचारों के साथ तथा प्रकृति के साथ अपने सम्बन्धों के प्रति भी जागरूक हों। यदि मानव–संबध में हम एक वास्तविक उत्क्रान्ति चाहते हैं – मानव संबंध जो कि समस्त समाज का आधार है – तो हमारे अपने मूल्यों में तथा दृष्टिकोण में एक मौलिक परिवर्तन आवश्यक है, परन्तु हम इस मूलभूत परिवर्तन से अपने को बचाते हैं और संसार में राजनीतिक क्रान्ति लाने की चेष्टा करते हैं। इस तरह की क्रान्ति हमें सदा रक्तपात तथा विनाश की ही ओर ले जाती है।
Relationship based on sensation can never be a means of release from the self; yet most of our relationships are based on sensation, they are the outcome of our desire for personal advantage, for comfort, for	उत्तेजना पर आधारित संबंध कभी भी अहं से, स्व से, विमुक्ति का साधन नहीं बन सकता; फिर भी हमारे अधिकांश संबंध उत्तेजना पर आधारित हैं; वे व्यक्तिगत लाभ, सुविधा, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के लिए हमारी वासना के ही परिणाम हैं। हो

psychological security. Though they may offer us a momentary escape from the self, such relationships only give strength to the self, with its enclosing and binding activities. Relationship is a mirror in which the self and all its activities can be seen; and it is only when the ways of the self are understood in the reactions of relationship that there is creative release from the self.	सकता है कि उनके द्वारा कुछ क्षणों के लिए हम अहं से पलायन कर सकें, पर ऐसे सम्बन्ध अहं को तथा उसकी परिसीमित करनेवाली एवं बंधन में जकड़ने वाली क्रियाओं को ही शक्ति प्रदान करते हैं। सम्बन्ध एक दर्पण है जिसमें अहं को तथा उसकी क्रियाओं को देखा जा सकता है; और जब संबंध की प्रतिक्रियाओं में अहं की प्रक्रिया को समझा जाता है तभी अहं से सृजनशील मुक्ति मिलती है।
To transform the world, there must be regeneration within ourselves. Nothing can be achieved by violence, by the easy liquidation of one another. We may find a temporary release by joining groups, by studying methods of social and economic reform, by enacting legislation, or by praying; but do what we will, without self-knowledge and the love that is inherent in it, our problems will ever expand and multiply. Whereas, if we apply our minds and hearts to the task of knowing ourselves, we shall undoubtedly solve our many conflicts and sorrows.	विश्व में परिवर्तन के लिए यह आवश्यक है कि हमारे अंदर एक पुनरुज्जीवन हो, ताज़गी हो। हिंसा से एवं एक-दूसरे का नाश करने से कुछ भी उपलब्ध नहीं किया जा सकता। किन्हीं समूहों में सम्मिलित होकर, सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के तरीकों का अध्ययन करके, कानून बना कर अथवा प्रार्थना करके हमें तात्कालिक छुटकारा तो मिल सकता है, परन्तु हम चाहे जो कुछ भी करें, बिना आत्मज्ञान तथा उसमें निहित प्रेम के हमारी समस्याओं का विस्तार होता जाएगा तथा उनकी संख्या बढ़ती जाएगी। दूसरी ओर यदि हम अपने मस्तिष्क तथा हृदय को स्वयं को जानने के कार्य में लगाएँ, तो निस्संदेह हम अपने अनेक द्वंद्वों तथा दुखों का समाधान कर लेंगे।
Modern education is making us into thoughtless entities; it does very little towards helping us to find our individual vocation. We pass certain examinations and then, with luck, we get a job - which often means endless routine for the rest of our life. We may dislike our job, but we are forced to continue with it because we have no other means of livelihood. We may want to do something entirely different, but commitments and responsibilities hold us down, and we are hedged in by our own anxieties and fears. Being frustrated, we seek escape through sex, drink, politics or fanciful religion.	आधुनिक शिक्षा हमें विचारहीन हस्तियों में बदल रही है। अपनी व्यक्तिगत जीविका, अपनी कर्मभूमि, अपना कर्म-व्यवसाय खोजने में वह हमारी कोई सहायता नहीं करती। हम कुछ परीक्षाएँ पास करते हैं और यदि भाग्यशाली हैं तो कोई नौकरी पा लेते हैं - जिसका अर्थ है शेष जीवन को एक अंतहीन दिनचर्या में व्यतीत कर देना । चाहे हम अपनी नौकरी अथवा अपने व्यवसाय को पसन्द न करते हों, परन्तु हम उसी में लगे रहने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि हमारे पास जीविकोपार्जन का दूसरा कोई साधन नहीं हैं। हो सकता है कि हम कोई दूसरा पूर्णतया भिन्न कार्य ही करना चाहते हों, परन्तु हमारे वायदे

	तथा हमारे दायित्व हमें पकड़े रहते हैं; और हमारी अपनी ही चिंताएँ तथा आशंकाएँ हमें अपने बाड़े में बन्द रखती हैं। हम निराश या व्यग्र होकर पलायन के लिए कामवासना, शराब, राजनीति अथवा काल्पनिक धर्म की शरण में जाते हैं।
When our ambitions are thwarted, we give undue importance to that which should be normal, and we develop a psychological twist. Until we have a comprehensive understanding of our life and love, of our political, religious and social desires, with their demands and hindrances, we shall have everincreasing problems in our relationships, leading us to misery and destruction.	जब हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ निष्फल हो जाती हैं तो साधारण-सी वस्तुओं को भी हम अनावश्यक महत्त्व देने लगते हैं और इस प्रकार किसी मनोवैज्ञानिक विकृति का विकास कर लेते हैं। जब तक अपने जीवन के तथा प्रेम के विषय में, अपनी राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक वासनाओं के तथा उनके साथ संलग्न उनकी आवश्यकताओं तथा बाधाओं के विषय में भी हमें एक व्यापक अवबोध नहीं होता, तब तक संबंधों की समस्याएँ निरन्तर बढ़ती जाएँगी जो हमें कष्ट एवं विनाश की ओर ले जाएँगी।
Ignorance is lack of knowledge of the ways of the self, and this ignorance cannot be dissipated by superficial activities and reforms; it can be dissipated only by one's constant awareness of the movements and responses of the self in all its relationships.	अज्ञान का अर्थ 'स्व' की प्रक्रिया के ज्ञान का अभाव है और इस अज्ञान का नाश सतही क्रियाओं एवं सुधारों से नहीं किया जा सकता; उसका नाश तभी हो सकता है जब व्यक्ति समस्त सम्बन्धों के बीच 'स्व' की गति तथा उसकी अनुक्रियाओं के प्रति निरन्तर जागरूक हो।
What we must realize is that we are not only conditioned by environment, but that we are the environment - we are not something apart from it. Our thoughts and responses are conditioned by the values which society, of which we are a part, has imposed upon us.	हमें यह समझना चाहिए कि हम केवल परिवेश द्वारा संस्कारबद्ध नहीं होते, बल्कि हम स्वयं ही परिवेश हैं – हम उससे पृथक कोई वस्तु नहीं हैं। हमारे विचार तथा हमारी अनुक्रियाएँ उन मूल्यों के द्वारा संस्कारबद्ध हैं जिन्हें इस समाज ने, जिसके हम भी एक अंग हैं, हमारे ऊपर आरोपित किया है।
We never see that we are the total environment because there are several entities in us, all revolving around the `me', the self. The self is made up of these entities, which are merely desires in various forms. From this conglomeration of desires arises the central figure, the thinker, the will of	हम यह कभी नहीं देखते कि हम ही समस्त परिवेश हैं, क्योंकि हममें अनेक हस्तियाँ हैं और वे सब 'मेरे' अथवा 'स्व' के चारों ओर घूमती रहती हैं। 'स्व' इन्हीं हस्तियों का बना है, जो महज़ इच्छा के अलग-अलग रूप हैं। इस इच्छा-पुंज से ही विचारक रूपी केंद्र का उदय होता है

the"me" and the "mine; and a division is thus established between the self and the not-self, between the"me" and the environment or society. This separation is the beginning of conflict, inward and outward.	जो कि 'मैं' और 'मेरे' का संकल्प है; और इस प्रकार, जो 'स्व' है तथा जो 'स्व' नहीं है उसके बीच, 'मैं' तथा परिवेश अथवा समाज के बीच, विभाजन की स्थापना होती है। यही पृथकता आंतरिक तथा बाह्य द्वन्द्वों का आरंभ है।
Awareness of this whole process, both the conscious and the hidden, is meditation; and through this meditation the self, with its desires and conflicts, is transcended. Self-knowledge is necessary if one is to be free of the influences and values that give shelter to the self; and in this freedom alone is there creation, truth, God, or what you will.	इस समस्त चेतन एवं प्रच्छन्न प्रक्रिया के प्रति जागरूकता ही ध्यान है; इसी ध्यान के माध्यम से अहं तथा उसकी वासनाओं एवं द्वंद्वों के परे जाया जा सकता है। यदि व्यक्ति उन प्रभावों तथा मूल्यों से मुक्ति चाहता है, जो 'स्व' को शरण देते हैं, तो आत्मबोध आवश्यक है; और केवल इसी मुक्ति में सृजनशीलता है, सत्य है, ईश्वर है, अथवा और जो कुछ भी आप कहें, है।
Opinion and tradition mould our thoughts and feelings from the tenderest age. The immediate influences and impressions produce an effect which is powerful and lasting, and which shapes the whole course of our conscious and unconscious life. Conformity begins in childhood through education and the impact of society.	मत एवं परम्परा हमारे विचारों एवं भावनाओं को शैशवावस्था से ही साँचे में ढालने लगते हैं। तात्कालिक प्रभावों तथा छापों का परिणाम बड़ा शक्तिशाली तथा स्थायी होता है, और वह हमारे चेतन तथा अचेतन जीवन की समस्त धारा का ही स्वरूप निर्धारित करता है। शिक्षा तथा समाज के प्रभाव के द्वारा बालपन से ही हमें अनुयायी होना सिखा दिया जाता है।
The desire to imitate is a very strong factor in our life, not only at the superficial levels, but also profoundly. We have hardly any independent thoughts and feelings. When they do occur, they are mere reactions, and are therefore not free from the established pattern; for there is no freedom in reaction.	अनुकरण करने की इच्छा हमारे जीवन में एक बड़ा प्रभावी तत्त्व है, और यह अनुकरण केवल सतही स्तरों पर ही नहीं होता, वरन गहराई में भी होता है। हमारे विचार तथा भावनाएँ शायद ही कभी स्वतन्त्र होते हों। विचार तथा भावनाएँ जब कभी हमारे अन्दर आते हैं तो ये केवल प्रतिक्रियाएँ मात्र होती हैं और इस प्रकार वे प्रचलित प्रारूप से विमुक्त नहीं होती; क्योंकि प्रतिक्रिया में तो स्वतन्त्रता होती नहीं।
Philosophy and religion lay down certain methods whereby we can come	दर्शन तथा धर्म ने कुछ प्रणालियाँ बताई हैं जिनके द्वारा हम सत्य अथवा ईश्वर का

to the realization of truth or God; yet merely to follow a method is to remain thoughtless and unintegrated, however beneficial the method may seem to be in our daily social life. The urge to conform, which is the desire for security, breeds fear and brings to the fore the political and religious authorities, the leaders and heroes who encourage subservience and by whom we are subtly or grossly dominated; but not to conform is only a reaction against authority, and in no way helps us to become integrated human beings. Reaction is endless, it only leads to further reaction.	साक्षात्कार कर सकते हैं; फिर भी केवल किसी प्रणाली का अनुगमन करना विचारहीन तथा विभाजित बने रहना है, हमारे दैनिक सामाजिक जीवन में वह प्रणाली चाहे कितनी भी उपयोगी क्यों न प्रतीत होती हो। अनुयायी होने की प्रेरणा सुरक्षा की वासना से आती है, वह भय उत्पन्न करती है तथा राजनीतिक एवं धार्मिक सत्ताओं को ऊपर लाती है – उन नेताओं तथा नायकों को जो अधीनता को प्रोत्साहित करते हैं तथा जिनके सूक्ष्म अथवा स्पष्ट प्रभाव में हम जकड़े रहते हैं। परन्तु अनुकरण या अनुरूपता को न स्वीकार करना भी सत्ता के विरोध में केवल एक प्रतिक्रिया मात्र ही है, और वह भी समन्वित मनुष्य बनने में हमारी किसी भी प्रकार की सहायता नहीं करता। यही नहीं, प्रतिक्रिया का कोई अन्त नहीं होता, वह आगे भी प्रतिक्रिया ही उत्पन्न करती रहती है।
Conformity, with its undercurrent of fear, is a hindrance; but mere intellectual recognition of this fact will not resolve the hindrance. It is only when we are aware of hindrances with our whole being that we can be free of them without creating further and deeper blockages.	भय पर आधारित अनुरूपता स्वयं में एक बाधा है; परन्तु इस तथ्य की केवल बौद्धिक मान्यता बाधा का परिहार नहीं करेगी। जब हम अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व से बाधाओं के प्रति जागरूक होते हैं तभी बिना दूसरे एवं अधिक गहरे अवरोधों को उत्पन्न किये हम इनसे मुक्त हो सकते हैं।
When we are inwardly dependent, then tradition has a great hold on us; and a mind that thinks along traditional lines cannot discover that which is new. By conforming we become mediocre imitators, cogs in a cruel social machine. It is what we think that matters, not what others want us to think. When we conform to tradition, we soon become mere copies of what we should be.	जब हम अपने आभ्यन्तर से, मानसिक रुप से, पराश्रित होते हैं तो परम्परा की हमारे ऊपर गहरी पकड़ होती है; और एक ऐसा मन जो परम्परागत ढंग से सोचता आया है नवीन को नहीं खोज सकता । अनुयायी होकर हम एक सामान्य अनुकरणकर्त्ता बन जाते हैं, समाज के क्रूर यंत्र के एक पुर्जे मात्र। महत्त्वपूर्ण वह है जो 'हम' सोचते हैं न कि वह जो दूसरे 'चाहते' हैं कि हम सोचें। जब हम किसी परम्परा के अनुरूप बनते हैं, तब हम शीघ्र जो होना चाहिए उसकी प्रतिलिपि मात्र बन जाते हैं।

This imitation of what we should be, breeds fear; and fear kills creative thinking. Fear dulls the mind and heart so that we are not alert to the whole significance of life; we become insensitive to our own sorrows, to the movement of the birds, to the smiles and miseries of others.	'जो होना चाहिए' की यह नकल केवल भय उत्पन्न करती है; और भय सृजनशील विचारणा को नष्ट कर देता है। भय वस्तुतः मन तथा हृदय को ऐसा स्फूर्तिविहीन बना देता है कि हम जीवन के सम्पूर्ण महत्त्व के प्रति सचेत नहीं रहते; हम स्वयं अपने दुखों के प्रति, पक्षियों की उड़ान के प्रति, दूसरों की मुस्कानों तथा उनके कष्टों के प्रति, असंवेदनशील हो जाते हैं।
Conscious and unconscious fear has many different causes, and it needs alert watchfulness to be rid of them all. Fear cannot be eliminated through discipline, sublimation, or through any other act of will: its causes have to be searched out and understood. This needs patience and an awareness in which there is no judgment of any kind.	चेतन तथा अचेतन भय के अनेक भिन्न कारण होते हैं, और उन सबसे मुक्त होने के लिए सक्रिय जागरूकता की आवश्यकता होती है। भय को अनुशासन, परिष्कार, रुपान्तरण अथवा किसी प्रकार के संकल्प द्वारा दूर नहीं किया जा सकता। आवश्यकता उसके कारणों को खोजने की तथा उन्हें समझने की होती है। इसके लिए धैर्य की तथा जागरूकता की आवश्यकता होती है – ऐसी जागरूकता जिसमें किसी प्रकार का निर्णय नहीं होता।
It is comparatively easy to understand and dissolve our conscious fears. But unconscious fears are not even discovered by most of us, for we do not allow them to come to the surface; and when on rare occasions they do come to the surface, we hasten to cover them up, to escape from them. Hidden fears often make their presence known through dreams and other forms of intimation, and they cause greater deterioration and conflict than do the superficial fears.	अपने चेतन भयों को समझना तथा दूर करना अपेक्षाकृत सरल होता है। परन्तु अचेतन भयों का तो हममें से अधिकांश को पता भी नहीं होता, क्योंकि हम उन्हें कभी ऊपरी सतह पर आने ही नहीं देते; और किन्हीं अनोखे अवसरों पर जब वे कभी ऊपर सतह पर आ भी जाते हैं तो उनसे पलायन हेतु हम शीघ्रता से उन्हें छिपा देते हैं। प्रच्छन्न भय अपनी उपस्थिति का ज्ञान प्रायः स्वप्न तथा दूसरे प्रकार के संकेतों के द्वारा देते हैं, तथा सतही भयों की तुलना में वे कहीं अधिक बिगाड़, भ्रष्टता तथा द्वंद्व उत्पन्न करते हैं।
Our lives are not just on the surface, their greater part is concealed from casual observation. If we would have our obscure fears come into the open and dissolve, the conscious mind must be somewhat still, not everlastingly occupied; then, as these fears come to the surface, they must be observed	हमारा जीवन ऊपरी सतह पर ही नहीं होता, उसका अधिकांश भाग हमारे सामान्य निरीक्षण की सीमाओं के बाहर रहता है। यदि हम अपने छिपे हुए भय को बाहर आने देना तथा समाप्त होने देना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि चेतन मन कुछ शांत रहे, न कि सर्वदा व्यस्त ही रहे; तब, जब ये भय ऊपरी

without let or hindrance, for any form of condemnation or justification only strengthens fear. To be free from all fear, we must be awake to its darkening influence, and only constant watchfulness can reveal its many causes.	सतह पर आते हैं, उनका बिना किसी विलंब या बाधा के परीक्षण होना चाहिए, क्योंकि किसी भी प्रकार का तिरस्कार अथवा औचित्य-समर्थन भय को केवल शक्तिशाली ही बनाता है। समस्त भय से मुक्ति पाने के लिए हमें उसके हानिकर प्रभाव के प्रति सजग होना चाहिए। यह सतत सजगता ही उसके अनेक कारणों को खोलकर प्रकट करेगी।
One of the results of fear is the acceptance of authority in human affairs. Authority is created by our desire to be right, to be secure, to be comfortable, to have no conscious conflicts or disturbances; but nothing which results from fear can help us to understand our problems, even though fear may take the form of respect and submission to the so-called wise. The wise wield no authority, and those in authority are not wise. Fear in whatever form prevents the understanding of ourselves and of our relationship to all things.	मानव-जीवन में अधिसत्ता व प्रामाण्य की स्वीकृति भय के अनेक परिणामों में से एक है। सही होने की, सुरक्षित होने की, सुखी होने की, एवं चेतन स्तर पर कोई द्वन्द्व अथवा परेशानी न रहे, इन्हीं वासनाओं ने अधिसत्ता को उत्पन्न किया है। परन्तु कोई वस्तु, जो भय का परिणाम है, हमारी समस्याओं को समझने में हमारी सहायता नहीं कर सकती, चाहे भय आदर का रूप धारण कर ले अथवा तथाकथित विद्वान व्यक्ति की आज्ञापालन का। सुविज्ञ व्यक्ति अधिकार का उपयोग नहीं करता, और जो सत्ता में होते हैं वे सुविज्ञ नहीं होते। भय चाहे किसी रूप में क्यों न हो, वह आत्मबोध एवं अन्य वस्तुओं से हमारे संबंध में अवरोधक होता है।
The following of authority is the denial of intelligence. To accept authority is to submit to domination to subjugate oneself to an individual, to a group, or to an ideology, whether religious or political; and this subjugation of oneself to authority is the denial, not only of intelligence, but also of individual freedom. Compliance with a creed or a system of ideas is a self-protective reaction. The acceptance of authority may help us temporarily to cover up our difficulties and problems; but to avoid a problem is only to intensify it, and in the process, self-knowledge and freedom are abandoned.	सत्ता या प्रामाण्य का अनुगमन प्रज्ञा का निषेध है। सत्ता की स्वीकृति का अर्थ है प्रभुता के सामने घुटने टेकना, उसका अर्थ यह भी है कि अपने को किसी व्यक्ति के, किसी समूह के अथवा किसी विचार-प्रणाली के, चाहे वह धार्मिक हो अथवा राजनीतिक, अधीन कर देना; और अपने को सत्ता के अधीन कर देना न केवल प्रज्ञा का निषेध है, बल्कि वह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का भी निषेध है। किसी मत अथवा विचारों की किसी प्रणाली का अनुपालन हमारी आत्म-सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया है। सत्ता को स्वीकार करना हमारी कठिनाइयों तथा समस्याओं के समाधान में कुछ देर तक हमारी सहायता कर सकता है, परन्तु किसी समस्या से पलायन करना तो उसे और अधिक बढ़ावा देना है, और उस

	प्रक्रिया में आत्मबोध तथा स्वतन्त्रता की प्रायः उपेक्षा हो जाती है।
How can there be compromise between freedom and the acceptance of authority? If there is compromise, then those who say they are seeking self-knowledge and freedom are not earnest in their endeavour. We seem to think that freedom is an ultimate end, a goal, and that in order to become free we must first submit ourselves to various forms of suppression and intimidation. We hope to achieve freedom through conformity; but are not the means as important as the end? Do not the means shape the end?	मुक्ति तथा सत्ता–स्वीकृति के बीच कैसे कोई समझौता हो सकता है? यदि समझौता है तो आत्मज्ञान तथा मुक्ति की खोज की बातें करने वाले व्यक्ति अपने प्रयत्न में ईमानदार नहीं हैं। हमें शायद लगता है कि मुक्ति एक चरम लक्ष्य है, एक साध्य है, और मुक्त होने के लिए हम यह आवश्यक समझने लगते हैं कि हमें पहले अपने को विभिन्न प्रकार के दमन तथा संत्रास के अधीन करना होगा। हम रूढ़ि बंधन के ज़रिए मुक्ति पाना चाहते हैं; परन्तु क्या साधन भी उतने ही महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना साध्य? क्या साधन साध्य के रूप का निर्धारण नहीं करते?
To have peace, one must employ peaceful means; for if the means are violent, how can the end be peaceful? If the end is freedom, the beginning must be free, for the end and the beginning are one. There can be self-knowledge and intelligence only when there is freedom at the very outset; and freedom is denied by the acceptance of authority.	शांति प्राप्त करने के लिए शांतिमय साधनों का इस्तेमाल करना ज़रूरी है ; क्योंकि यदि साधन ही हिंसक हैं तो साध्य शांतिपूर्ण कैसे होगा? यदि लक्ष्य मुक्ति है तो आरम्भ ही मुक्ति से होना चाहिए, क्योंकि अन्त एवं आरम्भ एक ही है। आत्म–बोध तथा प्रज्ञा केवल तभी संभव होते हैं जब शुरू से ही स्वतन्त्रता या मुक्ति होती है; एवं सत्ता की स्वीकृति से मुक्ति का निषेध होता है।
We worship authority in various forms: knowledge, success, power, and so on. We exert authority on the young, and at the same time we are afraid of superior authority. When man himself has no inward vision, outward power and position assume vast importance, and then the individual is more and more subject to authority and compulsion, he becomes the instrument of others. We can see this process going on around us: in moments of crisis, the democratic nations act like the totalitarian, forgetting their democracy and forcing man to conform.	हम ज्ञान, सफलता, शक्ति आदि विभिन्न रूपों में सत्ता की उपासना करते हैं। हम छोटों के ऊपर अधिकार का प्रयोग करते हैं और साथ–ही–साथ हम अपने ऊपर के अधिकारी से भयभीत भी रहते हैं। जब व्यक्ति में स्वयं की आंतरिक दृष्टि नहीं होती तब बाह्य सत्ता एवं पद बहुत बड़ा महत्त्व ले लेते हैं और तब व्यक्ति सत्ता एवं दबाव के अधिकाधिक अधीन होता चला जाता है; वह दूसरों का साधन मात्र बन जाता है। यही प्रक्रिया हमारे चारों ओर हो रही है और उसे हम देख सकते हैं। संकट के क्षणों में प्रजातांत्रिक देश भी अधिनायकवादी देशों की भाँति ही कार्य करने लगते हैं, वे अपने प्रजातंत्र को भूलकर मनुष्य को अनुयायी एवं व्यवस्था

	के अनुरूप बनने के लिए मजबूर करते हैं
If we can understand the compulsion behind our desire to dominate or to be dominated, then perhaps we can be free from the crippling effects of authority. We crave to be certain, to be right, to be successful, to know; and this desire for certainty, for permanence, builds up within ourselves the authority of personal experience, while outwardly it creates the authority of society, of the family, of religion, and so on. But merely to ignore authority, to shake off its outward symbols, is of very little significance.	प्रभुत्व की तथा प्रभुत्व को स्वीकार करने की वासना के पीछे जो मजबूरी है, उसे यदि हम समझ सकें तो सत्ताधिकारिता के हानिकारक प्रभावों से शायद हम मुक्त हो सकेंगे। हमारे अंदर निश्चित होने की, ठीक बनने की, सफल होने की, जानने की लालसा रहती है; निश्चितता की एवं चिरंतनता की यह लालसा हमारे अंदर व्यक्तिगत अनुभव का प्रामाण्य निर्मित करती है और बाहर समाज, परिवार और धर्म की सत्ता स्थापित करती है। परन्तु सत्ता की केवल उपेक्षा करने का, उसके केवल बाह्य प्रतीकों को त्याग देने का कोई खास मतलब नहीं है।
To break away from one tradition and conform to another, to leave this leader and follow that, is but a superficial gesture. If we are to be aware of the whole process of authority, if we are to see the inwardness of it, if we are to understand and transcend the desire for certainty, then we must have extensive awareness and insight, we must be free, not at the end, but at the beginning.	एक परंपरा से पृथक होकर दूसरे के अनुरूप बनना, एक नेता को छोड़कर दूसरे का अनुयायी बनना, यह एक छिछला व्यवहार है। यदि हम सत्ता की सम्पूर्ण प्रक्रिया के प्रति जागरूक होना चाहते हैं, यदि हम उसकी आंतरिकता को देखना चाहते हैं, यदि हम निश्चितता की वासना को समझना और उसके परे जाना चाहते हैं, तो हममें व्यापक जागरूकता तथा अंतर्दृष्टि का होना अनिवार्य है । हमें अंत में नहीं वरन आरंभ से ही मुक्त होना होगा।
The craving for certainty, for security is one of the major activities of the self, and it is this compelling urge that has to be constantly watched, and not merely twisted or forced in another direction, or made to conform to a desired pattern. The self, the "me" and the "mine," is very strong in most of us; sleeping or waking, it is ever alert, always strengthening itself. But when there is an awareness of the self and a realization that all its activities, however subtle, must inevitably lead to conflict and pain, then the craving for certainty, for self-continuance comes to an end. One has to be constantly	निश्चितता अथवा सुरक्षा की लालसा स्व की अनेक प्रमुख क्रियाओं में से एक है, और यह एक ऐसी ज़बरदस्त प्रेरणा है जिस पर निरन्तर ध्यान देने की ज़रूरत है। उसको केवल तोड़ने मरोड़ने या ज़बरदस्ती से किसी अन्य दिशा में मोड़ देने अथवा किसी इच्छित प्रारूप के अनुरूप बनाने से काम नहीं चलेगा। स्व अर्थात 'मैं' और 'मेरा' हममें से अधिकांश व्यक्तियों में बड़ा शक्तिशाली रहता है। परन्तु जब स्व के प्रति जागरूकता होती है और इसकी यह अनुभूति होती है कि उसकी समस्त क्रियाएँ, चाहे कितनी भी सूक्ष्म क्यों न हों, अनिवार्यतः द्वन्द्व और कष्ट पैदा करती हैं, तो निश्चितता एवं

watchful for the self to reveal its ways and tricks; but when we begin to understand them, and to understand the implications of authority and all that is involved in our acceptance and denial of it, then we are already disentangling ourselves from authority.	आत्मसातत्य की आकांक्षा समाप्त हो जाती है। 'स्व' की प्रक्रिया तथा उसकी चालाकियों को प्रकाश में लाने के लिए व्यक्ति को निरन्तर उसके प्रति सचेत रहना पड़ता है; परन्तु जब हम उस सत्ता के तमाम निहितार्थों को, उसके स्वीकार या इन्कार में निहित हर बात को समझने लगते हैं, तब हम सत्ता और प्रामाण्य के फंदे से अपने को मुक्त कर रहे होते हैं।
As long as the mind allows itself to be dominated and controlled by the desire for its own security, there can be no release from the self and its problems; and that is why there is no release from the self through dogma and organized belief, which we call religion. Dogma and belief are only projections of our own mind. The rituals, the puja, the accepted forms of meditation, the constantly-repeated words and phrases, though they may produce certain gratifying responses, do not free the mind from the self and its activities; for the self is essentially the outcome of sensation.	जब तक मन स्वयं अपनी सुरक्षा की वासना से नियन्त्रित रहता है तथा प्रभावित रहता है, तब तक स्व तथा उसकी समस्याओं से छुटकारा संभव नहीं है; यही कारण है कि धर्म-सिद्धांत और संगठित विश्वास - जिसे हम धर्म कहते हैं - स्व से छुटकारा नहीं दिला पाते। धर्म-सिद्धान्त और विश्वास हमारे अपने मन के प्रक्षेपण-मात्र हैं। कर्मकाण्ड, पूजा, ध्यान के प्रचलित रूप, निरन्तर जपे जानेवाले शब्द तथा मंत्र कुछ संतोषजनक प्रतिक्रियाएँ पैदा कर सकते हैं, परन्तु वे स्व तथा उसकी क्रियाओं से मन को विमुक्त नहीं करते, क्योंकि स्व मुख्य रूप से मनोवेग का, सनसनी का परिणाम है।
In moments of sorrow, we turn to what we call God, which is but an image of our own minds; or we find gratifying explanations, and this gives us temporary comfort. The religions that we follow are created by our hopes and fears, by our desire for inward security and reassurance; and with the worship of authority, whether it is that of a saviour, a master or a priest, there come submission, acceptance and imitation. So, we are exploited in the name of God, as we are exploited in the name of parties and ideologies - and we go on suffering.	दुख के क्षणों में हम तथाकथित ईश्वर की ओर मुड़ते हैं, जो कि स्वयं हमारे अपने मन का एक प्रतिबिम्ब मात्र है; अथवा हम कुछ परितोष देनेवाली व्याख्याएँ ढूंढ लेते हैं और यह हमें तात्कालिक आराम देता है। जिन धर्मों का हम अनुसरण करते हैं वे धर्म हमारी आशा-आशंकाओं की, हमारी आंतरिक सुरक्षा और आश्वस्तता की इच्छा की पैदाइश हैं; और उपासना से - चाहे वह पैगम्बर की उपासना हो अथवा सिद्ध पुरुषों की अथवा पुरोहितों की - केवल अधीनता, स्वीकृति तथा अनुकृति ही आती है। इस प्रकार ईश्वर के नाम पर हमारा शोषण किया जाता है - उसी तरह से जैसे पार्टियों के तथा विचार-प्रणालियों के नाम पर हमारा शोषण किया जाता है, और इसी प्रकार हम दुख भोगते रहते हैं।

We are all human beings, by whatever name we may call ourselves, and suffering is our lot. Sorrow is common to all of us, to the idealist and to the materialist. Idealism is an escape from what is, and materialism is another way of denying the measureless depths of the present. Both the idealist and the materialist have their own ways of avoiding the complex problem of suffering; both are consumed by their own cravings, ambitions and conflicts, and their ways of life are not conducive to tranquillity. They are both responsible for the confusion and misery of the world.	हम अपने आप को चाहे जो नाम दे दें, पर हैं हम मानव ही, और पीड़ा हमारी नियति है। हम सभी दुख के भागीदार हैं, चाहे हम चैतन्यवादी हों अथवा जड़वादी। चैतन्यवाद यथार्थ से पलायन है, और जड़वाद भी वर्तमान की असीम गहराइयों को नकारने का एक दूसरा तरीका है। चैतन्यवादी तथा जड़वादी दोनों ही के पास दुख की जटिल समस्या को टालने के अपने-अपने तरीके हैं; दोनों ही स्वयं अपनी वासनाओं, महत्त्वाकांक्षाओं तथा द्वंद्वों से घिरे हुए हैं और उनके जीवन के तरीके शांति के अनुकूल नहीं हैं। विश्व में भ्रांति और कष्ट के लिए वे दोनों ही ज़िम्मेदार हैं।
Now, when we are in a state of conflict, of suffering, there is no comprehension: in that state, however cunningly and carefully thought out our action may be, it can only lead to further confusion and sorrow. To understand conflict and so to be free from it, there must be an awareness of the ways of the conscious and of the unconscious mind.	जब हम द्वंद्व की, दुख-भोग की अवस्था में होते हैं, तो अवबोध का प्रश्न ही नहीं उठता; उस अवस्था में हमारा कार्य चाहे जितनी चतुराई एवं सावधानी से सोच कर किया गया हो, वह और अधिक भ्रांति तथा दुख ही पैदा करेगा। इसलिए द्वंद्व को समझकर उससे मुक्त होने के लिए मन की चेतन तथा अचेतन प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक होना आवश्यक है।
No idealism, no system or pattern of any kind, can help us to unravel the deep workings of the mind; on the contrary, any formulation or conclusion will hinder their discovery. The pursuit of what should be, the attachment to principles, to ideals, the establishment of a goal - all this leads to many illusions. If we are to know ourselves, there must be a certain spontaneity, a freedom to observe, and this is not possible when the mind is enclosed in the superficial, in idealistic or materialistic values.	कोई भी आदर्शवाद, विचार-प्रणाली या प्रारूप मन की गहन प्रेरणाओं को उजागर करने में हमारी सहायता नहीं कर सकता; इसके विपरीत सभी प्रकार के सूत्र अथवा निष्कर्ष उनकी खोज में बाधा ही उत्पन्न करते हैं। 'जो होना चाहिए' उसका पीछा तथा सिद्धान्तों, आदर्शों एवं किसी लक्ष्य की स्थापना के प्रति आसक्ति ये सब भ्रमं पैदा करते हैं। यदि हमें अपने को जानना है तो सहजता का, अन्वीक्षण के लिए आवश्यक स्वतंत्रता का, होना आवश्यक है और यदि मन सतही, छिछले आदर्शवादी अथवा जड़वादी मूल्यों के घेरे में बन्द है तो ऐसा होना सम्भव नहीं।
Existence is relationship; and whether	अस्तित्व का मतलब है सम्बन्ध; हम किसी

we belong to an organized religion or not, whether we are worldly or caught up in ideals, our suffering can be resolved only through the understanding of ourselves in relationship. Self-knowledge alone can bring tranquillity and happiness to man, for self-knowledge is the beginning of intelligence and integration. Intelligence is not mere superficial adjustment; it is not the cultivation of the mind, the acquisition of knowledge. Intelligence is the capacity to understand the ways of life, it is the perception of right values.	संगठित धर्म के माननेवाले हों या न हों, चाहे हम सांसारिक हों अथवा आदर्शों में जकड़े हों, हमारी पीड़ा का समाधान केवल सम्बन्धों के तहत अपने को समझने से ही होगा। केवल आत्मबोध ही मनुष्य के लिए शान्ति एवं सुख ला सकता है, क्योंकि वही प्रज्ञा तथा समन्वीकरण का आरंभ है। प्रज्ञा केवल छिछला समाधान नहीं है; वह मन का संवर्धन अथवा ज्ञानसंचय भी नहीं। प्रज्ञा जीवन के विधि-विधान को समझने की क्षमता है, उचित मूल्यों का बोध है।
Modern education, in developing the intellect, offers more and more theories and facts, without bringing about the understanding of the total process of human existence. We are highly intellectual; we have developed cunning minds, and are caught up in explanations. The intellect is satisfied with theories and explanations, but intelligence is not; and for the understanding of the total process of existence, there must be an integration of the mind and heart in action. Intelligence is not separate from love.	बुद्धि के विकास में जुटी आधुनिक शिक्षा बिना मानव-अस्तित्व की समस्त प्रक्रिया का अवबोध किये अधिकाधिक मतों एवं घटनाओं को प्रस्तुत करती है। हम अत्यधिक बौद्धिक हैं; हमने धूर्त मन का विकास कर लिया है और व्याख्यानों के जाल में हम जकड़े हुए हैं। बुद्धि वस्तुतः सिद्धान्तों और स्पष्टीकरणों से सन्तुष्ट होती है, परन्तु प्रज्ञा नहीं होती; जबकि अस्तित्व की समग्र प्रक्रिया को समझने के लिए मन और हृदय का सक्रिय समन्वय आवश्यक है; प्रज्ञा प्रेम से अलग नहीं है।
For most of us, to accomplish this inward revolution is extremely arduous. We know how to meditate, how to play the piano, how to write, but we have no knowledge of the meditator, the player, the writer. We are not creators, for we have filled our hearts and minds with knowledge, information and arrogance; we are full of quotations from what others have thought or said. But experiencing comes first, not the way of experiencing. There must be love before there can be the expression of	इस आन्तरिक क्रांति को अपने भीतर घटित करना हममें से अधिकांश के लिए अत्यधिक कठिन है। हम जानते हैं कि ध्यान कैसे किया जाता है, पियानों कैसे बजाया जाता है, लेखन-कार्य कैसे किया जाता है, परन्तु हमें ध्यानकर्त्ता का, संगीतज्ञ का तथा लेखक का कोई ज्ञान नहीं है। हम सर्जक नहीं है, क्योंकि हमने अपने हृदय तथा मस्तिष्क को ज्ञान, जानकारी, और अहंकार से भर लिया है; दूसरों ने कही या सोची बात के तमाम उद्धरणों से हम भरे हुए हैं। परन्तु पहले

love.	अनुभव–क्रिया आती है न कि अनुभव–क्रिया की शैली। प्रेम की अभिव्यक्ति के पहले प्रेम का होना आवश्यक है।
It is clear, then, that merely to cultivate the intellect, which is to develop capacity or knowledge, does not result in intelligence. There is a distinction between intellect and intelligence. Intellect is thought functioning independently of emotion, whereas, intelligence is the capacity to feel as well as to reason; and until we approach life with intelligence, instead of intellect alone, or with emotion alone, no political or educational system in the world can save us from the toils of chaos and destruction.	तो स्पष्ट है कि केवल बुद्धि का संवर्धन करने से, अर्थात क्षमता अथवा ज्ञान का विकास करने से, प्रज्ञा नहीं उत्पन्न होती। बुद्धि तथा प्रज्ञा में अन्तर है। भावना से नियुक्त विचार को बुद्धि कहते हैं, और महसूस करना व सोचना इन दोनों की क्षमता को प्रज्ञा कहते हैं; केवल बुद्धि अथवा भावना के द्वारा जीवन को सम्मुख होने के बजाए जब तक हम प्रज्ञा से जीवन को सम्मुख नहीं होंगे, विश्व की कोई राजनीतिक अथवा शैक्षिक व्यवस्था हमें दुर्व्यवस्था तथा विनाश के कष्टों से नहीं बचा सकेगी।
Knowledge is not comparable with intelligence, knowledge is not wisdom. Wisdom is not marketable, it is not a merchandise that can be bought with the price of learning or discipline. Wisdom cannot be found in books; it cannot be accumulated, memorized or stored up. Wisdom comes with the abnegation of the self. To have an open mind is more important than learning; and we can have an open mind, not by cramming it full of information, but by being aware of our own thoughts and feelings, by carefully observing ourselves and the influences about us, by listening to others, by watching the rich and the poor, the powerful and the lowly. Wisdom does not come through fear and oppression, but through the observation and understanding of everyday incidents in human relationship.	ज्ञान की वस्तुतः प्रज्ञा से कोई तुलना नहीं है; ज्ञान विवेक नहीं है। विवेक कोई व्यवसाय की वस्तु नहीं है, वह कोई व्यापारिक माल नहीं है जिसे अनुशासन या विद्वत्ता का मूल्य देकर खरीदा जा सके। विवेक पुस्तकों से नहीं हासिल हो सकता; उसको न तो एकत्र किया जा सकता है, न रटा जा सकता है, न भण्डार में भरा जा सकता है। विवेक 'स्व' के निषेध से आता है। खुला हुआ दिमाग और मन विद्वत्ता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है; परन्तु यह खुला हुआ दिमाग और मन तमाम जानकारियों को ठूसने से नहीं आता। उसके लिए ज़रूरत है अपने विचारों और भावनाओं के प्रति जागरूक होने की, स्वयं अपने तथा अपने चारों ओर के प्रभावों का सावधानी से अन्वीक्षण करने की, दूसरों को सजगता से सुनने की, धनी व निर्धन एवं शक्तिशाली व कमजोर इन सब का सावधानी से अवलोकन करने की। विवेक वस्तुतः भय और उत्पीड़न से नहीं आता, वह मानव–सम्बन्ध की प्रतिदिन की घटनाओं को देखने–समझने से आता है।

In our search for knowledge, in our acquisitive desires, we are losing love, we are blunting the feeling for beauty, the sensitivity to cruelty; we are becoming more and more specialized and less and less integrated. Wisdom cannot be replaced by knowledge, and no amount of explanation, no accumulation of facts, will free man from suffering. Knowledge is necessary, science has its place; but if the mind and heart are suffocated by knowledge, and if the cause of suffering is explained away, life becomes vain and meaningless. And is this not what is happening to most of us? Our education is making us more and more shallow; it is not helping us to uncover the deeper layers of our being, and our lives are increasingly disharmonious and empty.	ज्ञान की अपनी खोज में, अपनी परिग्रही वासनाओं के कारण, हम प्रेम को खो रहे हैं, सौन्दर्य के प्रति अपनी भावना एवं क्रूरता के प्रति अपनी संवेदनशीलता को फूहड़ बना रहे हैं; हम अधिकाधिक विशेषज्ञ और उतने ही कम संवेदनशील होते जा रहे हैं। विवेक का स्थान ज्ञान नहीं ले सकता। व्याख्या कितनी भी मात्रा में हो, तथ्यों का कितना भी संकलन किया जाए, वह मनुष्य को दुखभोग से मुक्त नहीं करेगा। ज्ञान आवश्यक है, विज्ञान का अपना स्थान है; परन्तु यदि ज्ञान द्वारा मन और हृदय का गला ही घोंट दिया जाएगा और दुख के कारण को नज़रअंदाज़ किया जाएगा, तो जीवन अर्थहीन हो जाएगा और क्या हममें से अधिकांश के साथ ऐसा ही नहीं हो रहा है? हमारी शिक्षा हमें अधिकाधिक छिछला बनाती जा रही है; अपने जीवन की गहरी परतों को प्रकाश में लाने में वह हमारी सहायता नहीं कर रही और हमारा जीवन अधिकाधिक असंगत, निसंवादी तथा खोखला होता जा रहा है।
Information, the knowledge of facts, though ever increasing, is by its very nature limited. Wisdom is infinite, it includes knowledge and the way of action; but we take hold of a branch and think it is the whole tree. Through the knowledge of the part, we can never realize the joy of the whole. Intellect can never lead to the whole, for it is only a segment, a part.	जानकारी एवं तथ्यों का ज्ञान यद्यपि निरन्तर बढ़ता जा रहा है, परन्तु वह अपने स्वरूप से ही सीमित है। विवेक असीमित है, उसमें ज्ञान तथा कर्म दोनों ही सम्मिलित हैं; परन्तु हम अक्सर एक ही टहनी को पकड़ते हैं और समझते हैं कि वही पूरा वृक्ष है। किसी एक अंश के ज्ञान के द्वारा हम समग्र के आनन्द का साक्षात्कार कभी नहीं कर सकते। बुद्धि कभी पूर्णता तक नहीं ले जा सकती, क्योंकि वह केवल एक टुकड़ा है, एक अंशमात्र है।
We have separated intellect from feeling, and have developed intellect at the expense of feeling. We are like a three-legged object with one leg much longer than the others, and we have no balance. We are trained to be intellectual; our education cultivates the intellect to be sharp, cunning,	हमने बुद्धि को भावना से अलग कर दिया है। यही नहीं, हमने भावना की कीमत पर बुद्धि का विकास किया है। हम एक तीन पैर वाली वस्तु की भाँति हैं जिसका एक पैर अन्य दो पैरों की अपेक्षा कहीं अधिक लंबा है और इस प्रकार हममें संतुलन नहीं है। हमें बौद्धिक बनने के लिए प्रशिक्षित किया गया है; हमारी शिक्षा बुद्धि

acquisitive, and so it plays the most important role in our life. Intelligence is much greater than intellect, for it is the integration of reason and love; but there can be intelligence only when there is self-knowledge, the deep understanding of the total process of oneself.	का इस प्रकार संवर्धन करती है कि वह तेज़, धूर्त तथा परिग्रही अर्थात संचयशील बने, और इसलिए हमारे जीवन में वह सर्वाधिक महत्त्व की भूमिका अदा करती है। बुद्धि से प्रज्ञा कहीं अधिक बड़ी है, क्योंकि उसमें प्रेम और तर्क-बुद्धि का समन्वय है; परन्तु प्रज्ञा केवल वहीं सम्भव है जहाँ आत्मबोध है, जहाँ अपनी समस्त प्रक्रिया का गहरा अवबोध है।
What is essential for man, whether young or old, is to live fully, integrally, and that is why our major problem is the cultivation of that intelligence which brings integration. Undue emphasis on any part of our total make-up gives a partial and therefore distorted view of life, and it is this distortion which is causing most of our difficulties. Any partial development of our whole temperament is bound to be disastrous both for ourselves and for society, and so it is really very important that we approach our human problems with an integrated point of view.	चाहे वह युवा हो अथवा वृद्ध, मनुष्य के लिए यही अनिवार्य है कि वह पूरी तरह, समन्वित ढंग से जिए, और समन्वय लानेवाली प्रज्ञा का संवर्धन करना हमारी मुख्य समस्या है। अपने समग्र व्यक्तित्व के किसी एक अंश पर अधिक बल देना जीवन का विकृत दर्शन कराता है, और यह विकृत दर्शन ही हमारी अधिकांश कठिनाइयों का कारण है। हमारे स्वभाव के किसी अंश मात्र का विकास निश्चय ही हमारे लिए और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा, और इसलिए यह वास्तव में अत्यंत आवश्यक है कि हम एक समन्वित दृष्टि से मानव-समस्याओं का अध्ययन करें।
To be an integrated human being is to understand the entire process of one's own consciousness, both the hidden and the open. This is not possible if we give undue emphasis to the intellect. We attach great importance to the cultivation of the mind, but inwardly we are insufficient, poor and confused. This living in the intellect is the way of disintegration; for ideas, like beliefs, can never bring people together except in conflicting groups.	समन्वित मनुष्य बनना यानी अपनी प्रच्छन्न तथा प्रकट चेतना की समस्त प्रक्रिया को समझना। यदि हम बुद्धि को अनावश्यक महत्त्व देंगे तो यह संभव नहीं। यदि हम मन-बुद्धि के संवर्धन को अधिक महत्त्व देते हैं, परन्तु अंदर से हम अधूरे हैं, क्षुद्र हैं, भ्रांत हैं। बुद्धि में ही सदा जीना विघटन का मार्ग है; क्योंकि विश्वासों की भाँति विचार भी मनुष्यों को जोड़ नहीं सकते, वे उन्हें प्रतिद्वन्द्वी समूहों में ही बाँट सकते हैं।
As long as we depend on thought as a means of integration, there must be disintegration; and to understand the disintegrating action of thought is to be	ज्ब तक हम विचार को समन्वय का साधन मानकर उस पर निर्भर करते हैं, तब तक विघटन अनिवार्य है; विचार के इस विघटित करनेवाले कार्य को समझना

aware of the ways of the self, the ways of one's own desire. We must be aware of our conditioning and its responses, both collective and personal. It is only when one is fully aware of the activities of the self with its contradictory desires and pursuits, its hopes and fears, that there is a possibility of going beyond the self.	ही स्व की प्रक्रिया को, स्वयं अपनी वासना की प्रक्रिया को, समझना है। हमें अपनी संस्कारबद्धता और उसकी प्रतिक्रियाओं के प्रति जागरूक होना आवश्यक है, चाहे ये सामूहिक हों अथवा व्यक्तिगत। परस्पर विरोधी वासनाओं, कोशिशों एवं आशा–आशंकाओं के जाल में फंसे स्व की क्रियाओं के प्रति जब व्यक्ति पूर्णतया जागरूक होगा तभी स्व के परे जाने की कोई संभावना होगी।
Only love and right thinking will bring about true revolution, the revolution within ourselves. But how are we to have love? Not through the pursuit of the ideal of love, but only when there is no hatred, when there is no greed, when the sense of self, which is the cause of antagonism, comes to an end. A man who is caught up in the pursuits of exploitation, of greed, of envy, can never love.	केवल प्रेम और सही सोच ही सच्ची क्रान्ति, हमारे अन्तर की क्रान्ति, लाने में सक्षम हैं । परन्तु हममें प्रेम कैसे पैदा हो? प्रेम को प्रेम के आदर्श का अनुशीलन करने से नहीं प्राप्त किया जा सकता। वह केवल तभी संभव है जब घृणा नहीं होगी, जब लोभ नहीं होगा, जब वैमनस्य पैदा करने वाला अहंभाव नहीं होगा। शोषण, लोभ एवं ईर्ष्या में उलझा मनुष्य कभी प्रेम नहीं कर सकता।
Without love and right thinking, oppression and cruelty will ever be on the increase. The problem of man's antagonism to man can be solved, not by pursuing the ideal of peace, but by understanding the causes of war which lie in our attitude towards life, towards our fellow-beings; and this understanding can come about only through the right kind of education. Without a change of heart, without goodwill, without the inward transformation which is born of self-awareness, there can be no peace, no happiness for men.	प्रेम और सही सोच के अभाव में जुल्म और बेरहमी बढ़ते ही रहेंगे। एक मनुष्य के दूसरे मनुष्य के साथ वैमनस्य की समस्या का समाधान शांति का आदर्श रखने से नहीं बल्कि वह युद्ध के कारणों की समझ से होगा। और ये 'कारण' जीवन के प्रति, अपने संगी–साथियों के प्रति हमारे नज़रिए में छिपे हैं; ओर यह समझ केवल सही शिक्षा से ही आ सकती है। हृदय–परिवर्तन के बिना, सद्भावना के बिना, आत्मबोध से पैदा होने वाले आंतरिक परिवर्तन के बिना मनुष्य के लिए सुख एवं शान्ति सम्भव नहीं है।
Chapter 5	
J. Krishnamurti Education and the Significance of Life **'The School'**	**विद्यालय**

THE right kind of **education** is concerned with individual freedom, which alone can bring true cooperation with the whole, with the many; but this freedom is not achieved through the pursuit of one's own aggrandizement and success. Freedom comes with self-knowledge, when the mind goes above and beyond the hindrances it has created for itself through craving its own security.	सही शिक्षा का सम्बंध व्यक्ति की स्वतंत्रता से है। यही स्वतंत्रता है जो समग्र के साथ, अनेक के साथ, सहयोग को संभव बनाती है; परंतु यह स्वतंत्रता आत्म-विस्तार तथा अपनी सफलता के लिए किये गये प्रयत्नों का परिणाम नहीं है। स्वतंत्रता आत्मबोध के ज़रिए आती है, वह तब आती है जब मन उन बाधाओं से ऊपर एवं परे उठ जाता है जिनको उसने अपनी सुरक्षा की लालसा के द्वारा स्वयं अपने लिए निर्मित किया है।
It is the function of **education** to help each individual to discover all these psychological hindrances, and not merely impose upon him new patterns of conduct, new modes of thought. Such impositions will never awaken intelligence, creative understanding, but will only further condition the individual. Surely, this is what is happening throughout the world, and that is why our problems continue and multiply.	शिक्षा का कार्य इन सब मनोवैज्ञानिक बाधाओं के अन्वेषण में प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करना है, न कि आचार-व्यवहार के नवीन प्रारूपों का, विचार के नवीन स्वरूपों का, उसके ऊपर आरोपण करना। ऐसे आरोपण कभी भी प्रज्ञा को, सृजनशील अवबोध को, जागृत नहीं करेंगे, बल्कि वे केवल व्यक्ति को और अधिक संस्कारबद्ध करेंगे। निस्संदेह, विश्व में सर्वत्र यही हो रहा है। यही कारण है कि हमारी समस्याएँ बनी हुई हैं तथा बढ़ती जा रही हैं।
It is only when we begin to understand the deep significance of human life that there can be true **education**; but to understand, the mind must intelligently free itself from the desire for reward which breeds fear and conformity. If we regard our children as personal property, if to us they are the continuance of our petty selves and the fulfilment of our ambitions, then we shall build an environment, a social structure in which there is no love, but only the pursuit of self-centred advantages.	सही शिक्षा तभी संभव होगी जब हम मानव जीवन के गहरे महत्त्व को समझना आरंभ करेंगें; परंतु समझने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा मन फल की उस वासना से मुक्त हो जाए जो भय तथा अनुकरण उत्पन्न करती है। यदि हम अपने बच्चों को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मानते हैं, यदि हमारे लिए वे हमारे क्षुद्र स्व का ही सातत्य हैं तथा हमारी महत्त्वाकांक्षाओं की परिपूर्ति हैं, तो हम एक ऐसे परिवेश, एक ऐसी समाज-संरचना का निर्माण करेंगे जिसमें प्रेम नहीं है, बस केवल स्वकेंद्रित लाभों की खोज है।
A school which is successful in the worldly sense is more often than not a failure as an educational centre. A	सांसारिक अर्थ में जो विद्यालय सफल होते हैं वे शिक्षा-केंद्र के रूप में अक्सर असफल होते हैं। एक बड़ी एवं समृद्ध

large and flourishing institution in which hundreds of children are **educated** together, with all its accompanying show and success, can turn out bank clerks and super-salesmen, industrialists or commissars, superficial people who are technically efficient; but there is hope only in the integrated individual, which only small schools can help to bring about. That is why it is far more important to have schools with a limited number of boys and girls and the right kind of educators, than to practise the latest and best methods in large institutions.	संस्था, जिसमें सैकड़ों बच्चों को एक साथ बड़े दिखावे के साथ और बड़ी सफलता के साथ शिक्षा दी जाती है, बैंक क्लर्क, अच्छे विक्रेता, उद्योगपति अथवा राजकीय विभागों के अध्यक्ष जैसे सतही व्यक्ति ही उत्पन्न करती है जो तकनीक के क्षेत्र में कार्यकुशल होते हैं। परंतु आशा केवल समन्वित व्यक्ति से ही की जा सकती है और उन्हें तैयार करने में केवल छोटे विद्यालय ही सहायक सिद्ध हो सकते हैं। यही कारण है कि बड़ी शिक्षा–संस्थाओं में आधुनिकतम एवं श्रेष्ठतम शिक्षा–पद्धतियों का प्रयोग करने के स्थान पर सीमित संख्या में बालकों एवं बालिकाओं वाले ऐसे विद्यालयों का होना अधिक महत्त्वपूर्ण है जिनमें उचित प्रकार के शिक्षक अध्यापन कार्य करते हों।
Unfortunately, one of our confusing difficulties is that we think we must operate on a huge scale. Most of us want large schools with imposing buildings, even though they are obviously not the right kind of educational centres, because we want to transform or affect what we call the masses.	दुर्भाग्य से हमारी भ्रांतिपूर्ण कठिनाई हमारा यह विचार ही है कि हमें एक बड़े स्तर पर कार्य करना चाहिए। हममें से अधिकांश व्यक्ति बड़े विद्यालय चाहते हैं जिनकी प्रभावशाली इमारतें हों, क्योंकि हम उसे परिवर्तित अथवा प्रभावित करना चाहते हैं जिसे हम जनसमूह कहते हैं, यद्यपि यह स्पष्ट है कि ऐसी संस्थाएँ सही प्रकार के शिक्षा–केंद्र नहीं होतीं।
But who are the masses? You and I. Let us not get lost in the thought that the masses must also be rightly **educated**. The consideration of the mass is a form of escape from immediate action. Right **education** will become universal if we begin with the immediate, if we are aware of ourselves in our relationship with our children, with our friends and neighbours. Our own action in the world we live in, in the world of our family and friends, will have expanding influence and effect.	परंतु यहे जनसमूह कौन है? आप और मैं। जनता को सही शिक्षा दी जानी चाहिए, इस विचार में हम खो न जाएं। जनता की यह चिंता एक प्रकार का पलायन है जिसे हम तत्काल कर्म करने से बचने के लिए करते हैं। यदि जो तत्काल आवश्यक है उससे हम आरंभ करें, यदि अपने बच्चों, अपने मित्रों तथा पड़ोसियों के साथ अपने संबंध में हम स्वयं अपने प्रति जागरूक हों, तो उचित शिक्षा सार्वभौमिक हो ही जाएगी और जिस संसार में हम रहते हैं, अर्थात् अपने परिवार एवं मित्रों का संसार, इसमें किये गये हमारे अपने कार्य का प्रभाव एवं परिणाम व्यापक होगा।
By being fully aware of ourselves in all	अपने स्वयं के तमाम सम्बंधों में अपने

our relationships we shall begin to discover those confusions and limitations within us of which we are now ignorant; and in being aware of them, we shall understand and so dissolve them. Without this awareness and the self-knowledge which it brings, any reform in **education** or in other fields will only lead to further antagonism and misery.	प्रति पूर्णतया जागरूक होने से हम अपने अंदर की उन भ्रांतियों और सीमाओं की जानकारी प्राप्त करना आरंभ करेंगे जिनका अभी हमें कोई ज्ञान नहीं है। उनके प्रति जागरूक होकर हम उन्हें समझेंगे तथा इस प्रकार उनको समाप्त करेंगे। इस जागरूकता तथा इससे उत्पन्न आत्मज्ञान के बिना शिक्षा अथवा दूसरे क्षेत्रों में लाया गया किसी भी प्रकार का सुधार और अधिक विरोध तथा कष्ट पैदा करेगा।
In building enormous institutions and employing teachers who depend on a system instead of being alert and observant in their relationship with the individual student, we merely encourage the accumulation of facts, the development of capacity, and the habit of thinking mechanically, according to a pattern; but certainly none of this helps the student to grow into an integrated human being. Systems may have a limited use in the hands of alert and thoughtful educators, but they do not make for intelligence. Yet it is strange that words like "system," "institution," have become very important to us. Symbols have taken the place of reality, and we are content that it should be so; for reality is disturbing, while shadows give comfort.	बड़ी-बड़ी संस्थाओं का हम निर्माण करते हैं तथा ऐसे शिक्षकों को नियुक्त करते हैं जो प्रत्येक छात्र के साथ अपने सम्बंध में सचेत और सतर्क होने के बजाय केवल एक व्यवस्था-प्रणाली पर आश्रित रहते हैं। ऐसा करके हम केवल तथ्यों के संकलन को, कार्य-क्षमता के विकास को, और यंत्रवत् एवं किसी प्रारूप के अनुरूप सोचने की आदत को ही प्रोत्साहित करते हैं; परंतु निश्चय ही यह सब समन्वित व्यक्ति के रूप में विकसित होने में छात्र की सहायता नहीं करता। सचेत और विचारशील शिक्षकों द्वारा व्यवस्था प्रणालियों का कोई सीमित उपयोग हो भी सकता है, परंतु ये व्यवस्था-प्रणालियां प्रज्ञा को विकसित नहीं करतीं। फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि ''व्यवस्था-प्रणाली'', ''संस्था'', जैसे शब्द हमारे लिए बड़े महत्त्व के हो गये हैं। यथार्थ का स्थान प्रतीकों ने ले लिया है और हम इससे संतुष्ट हैं कि ऐसा है; क्योंकि जो यथार्थ होता है वह परेशानी पैदा करता है, जबकि परछाइयों से आराम मिलता है।
Nothing of fundamental value can be accomplished through mass instruction, but only through the careful study and understanding of the difficulties, tendencies and capacities of each child; and those who are aware of this, and who earnestly desire to understand themselves and help the young, should	जनता की सामूहिक तालीम के द्वारा मौलिक महत्त्व की कोई उपलब्धि नहीं हो सकती, यह तभी संभव है जब प्रत्येक बालक की क्षमताओं एवं प्रवृत्तियों का तथा उसकी कठिनाइयों का हम सावधानी से निरीक्षण करें और उन्हें समझें; और जो लोग इसके प्रति जागरूक हैं और जो ईमानदारी से चाहते हैं कि अपने को

come together and start a school that will have vital significance in the child's life by helping him to be integrated and intelligent. To start such a school, they need not wait until they have the necessary means. One can be a true teacher at home, and opportunities will come to the earnest.	समझें तथा बालकों की सहायता करें, उन्हें एक साथ मिलकर एक ऐसा विद्यालय आरंभ करना चाहिए जो बालक के व्यक्तित्व को समन्वित व प्रज्ञावान बनाने में सहायक हो। ऐसा विद्यालय बालक के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान लेगा। ऐसे विद्यालय को आरंभ करने के लिए उन्हें आवश्यक साधन को जुटाने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। अपने घर पर ही कोई व्यक्ति एक सच्चा अध्यापक बन सकता है और यदि वह सच्चा है तो उसे उचित अवसरों की कमी न होगी।
Those who love their own children and the children about them, and who are therefore in earnest, will see to it that a right school is started somewhere around the corner, or in their own the money will come - it is the least important consideration. To maintain a small school of the right kind is of course financially difficult; it can flourish only on self-sacrifice, not on a fat bank account. Money invariably corrupts unless there is love and understanding. But if it is really a worthwhile school, the necessary help will be found. When there is love of the child, all things are possible.	इसीलिए जो लोग अपने बच्चों से तथा अपने चारों ओर के बच्चों से प्रेम करते हैं और जो ईमानदार हैं, वे एक उचित विद्यालय को कहीं पास में ही अथवा अपने ही घर से आरंभ कर देंगे। फिर उनके लिए आवश्यक धन आएगा – इसका अधिक महत्त्व नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सही प्रकार के छोटे से विद्यालय को बनाए रखना आर्थिक दृष्टि से आसान नही, वह केवल आत्मत्याग से ही पनप सकता है, न कि बैंक के किसी बड़े खाते के आधार पर। प्रेम और अवबोध के अभाव में तो धन अनिवार्यतः भ्रष्टता ही लाएगा। परंतु यदि विद्यालय वास्तव में उपयोगी है तो उसे आवश्यक सहायता मिलेगी। जहाँ बालक के प्रति प्रेम है, वहाँ सभी कुछ संभव है।
As long as the institution is the most important consideration, the child is not. The right kind of educator is concerned with the individual, and not with the number of pupils he has; and such an educator will discover that he can have a vital and significant school which some parents will support. But the teacher must have the flame of interest; if he is lukewarm, he will have an institution like any other.	जब तक संस्था को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया जाएगा, तब तक बालक को महत्त्व नहीं मिल सकता। सही शिक्षक का सरोकार व्यक्ति से होता है न कि छात्रों की संख्या से; और ऐसे शिक्षक को मालूम हो जायेगा कि वह एक महत्त्वपूर्ण एवं जीवंत विद्यालय चला सकता है जिसे चलाने में कुछ अभिभावक उसकी सहायता करेंगे। परंतु अध्यापक के अंदर उत्साहपूर्ण रुचि होनी चाहिए। यदि उसका उत्साह शिथिल है तो उसकी संस्था भी दूसरी संस्थाओं की भाँति ही होगी।
If parents really love their children, they will employ legislation and other	यदि अभिभावक वास्तव में अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो ऐसे छोटे विद्यालयों की

means to establish small schools staffed with the right kind of educators; and they will not be deterred by the fact that small schools are expensive and the right kind of educators difficult to find.	स्थापना के लिए, जिनमें सही प्रकार के शिक्षक नियुक्त हों, कानून तथा दूसरे साधनों की सहायता लेंगे। यह सही है कि छोटे विद्यालय खर्चीले होते हैं और सही प्रकार के शिक्षक प्राप्त करना कठिन होता है, परंतु इससे वे पीछे नहीं हटेंगे।
They should realize, however, that there will inevitably be opposition from vested interests, from governments and organized religions, because such schools are bound to be deeply revolutionary. True revolution is not the violent sort; it comes about through cultivating the integration and intelligence of human beings who, by their very life, will gradually create radical changes in society.	फिर भी उन्हें यह समझना चाहिए कि निहित स्वार्थों द्वारा, सरकारों और संगठित धर्मों द्वारा, अनिवार्यतः उनका विरोध होगा; क्योंकि ऐसे विद्यालय निश्चय ही बड़े क्रांतिकारी होंगे। सही क्रांति हिंसक क्रांति नहीं होती; वह व्यक्तियों में समन्वय तथा प्रज्ञा के पोषण से आती है और ऐसे ही व्यक्ति अपने जीवन के द्वारा समाज में मौलिक परिवर्तन लाएंगे।
But it is of the utmost importance that all the teachers in a school of this kind should come together voluntarily, without being persuaded or chosen; for voluntary freedom from worldliness is the only right foundation for a true educational centre. If the teachers are to help one another and the students to understand right values, there must be constant and alert awareness in their daily relationship.	परंतु यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि इस प्रकार के विद्यालयों में सभी शिक्षक स्वेच्छा से आयें, किसी के कहने या चुनने से नहीं, क्योंकि सांसारिकता से स्वैच्छिक मुक्ति ही सच्चे शिक्षा- केंद्र की सही नींव है। यदि अध्यापकों को सम्यक् जीवन-मूल्यों को समझने में एक-दूसरे की और छात्रों की सहायता करनी है तो उनके दैनिक सम्बंधों में एक सतत सतर्क जागरूकता होना ज़रूरी है।
In the seclusion of a small school one is apt to forget that there is an outside world, with its everincreasing conflict, destruction and misery. That world is not separate from us. On the contrary, it is part of us, for we have made it what it is; and that is why, if there is to be a fundamental alteration in the structure of society, right **education** is the first step.	छोटे से विद्यालय के एकांत में यह स्वाभाविक है कि व्यक्ति यह भूल जाए कि एक बाहरी संसार भी है जिसमें निरन्तर बढ़नेवाला द्वंद्व, विनाश और कष्ट है। यह संसार हमसे पृथक् नहीं है। बल्कि यह हमारा ही अंग है, क्योंकि जो कुछ वह है हमारा ही बनाया हुआ है; और इसीलिए यदि समाज की संरचना में कोई मौलिक परिवर्तन होना है तो सही शिक्षा उसके लिए पहला कदम है।
Only right **education**, and not ideologies, leaders and economic revolutions, can provide a lasting solution for our problems and miseries;	विचार-प्रणालियाँ, नेता लोग तथा आर्थिक क्रांतियाँ नहीं वरन सम्यक् शिक्षा ही हमारी समस्याओं और कष्टों का स्थायी समाधान दे सकती है। इस सत्य को बौद्धिक तथा

and to see the truth of this fact is not a matter of intellectual or emotional persuasion, nor of cunning argument. If the nucleus of the staff in a school of the right kind is dedicated and vital, it will gather to itself others of the same purpose, and those who are not interested will soon find themselves out of place. If the centre is purposive; and alert, the indifferent periphery will wither and drop away; but if the centre is indifferent, then the whole group will be uncertain and weak.	भावनात्मक दबाव के द्वारा नहीं देखा जा सकता और न ही चतुर तर्कों के द्वारा उसे समझा जा सकता है। यदि एक उचित विद्यालय में अध्यापकों का एक केंद्रीय समूह है जो निष्ठावान तथा जीवंत है, तो वह ऐसे ही दूसरे व्यक्तियों को अपने चारों ओर एकत्रित कर लेगा और दूसरे जो उसमें रुचि नहीं रखते, शीघ्र ही वहाँ अपने को असंगत व अनुपयुक्त अनुभव करने लगेंगे। यदि यह केंद्रीय समूह सप्रयोजन एवं सतर्क है तो किनारे बैठे हुए उदासीन व्यक्ति तितर-बितर हो जाएँगे, हट जाएँगे; परंतु यदि केंद्र ही उदासीन है तो सारा समूह अनिश्चित और दुर्बल हो जाएगा।
The centre cannot be made up of the headmaster alone. Enthusiasm or interest that depends on one person is sure to wane and die. Such interest is superficial, flighty and worthless, for it can be diverted and made subservient to the whims and fancies of another. If the headmaster is dominating, then the spirit of freedom and co-operation obviously cannot exist. A strong character may build a first-rate school, but fear and subservience creep in, and then it generally happens that the rest of the staff is composed of nonentities.	यह केंद्र केवल प्रधानाध्यापकों से नहीं बनता। जो उत्साह और रुचि केवल एक ही व्यक्ति पर आश्रित है वह निश्चय ही शिथिल होकर समाप्त हो जाएगी। ऐसी रुचि छिछली, अस्थिर और व्यर्थ होती हे, क्योंकि उसे दूसरों की बातों और कल्पनाओं द्वारा बदला जा सकता है तथा उनका दास बनाया जा सकता है। यदि प्रधानाध्यापक अधिकार जमानेवाला है तो स्पष्ट है कि स्वतंत्रता और सहयोग की भावना का वहाँ अस्तित्व नहीं हो सकता। एक दृढ़ व्यक्तित्व वाला कोई सज्जन, हो सकता है, एक उच्च कोटि का स्कूल बना दे, परंतु भय और अधीनता वहाँ चुपके से आ ही जाती है और तब प्रायः यही होता है कि स्टाफ के शेष सदस्य अस्तित्वहीन हो जाते हैं।
Such a group is not conducive to individual freedom and understanding. The staff should not be under the domination of the headmaster, and the headmaster should not assume all the responsibility; on the contrary, each teacher should feel responsible for the whole. If there are only a few who are interested, then the indifference or opposition of the rest will impede or stultify the general effort.	ऐसा समूह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अवबोध के अनुकूल नहीं होता। स्टाफ को प्रधानाध्यापक के प्रभुत्व के अधीन नहीं होना चाहिए और प्रधानाध्यापक को सही दायित्वों को अपने ही ऊपर नहीं ले लेना चाहिए; बल्कि होना यह चाहिए कि प्रत्येक अध्यापक सम्पूर्ण के लिए अपने को जिम्मेदार समझे। यदि केवल थोड़े ही व्यक्ति हैं जिनमें वास्तविक अभिरुचि है तो शेष लोगों की उदासीनता अथवा उनका विरोध सामूहिक प्रयत्न में बाधक बनेगा,

	तथा उसे अवरुद्ध कर देगा।
One may doubt that a school can be run without a central authority; but one really does not know, because it has never been tried. Surely, in a group of true educators, this problem of authority will never arise. When all are endeavouring to be free and intelligent, cooperation with one another is possible at all levels. To those who have not given themselves over deeply and lastingly to the task of right **education**, the lack of a central authority may appear to be an impractical theory; but if one is completely dedicated to right **education**, then one does not require to be urged, directed or controlled. Intelligent teachers are pliable in the exercise of their capacities; attempting to be individually free, they abide by the regulations and do what is necessary for the benefit of the whole school. Serious interest is the beginning of capacity, and both are strengthened by application.	यह संदेह किया जा सकता है कि एक केंद्रीय सत्ता के अभाव में क्या कोई विद्यालय चलाया जा सकता है; परंतु इसके विषय में वास्तव में कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस दिशा में प्रयास कभी किया ही नहीं गया। निस्संदेह सच्चे शिक्षकों के समूह में अधिकार–प्राधिकार की यह समस्या कभी नहीं उठेगी। जब सभी मुक्त एवं प्रज्ञावान होने के लिए प्रयत्नशील होंगे तो प्रत्येक स्तर पर एक–दूसरे के साथ सहयोग संभव होगा। जिन्होंने सम्यक् शिक्षा के कार्य के लिए गंभीरता से अथवा स्थायी रूप से अपने को समर्पित नहीं किया है, वहाँ केंद्रीय अधिकारी का अभाव एक अव्यावहारिक सिद्धांत प्रतीत हो सकता है, परंतु यदि कोई व्यक्ति ऐसी सम्यक् शिक्षा के प्रति पूर्णतया समर्पित है तो उसे प्रेरित करने की, निर्देशित अथवा नियंत्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रज्ञावान अध्यापक अपनी क्षमताओं के प्रयोग में लचीले होते हैं; व्यक्तिगत रूप से वे स्वतंत्र होने का प्रयत्न करते हैं परंतु इसके साथ–साथ वे नियमों का पालन करते हैं और संपूर्ण विद्यालय के लाभ के लिए जो आवश्यक होता है, करते हैं। हमारी गहन–गंभीर अभिरुचि ही क्षमता का आरोह है, और प्रयोग–उपयोग द्वारा दोनों ही चीजें दृढ़ होती हैं।
If one does not understand the psychological implications of obedience, merely to decide not to follow authority will only lead to confusion. Such confusion is not due to the absence of authority, but to the lack of deep and mutual interest in right **education**. If there is real interest, there is constant and thoughtful adjustment on the part of every teacher to the demands and necessities of running a school. In any relationship, frictions and misunderstandings are	यदि हम आज्ञाकारिता के निहितार्थ नहीं समझेंगे, तो सिर्फ अधिकारी का अनुसरण न करने का निश्चय करना गड़बड़ पैदा करेगा। इस तरह की गड़बड़ प्राधिकार के अभाव का परिणाम नहीं होती, बल्कि सम्यक् शिक्षा में गहरी तथा पारस्परिक रुचि के अभाव का परिणाम होती है। यदि सच्ची रुचि है, तो हर अध्यापक विद्यालय चलाने में निहित माँगों और जरूरतों से सतत तथा विचारपूर्वक समायोजन करेगा। हर किसी संबंध में संघर्ष तथा गलतफहमियाँ अनिवार्य हैं परंतु

inevitable; but they become exaggerated when there is not the binding affection of common interest.	समान-रुचि रूपी स्नेह का बंधन न हो तो उन्हें बढ़ावा मिलता है।
There must be unstinted co-operation among all the teachers in a school of the right kind. The whole staff should meet often, to talk over the various problems of the school; and when they have agreed upon a certain course of action, there should obviously be no difficulty in carrying out what has been decided. If some decision taken by the majority does not meet with the approval of a particular teacher, it can be discussed again at the next meeting of the faculty.	उचित प्रकार के विद्यालय में सारे अध्यापकों के बीच अथक सहयोग जरूरी है। सारे स्टाफ की यथा संभव बैठकें हों, ताकि विद्यालय की अलग अलग समस्याओं पर वार्तालाप हो सकें और जब किसी कृति-विशेष को कार्यान्वित करने के लिए सबकी सहमति हो, तब उसे कार्यान्वित करने में स्पष्टतया कोई दिक़्क़त नहीं आनी चाहिए। यदि बहुसंख्यकों का कोई निर्णय किसी एक विशिष्ट अध्यापक को मान्य नहीं होता, तो विद्वत्-सभा की अगली बैठक में उस पर फिर से चर्चा की जा सकती है।
No teacher should be afraid of the headmaster, nor should the headmaster feel intimidated by the older teachers. Happy agreement is possible only when there is a feeling of absolute equality among all. It is essential that this feeling of equality prevail in the right kind of school, for there can be real co-operation only when the sense of superiority and its opposite are non-existent. If there is mutual trust, any difficulty or misunderstanding will not just be brushed aside, but will be faced, and confidence restored.	किसी भी अध्यापक को मुख्याध्यापक का भय नहीं होना चाहिए और न ही मुख्याध्यापक वरिष्ठ अध्यापकों से भयभीत रहें। सुखकर सुसंवाद तभी संभव होगा जब सबमें आत्यंतिक समता का भाव होगा। यह ज़रूरी है कि उचित प्रकार के विद्यालय में समता का यह भाव विद्यमान रहे, क्योंकि यथार्थ सहयोग तभी संभव होगा, जब श्रेष्ठ-कनिष्ठता का भाव नहीं रहेगा। यदि परस्पर विश्वास है, तो किसी भी मुश्किल या गलतफ़हमी को नज़रअंदाज़ करने के बजाय उसका सामना किया जाएगा, और इस तरह से आत्मविश्वास फिर से स्थापित होगा।
If the teachers are not sure of their own vocation and interest, there is bound to be envy and antagonism among them, and they will expend whatever energies they have over trifling details and wasteful bickerings; whereas, irritations and superficial disagreements will quickly be passed over if there is a burning interest in bringing about the right kind of **education**. Then the details which	यदि अध्यापक अपने कार्य और अपनी रुचि के विषय में निश्चित नहीं हैं तो उनमें द्वेष अथवा संघर्ष का होना स्वाभाविक है और वे, जो कुछ शक्ति उनमें है, उसे छोटी-मोटी बातों और व्यर्थ के झगड़ों में नष्ट करेंगे; दूसरी ओर, यदि सही शिक्षा लाने के लिए उनमें उत्कट अभिरुचि है तो झुंझलाहट और ऊपरी असहमति शीघ्र ही समाप्त हो जाएगी। तब छोटी-मोटी बातें जो इतनी बड़ी दिखलाई

loom so large assume their normal proportions, friction and personal antagonisms are seen to be vain and destructive, and all talks and discussions help one to find out what is right and not who is right.	देती हैं अपने सामान्य रूप में आ जाएँगी, संघर्ष और व्यक्तिगत वैमनस्य व्यर्थ के और विनाशकारी महसूस होने लगेंगे और सभी चर्चाएँ तथा परस्पर संवाद इसका पता लगाने में सहायक होंगे कि क्या सही है, न कि कौन सही है।
Difficulties and misunderstandings should always be talked over by those who are working together with a common intention, for it helps to clarify any confusion that may exist in one's own thinking. When there is purposive interest, there is also frankness and comradeship among the teachers, and antagonism can never arise between them; but if that interest is lacking, though superficially they may co-operate for their mutual advantage, there will always be conflict and enmity.	कठिनाइयों और गलत-फहमियों पर उन लोगों को हमेशा ही चर्चा करते रहना चाहिए जो सामूहिक प्रयोजन के किसी काम को मिलकर कर रहे हैं, क्योंकि इससे विचारों में होने वाली भ्रांतियों को दूर करने में सहायता मिलती है। जब अभिरुचि सप्रयोजन होती है तब अध्यापकों में स्पष्टवादिता और मैत्री भी आ जाती है और उनके बीच कभी वैमनस्य नहीं उत्पन्न हो सकता; परंतु यदि उस अभिरुचि का अभाव है, तो चाहे ऊपर से वे परस्पर लाभ के लिए सहयोग करते हों, द्वंद्व और बैर-भाव सदा बना ही रहेगा।
There may be, of course, other factors that are causing friction among the members of the staff. One teacher may be overworked, another may have personal or family worries, and perhaps still others do not feel deeply interested in what they are doing. Surely, all these problems can be thrashed out at the teachers' meeting, for mutual interest makes for cooperation. It is obvious that nothing vital can be created if a few do everything and the rest sit back.	निस्संदेह दूसरे भी अनेक कारण हैं जो स्टाफ के सदस्यों में संघर्ष का कारण बन सकते हैं। ऐसा हो सकता है कि कोई अध्यापक कार्य-बोझिल हो, दूसरे की व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक समस्याएँ हो सकती हैं और ऐसे भी लोग हो सकते हैं जिनकी उस काम में कोई गहरी रुचि न हो जिसे वे कर रहे हैं। निश्चय ही, इन सभी समस्याओं को बैठक में स्पष्ट किया जा सकता है, क्योंकि पारस्परिक रुचि सहयोग उत्पन्न करती है। यह स्पष्ट है कि यदि कुछ ही लोग सब काम करें और शेष बैठे रहें तो कुछ भी जीवंत सृजन संभव नहीं हो सकेगा।
Equal distribution of work gives leisure to all, and each one must obviously have a certain amount of leisure. An overworked teacher becomes a problem to himself and to others. If one is under too great a strain, one is apt to become lethargic, indolent, and especially so if one is doing something which is not to one's liking.	काम के समान वितरण से सभी को फुरसत का वक्त मिलता है, और यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ मात्रा में फुरसत मिलनी चाहिए। कार्य से बोझिल अध्यापक स्वयं अपने लिए भी समस्या होता है तथा दूसरों के लिए भी। यदि किसी व्यक्ति पर कार्य का अत्यधिक बोझ है, तो स्वाभाविक है कि वह सुस्त एवं

Recuperation is not possible if there is constant activity, physical or mental; but this question of leisure can be settled in a friendly manner acceptable to all.	कार्यविमुख हो जाएगा, विशेषरूप से उस अवस्था में जबकि वह ऐसा कोई काम कर रहा है जिसमें रुचि नहीं है। यदि शारीरिक अथवा मानसिक कोई ऐसा कार्य है जिसको निरन्तर करना पड़ रहा है तब थकान से छुटकारा पाना संभव नहीं; परंतु फ़ुरसत के घंटों का यह प्रश्न मैत्रीपूर्ण भाव से इस प्रकार तय किया जा सकता है कि वह सब को स्वीकार्य हो।
What constitutes leisure differs with each individual. To some who are greatly interested in their work, that work itself is leisure; the very action of interest, such as study, is a form of relaxation. To others, leisure may be a withdrawal into seclusion.	फ़ुरसत किसे कहना चाहिए इसके बारे में हर व्यक्ति का अपना नज़रिया रहता है। अपने कार्य में बहुत अभिरुचि रखने वाले लोगों को वह कार्य ही अपने आप में विश्राम होता है; अभिरुचि का कार्य, जैसे अध्ययन, स्वयं ही विश्रांति का एक रूप है। दूसरे ऐसे भी लोग हैं जिन्हें विश्रांति तभी मिलती है जब वे एकांत में चले जाते हैं।
If the educator is to have a certain amount of time to himself, he must be responsible only for the number of students that he can easily cope with. A direct and vital relationship between teacher and student is almost impossible when the teacher is weighed down by large and unmanageable numbers.	शिक्षक के पास अपने लिए भी कुछ समय होना यदि आवश्यक है तो उसके ऊपर केवल उतने ही छात्रों का दायित्व होना चाहिए जिनको वह आसानी से सँभाल सके। जब अध्यापक के ऊपर बड़ी संख्या में छात्रों कां दायित्व होता है और वह उन्हें संभाल नहीं सकता, तब अध्यापक और छात्र के बीच एक साक्षात् एवं जीवंत संबंध लगभग असंभव हो जाता है
This is still another reason why schools should be kept small. It is obviously important to have a very limited number of students in a class, so that the educator can give his full attention to each one. When the group is too large he cannot do this, and then punishment and reward become a convenient way of enforcing discipline.	यह भी एक कारण है जिसकी वजह से विद्यालय को छोटा रखना चाहिए। स्पष्टतया यह महत्त्व की बात है कि एक कक्षा में, एक सीमित संख्या में छात्रों को रखा जाए, जिससे कि शिक्षक प्रत्येक छात्र पर पूरा ध्यान दे सके। जब छात्र-समूह बड़ा होता है तो उसके लिए ऐसा संभव नहीं होता और उस अवस्था में अनुशासन बनाए रखने का सरल एवं सुविधाजनक तरीका दण्ड एवं पुरस्कार ही रह जाता है।
The right kind of **education** is not possible en masse. To study each child requires patience, alertness and intelligence. To observe the child's	सही शिक्षा एक बड़े समूह में नहीं दी जा सकती। प्रत्येक बालक के अध्ययन के लिए धैर्य, सावधानी तथा प्रज्ञा की आवश्यकता होती है। बालक की प्रवृत्तियों

tendencies, his aptitudes, his temperament, to understand his difficulties, to take into account his heredity and parental influence and not merely regard him as belonging to a certain category - all this calls for a swift and pliable mind, untrammelled by any system or prejudice. It calls for skill, intense interest and, above all, a sense of affection; and to produce educators endowed with these qualities is one of our major problems today.	का, उसकी अभिरुचियों का एवं उसके स्वभाव का निरीक्षण, उसकी कठिनाइयों को समझना, उसके पैतृक प्रभाव को ध्यान में रखना, न कि उसे किसी विशेष वर्ग–कोटि के ही अंदर रखना––इस सबके लिए तेज़ और लचीले मन की आवश्यकता होती है जो किसी व्यवस्था–प्रणाली अथवा पूर्वाग्रह से बाधित नहीं हो। उसके लिए कुशलता की, तीव्र अभिरुचि की और सबसे अधिक, प्रेम–भावना की आवश्यकता होती है; और ऐसे गुणों से युक्त शिक्षकों को तैयार करना आज की प्रमुख समस्याओं में से एक है।
The spirit of individual freedom and intelligence should pervade the whole school at all times. This can hardly be left to chance, and the casual mention at odd moments of the words"freedom" and "intelligence" has very little significance.	पूरे विद्यालय को प्रत्येक समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा प्रज्ञा के वातावरण से परिपूर्ण रहना चाहिए। इसे केवल संयोग पर छोड़ देना उचित नहीं है; और न खाली समय में 'स्वतंत्रता' तथा 'प्रज्ञा' जैसे शब्दों का लापरवाही से उल्लेख करने का ही कोई अर्थ होता है।
It is particularly important that students and teachers meet regularly to discuss all matters relating to the well-being of the whole group. A student council should be formed, on which the teachers are represented, which can thrash out all the problems of discipline, cleanliness, food and so on, and which can also help to guide any students who may be somewhat self-indulgent, indifferent or obstinate.	यह विशेषरूप से महत्त्वपूर्ण है कि छात्र एवं अध्यापक पूरे समूह के हित से संबंधित विषयों पर विचार करने के लिए नियमित रूप से मिलें तथा चर्चा करें। एक छात्र–समिति को संगठित किया जाना चाहिए जिसमें अध्यापकों का प्रतिनिधित्व हो। इस समिति को अनुशासन, सफाई, भोजन आदि सभी समस्याओं पर पूरी तौर से विचार करना चाहिए। इसे अपने में लिप्त, उदासीन अथवा ज़िद्दी छात्रों के मार्गदर्शन में भी सहायता करनी चाहिए।
The students should choose from among themselves those who are to be responsible for the carrying out of decisions and for helping with the general supervision. After all, self-government in the school is a preparation for self-government in later life. If, while he is at school, the child learns to be considerate, impersonal and intelligent in any discussion pertaining to his daily problems, when	अपने में से ही छात्रों को ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए जो किए गये निर्णयों को लागू करने के लिए ज़िम्मेदार हों तथा जो सामान्य देखरेख में सहायता करें। आखिर स्कूल का स्वशासन ही बाद के जीवन में आत्मानुशासन की तैयारी है। यदि स्कूल के समय बालक अपनी दैनिक समस्याओं से संबंधित विचार–विमर्श में दूसरों का ध्यान रखना, निष्पक्ष तथा विवेकपूर्ण होना सीख लेता है, तो बड़ा

he is older he will be able to meet effectively and dispassionately the greater and more complex trials of life. The school should encourage the children to understand one another's difficulties and peculiarities, moods and tempers; for then, as they grow up, they will be more thoughtful and patient in their relationship with others.	होने पर जीवन की अधिक व्यापक तथा अधिक जटिल परीक्षाओं का सामना और अधिक प्रभावशाली तथा धैर्यपूर्ण ढंग से करने में वह समर्थ होगा। यह आवश्यक है कि एक-दूसरे की कठिनाइयों और विशेषताओं को, मनोदशाओं और व्यक्तिगत स्वभावों को समझने में विद्यालय बालकों की सहायता करे, क्योंकि तभी जैसे-जैसे वे बड़े होंगे वे दूसरों के साथ अपने संबंध में अधिक विचारवान और धैर्यवान होंगे।
This same spirit of freedom and intelligence should be evident also in the child's studies. If he is to be creative and not merely an automaton, the student should not be encouraged to accept formulas and conclusions. Even in the study of a science, one should reason with him, helping him to see the problem in its entirety and to use his own judgment.	बालक के अध्ययन में भी स्वतंत्रता तथा प्रज्ञा की यही भावना दिखाई पड़नी चाहिए। यदि उसे सृजनशील बनना है, न कि केवल एक यंत्र मात्र, तो बने-बनाए फार्मूलों और निष्कर्षों को स्वीकार करने के लिए छात्र को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि किसी भी विज्ञान के अध्ययन में भी उसके साथ तर्क-वितर्क होना चाहिए जिससे वह समस्या को पूर्ण रूप से समझ सके और स्वयं अपनी समझ-बूझ का उपयोग कर सके।
But what about guidance? Should there be no guidance whatsoever? The answer to this question depends on what is meant by `guidance.' If in their hearts the teachers have put away all fear and all desire for domination, then they can help the student towards creative understanding and freedom; but if there is a conscious or unconscious desire to guide him towards a particular goal, then obviously they are hindering his development. Guidance towards a particular objective, whether created by oneself or imposed by another, impairs creativeness.	प्रश्न उठता है कि तब मार्गदर्शन का क्या होगा? क्या किसी प्रकार के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है? इस प्रश्न का उत्तर इस पर निर्भर करता है कि ''मार्गदर्शन'' का क्या अर्थ है। यदि अपने हृदय से अध्यापकों ने सभी प्रकार के भय को, प्रभुत्व तथा सारी वासना को निकाल दिया है तो वे सृजनशील अवबोध तथा स्वतंत्रता की ओर बढ़ने में छात्र की सहायता कर सकते हैं; परंतु यदि उनमें किसी विशेष लक्ष्य की ओर छात्र को ले जाने की कोई सचेत अथवा प्रच्छन्न इच्छा है तो स्पष्ट है कि वे उसके विकास में बाधा डाल रहे हैं। किसी विशेष लक्ष्य के लिए मार्गदर्शन, चाहे वह लक्ष्य स्वयं निर्धारित किया गया हो अथवा दूसरों के द्वारा थोपा गया हो, सृजनशीलता को हानि पहुंचाता है।
If the educator is concerned with the freedom of the individual, and not with his own preconceptions, he will help	यदि शिक्षक का संबंध व्यक्ति की स्वतंत्रता से है, न कि स्वयं अपनी पूर्व-धारणाओं से, तो वह बालक को प्रोत्साहित करेगा

the child to discover that freedom by encouraging him to understand his own environment, his own temperament, his religious and family background, with all the influences and effects they can possibly have on him. If there is love and freedom in the hearts of the teachers themselves, they will approach each student mindful of his needs and difficulties; and then they will not be mere automatons, operating according to methods and formulas, but spontaneous human beings, ever alert and watchful.	कि वह स्वयं अपने परिवेश को, अपने स्वभाव को, अपने धर्म तथा अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि को एवं इन सबके प्रभावों और परिणामों को समझे। स्वतंत्रता की खोज में इस प्रकार का प्रोत्साहन बालक के लिए सहायक होगा। यदि स्वयं अध्यापकों के हृदय में प्रेम और स्वतंत्रता है तो वे प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं और कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए उसकी देखभाल करेंगे; और तब वे उस यंत्र के समान नहीं होंगे जो किसी पद्धति और सूत्र के अनुसार काम करता है; वे सहज मनुष्य होंगे जो सदा सचेत एवं सावधान रहते हैं।
The right kind of **education** should also help the student to discover what he is most interested in. If he does not find his true vocation, all his life will seem wasted; he will feel frustrated doing something which he does not want to do. If he wants to be an artist and instead becomes a clerk in some office, he will spend his life grumbling and pining away. So it is important for each one to find out what he wants to do, and then to see if it is worth doing. A boy may want to be a soldier; but before he takes up soldiering, he should be helped to discover whether the military vocation is beneficial to the whole of mankind.	छात्र किस वस्तु में सर्वाधिक रुचि रखता है, सही शिक्षा को इसका पता लगाने में उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि वह अपनी सच्ची कर्मभूमि नहीं खोज लेता तो उसे अपना समस्त जीवन व्यर्थ प्रतीत होगा; ऐसा काम करने में जिसे वह नहीं करना चाहता, उसे कुण्ठा का अनुभव होगा। यदि वह एक कलाकार बनना चाहता है और यदि उसके स्थान पर वह किसी आफिस में क्लर्क बन जाता है तो वह अपना सारा जीवन शिकायत करने में तथा कुढ़ने में बिता देगा। इसलिए यह पता लगाना हर किसी के लिए आवश्यक है कि वह क्या करना चाहता है और फिर यह देखना चाहिए कि वह कार्य क्या करने योग्य है? एक लड़का सैनिक बनना चाहता है; परंतु इसके पहले कि वह सैनिक बनने का प्रशिक्षण ले उसे यह पता लगाने में मदद करनी चाहिए कि क्या समस्त मानव जाति के लिए सैन्य-वृत्ति लाभदायक है?
Right **education** should help the student, not only to develop his capacities, but to understand his own highest interest. In a world torn by wars, destruction and misery, one must be able to build a new social order and bring about a different way of living.	केवल अपनी क्षमताओं के विकास में ही नहीं वरन अपनी चरम अभिरुचियों को समझने में भी सम्यक् शिक्षा को छात्र की सहायता करनी चाहिए। युद्ध, विनाश और कष्ट से पीड़ित इस विश्व में यह आवश्यक है कि व्यक्ति में एक नई समाज-व्यवस्था का निर्माण करने की तथा एक भिन्न प्रकार के जीवन को विकसित

	करने की क्षमता हो।
The responsibility for building a peaceful and enlightened society rests chiefly with the educator, and it is obvious, without becoming emotionally stirred up about it, that he has a very great opportunity to help in achieving that social transformation. The right kind of **education** does not depend on the regulations of any government or the methods of any particular system; it lies in our own hands, in the hands of the parents and the teachers.	एक शांतिपूर्ण एवं प्रबुद्ध समाज का निर्माण करने की ज़िम्मेदारी मुख्यतः शिक्षक की ही है और उसके विषय में बिना किसी आवेशपूर्ण उत्तेजना के यह कहा जा सकता है कि ऐसे सामाजिक परिवर्तन को लाने में सहायता करने का उसे एक बहुत बड़ा अवसर मिला है। उचित प्रकार की शिक्षा न तो किसी सरकार के कानूनों पर निर्भर करती है, न किसी विशेष व्यवस्था–प्रणाली पर; वह हमारे हाथों में है, अभिभावकों और अध्यापकों के हाथों में है।
If parents really cared for their children, they would build a new society; but fundamentally most parents do not care, and so they have no time for this most urgent problem. They have time for making money, for amusements, for rituals and worship, but no time to consider what is the right kind of **education** for their children. This is a fact that the majority of people do not want to face. To face it might mean that they would have to give up their amusements and distractions, and certainly they are not willing to do that. So they send their children off to schools where the teacher cares no more for them than they do. Why should he care? Teaching is merely a job to him, a way of earning money.	यदि अभिभावकों को वास्तव में अपने बालकों की चिंता होगी तो वे एक नये समाज का निर्माण करेंगे; परंतु मौलिक बात यह है कि अधिकांश अभिभावकों को उनकी कोई चिंता है ही नहीं। और इसीलिए उनके पास इस अत्यधिक आवश्यक समस्या के लिए समय ही नहीं है। उनके पास धन कमाने के लिए, मनोरंजनों के लिए, कर्मकाण्डों तथा उपासना के लिए तो समय है, परंतु यह सोचने के लिए समय नहीं है कि उनके बच्चों के लिए शिक्षा का उचित रूप क्या हो। यह एक ऐसा तथ्य है जिसका अधिकांश व्यक्ति सामना नहीं करना चाहते। उसका सामना करने का अर्थ हो सकता है कि उन्हें अपनी मौज–मस्ती और अपने मनोरंजनों को छोड़ना पड़े और निश्चय ही वे ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए वे अपने बच्चों को घर से बाहर स्कूल भेज देते हैं, जहाँ अध्यापक भी उनकी उसी तरह फ़िक्र नहीं करता जिस तरह कि वे स्वयं। और वह फ़िक्र करे भी क्यों? अध्यापन उसके लिए केवल एक व्यवसाय है, मात्र धनोपार्जन का एक तरीका।
The world we have created is so superficial, so artificial, so ugly if one looks behind the curtain; and we decorate the curtain, hoping that everything will somehow come right.	यदि हम पर्दे को हटाकर देखें तो जो संसार हमने बनाया है वह बड़ा सतही, बड़ा नकली और बड़ा कुरूप है; सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा ऐसी उम्मीद लेकर उस पर्दे की सजावट करते हैं।

Most people are unfortunately not very earnest about life except, perhaps, when it comes to making money, gaining power, or pursuing sexual excitement. They do not want to face the other complexities of life, and that is why, when their children grow up, they are as immature and unintegrated as their parents, constantly battling with themselves and with the world.	दुर्भाग्य से अधिकांश व्यक्ति जीवन के विषय में तभी उत्साह दिखाते हैं जब उन्हें धन अर्जित करना होता है, शक्ति प्राप्त करनी होती है अथवा कामोत्तेजनाओं को संतुष्ट करना होता है। वे जीवन की दूसरी जटिल समस्याओं का सामना नहीं करना चाहते और यही कारण है कि जब उनके बच्चे बड़े होते हैं, तो वे उतने ही अपरिपक्व तथा खंडित होते हैं जितने कि उनके अभिभावक, और इस प्रकार निरन्तर अपने से तथा संसार से संघर्ष करते रहते हैं।
We say so easily that we love our children; but is there love in our hearts when we accept the existing social conditions, when we do not want to bring about a fundamental transformation in this destructive society? And as long as we look to the specialists to **educate** our children, this confusion and misery will continue; for the specialists, being concerned with the part and not with the whole, are themselves unintegrated.	बड़ी आसानी से हम कह देते हैं कि हम अपने बच्चों से प्रेम करते हैं; परंतु जब हम प्रचलित सामाजिक परिस्थितियों को स्वीकार कर लेते हैं, जब इस विनाशकारी समाज में किसी मौलिक परिवर्तन के लिए हम तैयार नहीं होते, तो क्या हमारे हृदय में प्रेम होता है? और जब तक अपने बच्चों की शिक्षा के लिए हम विशेषज्ञों की ओर देखते रहेंगे, तब तक यह भ्रांति और यह कष्ट बने रहेंगे; क्योंकि विशेषज्ञ, जिनका सम्बंध केवल अंश से होता है न कि सम्पूर्ण से, स्वयं ही खंडित होते हैं।
Instead of being the most honoured and responsible occupation, **education** is now considered slightingly, and most educators are fixed in a routine. They are not really concerned with integration and intelligence, but with the imparting of information; and a man who merely imparts information with the world crashing about him is not an educator.	शिक्षा को सर्वाधिक सम्मानजनक तथा दायित्वपूर्ण वृत्ति मानने के स्थान पर उसे अब हीन दृष्टि से देखा जा रहा है और अधिकांश शिक्षक बनी–बनाई दिनचर्या में ही जकड़े हुए हैं। समन्वय तथा प्रज्ञा से उनका कोई वास्तविक संबंध नहीं। उनका काम जानकारी देना मात्र है; और चारों ओर के संसार को खण्ड–खण्ड होता देखते हुए भी जो व्यक्ति केवल जानकारी देता है, वह शिक्षक नहीं है।
An educator is not merely a giver of information; he is one who points the way to wisdom, to truth. Truth is far more important than the teacher. The search for truth is religion, and truth is of no country, of no creed, it is not to be found in any temple, church or	शिक्षक का कार्य जानकारी देना मात्र नहीं हैं। शिक्षक वह है जो प्रज्ञा एवं सत्य के लिए मार्ग–निर्देशन करता है। सत्य वस्तुतः अध्यापक से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। सत्य की खोज ही धर्म है; सत्य किसी देश या सिद्धांत का नहीं होता; वह मंदिर, चर्च तथा मस्जिद में नहीं मिलता। सत्य की

mosque. Without the search for truth, society soon decays. To create a new society, each one of us has to be a true teacher, which means that we have to be both the pupil and the master; we have to **educate** ourselves.	खोज के अभाव में समाज का शीघ्र ही पतन हो जाता है। एक नवीन समाज की रचना के लिए हम में से प्रत्येक को एक सच्चा अध्यापक बनना पड़ेगा, जिसका अर्थ है कि हमको शिष्य और गुरु दोनों ही बनना होगा; हमें स्वयं अपने को शिक्षित करना होगा।
If a new social order is to be established, those who teach merely to earn a salary can obviously have no place as teachers. To regard **education** as a means of livelihood is to exploit the children for one's own advantage. In an enlightened society, teachers will have no concern for their own welfare, and the community will provide for their needs.	यदि एक नवीन समाज की व्यवस्था स्थापित करनी है तो शिक्षक के रूप में उन व्यक्तियों का कोई स्थान न होगा, जो केवल वेतन कमाने के लिए पढ़ाते हैं। शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन समझना, बच्चों का स्वयं अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करना है। एक प्रबुद्ध समाज में शिक्षकों को अपने कल्याण की चिंता नहीं करनी होती, समाज उनकी आवश्यकताओं की देख–भाल करेगा।
The true teacher is not he who has built up an impressive educational organization, nor he who is an instrument of the politicians, nor he who is bound to an ideal, a belief or a country. The true teacher is inwardly rich and therefore asks nothing for himself; he is not ambitious and seeks no power in any form; he does not use teaching as a means of acquiring position or authority, and therefore he is free from the compulsion of society and the control of governments. Such teachers have the primary place in an enlightened civilization, for true culture is founded, not on the engineers and technicians, but on the educators.	एक सच्चा अध्यापक वह नहीं है जिसने एक प्रभावशाली शिक्षण संस्था का निर्माण किया है या जो राजनीतिज्ञों का एक उपकरण है, और न तो वह जो किसी आदर्श, विश्वास अथवा देश से बँधा है। सच्चा अध्यापक अंतर में समृद्ध होता है, अतः अपने लिए कुछ नहीं चाहता; वह महत्त्वाकांक्षी नहीं होता, इसलिए वह किसी भी रूप में सत्ता की चाह नहीं करता। वह अपने अध्यापन को पद अथवा सत्ताधिकार प्राप्त करने का साधन नहीं बनाता और इसीलिए समाज की बाध्यता से तथा सरकारों के नियंत्रण से वह मुक्त होता है। एक प्रबुद्ध सभ्यता में ऐसे अध्यापकों का आधारभूत स्थान होता है, क्योंकि सच्ची संस्कृति इंजीनियरों और तकनीकी विशेषज्ञों पर नहीं, बल्कि शिक्षकों पर आधारित होती है।
Chapter 6	
J. Krishnamurti Education and the Significance of Life 'Parents and Teachers'	**अभिभावक और अध्यापक**

THE right kind of **education** begins with the educator, who must understand himself and be free from established patterns of thought; for what he is, that he imparts. If he has not been rightly **educated**, what can he teach except the same mechanical knowledge on which he himself has been brought up? The problem, therefore, is not the child, but the parent and the teacher; the problem is to **educate** the educator.	सही शिक्षा शिक्षक से ही शुरू होती है। शिक्षक अपने को समझकर विचार के स्थापित प्रारूपों से मुक्त होना चाहिए; क्योंकि जो कुछ वह स्वयं होता है वही वह दूसरों को देता है। यदि वह स्वयं उचित रूप से शिक्षित नहीं हुआ है तो वह उस यांत्रिक ज्ञान के अतिरिक्त, जिसके आधार पर स्वयं उसका निर्माण हुआ है, दूसरों को क्या दे सकता है? अतः समस्या बालक नहीं वरन् अभिभावक और अध्यापक है; समस्या शिक्षक को शिक्षित करने की है।
If we who are the educators do not understand ourselves, if we do not understand our relationship with the child but merely stuff him with information and make him pass examinations, how can we possibly bring about a new kind of **education**? The pupil is there to be guided and helped; but if the guide, the helper is himself confused and narrow, nationalistic and theory-ridden, then naturally his pupil will be what he is, and **education** becomes a source of further confusion and strife.	यदि हम शिक्षक ही अपने को नहीं समझते, यदि हम बालक के साथ अपने संबंध को नहीं समझते, और उसे केवल जानकारियों से भरते रहते हैं तथा परीक्षाएँ उत्तीर्ण कराते रहते हैं, तो हम कैसे एक नये प्रकार की शिक्षा ला सकते हैं? छात्र इसीलिए होता है कि उसका मार्गदर्शन किया जाए और उसकी सहायता की जाए; परंतु यदि मार्गदर्शक अथवा सहायक स्वयं ही भ्रांत है, संकीर्ण है, राष्ट्रवादी है तथा सिद्धांतों से ग्रसित है तो स्वाभाविक है कि उसका शिष्य भी वही होगा जो वह है। उस अवस्था में शिक्षा और अधिक भ्रांति तथा कलह का कारण बनेगी।
If we see the truth of this, we will realize how important it is that we begin to **educate** ourselves rightly. To be concerned with our own re-**education** is far more necessary than to worry about the future well-being and security of the child.	यदि हमें इस सत्य का साक्षात्कार हो जाए तब हम अनुभव करेंगे कि हमें अपने को उचित प्रकार से शिक्षित करना कितना महत्त्वपूर्ण है। खुद को नए सिरे से शिक्षित करने की चिंता करना बालक के भविष्य के कल्याण की और उसकी सुरक्षा की चिंता से कही अधिक आवश्यक है।
To **educate** the educator - that is, to have him understand himself - is one of the most difficult undertakings, because most of us are already crystallized within a system of thought or a pattern	शिक्षक को शिक्षित करना – अर्थात उसे स्वयं को समझने के लिए तैयार करना – एक सर्वाधिक कठिन कार्य है, क्योंकि हममें से अधिकांश व्यक्ति किसी विचार–प्रणाली में अथवा कर्म के ढाँचे में

of action; we have already given ourselves over to some ideology, to a religion, or to a particular standard of conduct. That is why we teach the child what to think and not how to think.	पहले ही ढाले जा चुके हैं; हमने पहले ही अपने को किसी विचार-प्रणाली को अथवा किसी धर्म को अथवा आचार-व्यवहार के किसी विशेष मापदण्ड के प्रति समर्पित कर दिया है। यही कारण है कि हम बालक को सिखाते हैं कि वह क्या सोचे, न कि वह कैसे सोचे।
Moreover, parents and teachers are largely occupied with their own conflicts and sorrows. Rich or poor, most parents are absorbed in their personal worries and trials. They are not gravely concerned about the present social and moral deterioration, but only desire that their children shall be equipped to get on in the world. They are anxious about the future of their children, eager to have them **educated** to hold secure positions, or to marry well.	इसके अतिरिक्त अभिभावक और अध्यापक अधिकांश रूप से अपने स्वयं के द्वंद्वों और परेशानियों में व्यस्त रहते हैं। धनी हों अथवा निर्धन, अधिकांश अभिभावक अपनी व्यक्तिगत चिंताओं और मुसीबतों में खोए रहते हैं। उन्हें वर्तमान सामाजिक अथवा नैतिक पतन की कोई गंभीर चिंता नहीं होती, उनकी केवल यह चिंता होती है कि उनके बच्चे इस योग्य बनें कि संसार में सफलतापूर्वक जी सकें। वे अपने बच्चों के भविष्य के बारे में चिंतित होते हैं; वे इसके लिए उत्सुक होते हैं कि उनके बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे कि वे सुरक्षित पद प्राप्त कर सकें अथवा भली प्रकार विवाह कर सके।
Contrary to what is generally believed, most parents do not love their children, though they talk of loving them. If parents really loved their children, there would be no emphasis laid on the family and the nation as opposed to the whole, which creates social and racial divisions between men and brings about war and starvation. It is really extraordinary that, while people are rigorously trained to be lawyers or doctors, they may become parents without undergoing any training whatsoever to fit them for this all-important task.	आम धारणा के विपरीत अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों से प्रेम नहीं करते, यद्यपि उनसे प्रेम करने की बात वे कहते रहते हैं। यदि अभिभावक वास्तव में अपने बच्चों से प्रेम करते तो संपूर्ण के विरोध में केवल परिवार और राष्ट्र पर बल नहीं दिया जाता। ऐसा करना मनुष्यों के बीच में सामाजिक और जातीय विभाजन उत्पन्न करता है तथा युद्ध और भूख की पीड़ा भी पैदा करता है। यह सचमुच बड़ा आश्चर्यजनक है कि वकील अथवा डॉक्टर होने के लिए व्यक्तियों को बड़े कठोर प्रशिक्षण से गुज़रना होता है जबकि अभिभावक बनने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए उन्हें किसी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं लेना पड़ता।
More often than not, the family, with its separate tendencies, encourages the general process of isolation, thereby becoming a deteriorating factor in society. it is only when there is love	अधिकतर यही होता है कि परिवार अपनी अलग प्रवृत्तियों के कारण पृथक्ता की सामान्य प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है और इस प्रकार समाज के अधःपतन का कारण बनता है। जब प्रेम और बोध होता

ind understanding that the walls of isolation are broken down, and then the family is no longer a closed circle, it is neither a prison nor a refuge; then the parents are in communion, not only with their children, but also with their neighbours.	है तभी पृथक्ता की दीवारें टूटती हैं और तभी परिवार एक बंद घेरा नहीं रह जाता, तब वह न तो एक जेल रहता है और न शरणस्थल; उस अवस्था में अभिभावकों का केवल अपने बच्चों से ही नहीं वरन अपने पड़ोसियों से भी संवाद रहता है।
Being absorbed in their own problems, many parents shift to the teacher the responsibility for the well-being of their children; and then it is important that the educator help in the **education** of the parents as well.	स्वयं अपनी समस्याओं में व्यस्त रहने के कारण अनेक अभिभावक अपने बच्चों के कल्याण का दायित्व अध्यापक को सुपुर्द कर देते हैं, और तब यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक अभिभावकों की शिक्षा में सहायता करें।
He must talk to them, explaining that the confused state of the world mirrors their own individual confusion. He must point out that scientific progress in itself cannot bring about a radical change in existing values; that technical training, which is now called **education**, has not given man freedom or made him any happier; and that to condition the student to accept the present environment is not conducive to intelligence. He must tell them what he is attempting to do for their child, and how he is setting about it. He has to awaken the parents' confidence, not by assuming the authority of a specialist dealing with ignorant laymen, but by talking over with them the child's temperament, difficulties, aptitudes and so on.	उसे उनसे बात करनी चाहिए और उन्हें समझाना चाहिए कि विश्व की भ्रांत अवस्था स्वयं अपनी व्यक्तिगत भ्रांतियों का प्रतिबिंब मात्र है। उसे यह बताना चाहिए कि वैज्ञानिक प्रगति अपने आप ही प्रचलित मूल्यों में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं उत्पन्न करेगी, कि तकनीकी प्रशिक्षण ने, जिसे आज शिक्षा कहा जाता है, मनुष्य को मुक्ति नहीं दी और न ही उसे और अधिक सुखी बनाया है, और यह भी बताना चाहिए कि वर्तमान परिवेश को स्वीकार करने के लिए बालक को संस्कारबद्ध करना प्रज्ञा के विकास के अनुकूल न होगा। शिक्षक द्वारा अभिभावकों को यह बता दिया जाना चाहिए कि वह उनके बालक के लिए क्या करने का प्रयत्न कर रहा है तथा अपने कार्य को वह कैसे आरंभ कर रहा है। उसे अभिभावकों के विश्वास को जगाना होगा, अज्ञानी जनसाधारण से व्यवहार करने वाले विशेषज्ञ का चोगा पहनकर नहीं, बल्कि बालक के स्वभाव, उसकी कठिनाइयों, अभिवृत्तियों आदि के विषय में उनसे बातचीत करके।
If the teacher takes a real interest in the child as an individual, the parents will have confidence in him. In this process, the teacher is **educating** the parents as well as himself, while	यदि अध्यापक बालक में व्यक्तिगत रूप से वास्तविक रुचि लेता है तो अभिभावकों को उस पर विश्वास होगा। इस प्रक्रिया में अध्यापक अभिभावकों को तथा स्वयं अपने को शिक्षित कर रहा है, वह

learning from them in return. Right **education**is a mutual task demanding patience, consideration and affection. Enlightened teachers in an enlightened community could work out this problem of how to bring up children, and experiments along these lines should be made on a small scale by interested teachers and thoughtful parents.	अभिभावकों से भी बदले में कुछ सीख रहा है। सम्यक् शिक्षा एक पारस्परिक कार्य है जिसके लिए धैर्य, सहानुभूति तथा प्रेम की आवश्यकता होती है। एक प्रबुद्ध समाज में प्रबुद्ध अध्यापकों को इस समस्या पर विचार करना चाहिए कि बच्चों को कैसे विकसित किया जाए, और रुचि रखने वाले अध्यापकों तथा विचारवान अभिभावकों को उन्हीं दिशाओं में छोटे स्तर पर प्रयोग करना चाहिए।
Do parents ever ask themselves why they have children? Do they have children to perpetuate their name, to carry on their property? Do they want children merely for the sake of their own delight, to satisfy their own emotional needs? If so, then the children become a mere projection of the desires and fears of their parents.	क्या कभी अभिभावकों ने अपने से यह प्रश्न किया है कि उन्हें बच्चे क्यों चाहिए? क्या वे अपने नाम को बनाए रखने के लिए, अपनी संपत्ति सुरक्षित रखने के लिए बच्चे चाहते हैं? क्या वे स्वयं अपने आनंद के लिए, अपनी भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बच्चे चाहते हैं? यदि ऐसा है तो बच्चे अपने अभिभावकों की इच्छाओं और आशंकाओं के प्रक्षेपण मात्र हैं।
Can parents claim to love their children when, by **educating** them wrongly, they foster envy, enmity and ambition? Is it love that stimulates the national and racial antagonisms which lead to war, destruction and utter misery, that sets man against man in the name of religions and ideologies?	क्या अभिभावक यह दावा कर सकते हैं कि वे अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, जबकि दोषपूर्ण शिक्षा देकर वे उनमें द्वेष, बैर-भाव तथा महत्त्वाकांक्षा का पोषण कर रहे हैं? क्या यह प्रेम है जो ऐसे राष्ट्रीय और जातीय संघर्ष उत्प्रेरित करता है जिनसे युद्ध, विनाश और अपार कष्ट पैदा होते हैं, जो धर्मों और विचार-प्रणालियों के नाम पर मनुष्य को मनुष्य के विरोध में खड़ा कर देता है?
Many parents encourage the child in the ways of conflict and sorrow, not only by allowing him to be submitted to the wrong kind of **education**, but by the manner in which they conduct their own lives; and then, when the child grows up and suffers, they pray for him or find excuses for his behaviour. The suffering of parents for their children is a form of possessive self-pity which exists only when there is no love.	बालक को दूषित शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति देकर नहीं वरन स्वयं अपनी जीवन-पद्धति के द्वारा भी अनेक अभिभावक उसे द्वंद्व और दुख के मार्गों पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं; और यह जब वह बड़ा होता है, कष्ट उठाता है, वे उसके लिए प्रार्थना करते हैं या तो फिर उसके बर्ताव के बहाने ढूँढते हैं। अपने बच्चों के लिए अभिभावकों का कष्ट उठाना एक प्रकार की अधिकार-वृत्ति वाली आत्म-दया है, जिसका अस्तित्व तभी होता है जब प्रेम नहीं होता।

If parents love their children, they will not be nationalistic, they will not identify themselves with any country; for the worship of the State brings on war, which kills or maims their sons. If parents love their children, they will discover what is right relationship to property; for the possessive instinct has given property an enormous and false significance which is destroying the world. If parents love their children, they will not belong to any organized religion; for dogma and belief divide people into conflicting groups, creating antagonism between man and man. If parents love their children, they will do away with envy and strife, and will set about altering fundamentally the structure of present-day society.	यदि अभिभावक अपने बच्चों से प्रेम करते तो वे राष्ट्रवादी नहीं होंगे, वे किसी एक देश से अपना तादात्म्य नहीं रखेंगे क्योंकि राज्य की उपासना युद्ध लाती है जो उनके पुत्रों की हत्या करता है अथवा उन्हें विकलांग बनाता है। यदि अभिभावक अपने बच्चों से प्रेम करते हें तो वे यह भी जानेंगे कि संपत्ति के साथ सही संबंध क्या होता है; क्योंकि परिग्रही प्रवृत्ति ने सम्पत्ति को बहुत अधिक परंतु भ्रामक महत्त्व दे दिया है जो विश्व को नष्ट कर रहा है। यदि अभिभावक अपने बच्चों से प्रेम करते हैं तो वे किसी संगठित धर्म को नहीं मानेंगे; क्योंकि धर्म-मत और विश्वास, लोगों को विरोधी गुटों में विभाजित कर देते हैं, मनुष्य और मनुष्य के बीच संघर्ष उत्पन्न करते हैं। अतः यदि अभिभावक अपने बच्चों से सचमुच प्रेम करते हैं तो वे द्वेष और कलह को त्याग कर वर्तमान समाज की संरचना में मौलिक परिवर्तन करना आरंभ करेंगे।
As long as we want our children to be powerful, to have bigger and better positions, to become more and more successful, there is no love in our hearts; for the worship of success encourages conflict and misery. To love one's children is to be in complete communion with them; it is to see that they have the kind of **education** that will help them to be sensitive, intelligent and integrated.	जब तक हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सत्ता अर्जित करें, ऊँचे और अच्छे पदों को प्राप्त करें, अधिकाधिक सफल हों, तब तक हमारे हृदय में प्रेम नहीं है; क्योंकि सफलता की उपासना द्वंद्व और कष्ट को प्रोत्साहन देती है। अपने बच्चों से प्रेम करने का अर्थ है कि उनके साथ पूर्णतया संवाद में होना, यह देखना कि उनको ऐसी शिक्षा मिल रही है जो उनके लिए संवेदनशील, प्रज्ञावान और समन्वित-अखंडित बनने में सहायक हो।
The first thing a teacher must ask himself, when he decides that he wants to teach, is what exactly he means by teaching. Is he going to teach the usual subjects in the habitual way? Does he want to condition the child to become a cog in the social machine, or help him to be an integrated, creative human being, a threat to false values? And if the educator is to help the student to examine and understand the values and	जब कोई अध्यापक अध्यापन करने का निश्चय कर लेता है तो सबसे पहला प्रश्न, जो उसे अपने से करना चाहिए, यह है कि अध्यापन का ठीक-ठीक अर्थ क्या है? क्या वह सामान्य विषयों को पारंपरिक तरीके से पढ़ाने जा रहा है? क्या वह बालक को सामाजिक यंत्र का एक पुर्जा बनाने के लिए संस्कारबद्ध करना चाहता है अथवा वह चाहता है कि एक समन्वित, सृजनशील मनुष्य बनने में,

influences that surround him and of which he is a part, must he not be aware of them himself? If one is blind, can one help others to cross to the other shore?	मिथ्या मूल्यों के लिए एक खतरा बनने में, वह बालक के लिए सहायक हो? और यदि शिक्षक बालक की सहायता करना चाहता है कि वह उन मूल्यों और उनके प्रभावों को समझे तथा उनकी छान-बीन करे जो उसे चारों ओर से घेरे हुए हैं और जिनका वह एक अंग है, तो क्या यह आवश्यक नहीं कि शिक्षक अपने प्रति जागरूक हो? यदि कोई व्यक्ति अंधा है तो नदी के पार पहुँचने में वह दूसरे की कैसे सहायता कर सकता है?
Surely, the teacher himself must first begin to see. He must be constantly alert, intensely aware of his own thoughts and feelings, aware of the ways in which he is conditioned, aware of his activities and his responses; for out of this watchfulness comes intelligence, and with it a radical transformation in his relationship to people and to things.	निस्संदेह, यह आवश्यक है कि पहले अध्यापक स्वयं समझना आरंभ करे। उसे निरन्तर चौकन्ना रहना चाहिए तथा स्वयं अपने विचारों और भावनाओं के प्रति अत्यंत जागरूक होना चाहिए; उसे उन तरीकों के प्रति जागरूक होना चाहिए जिनसे वह संस्कारबद्ध है; उसे अपनी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। इसी जागरूकता से प्रज्ञा आती है, और इसी से अन्य व्यक्तियों तथा वस्तुओं के साथ उसके संबंध में मौलिक परिवर्तन होता है।
Intelligence has nothing to do with the passing of examinations. Intelligence is the spontaneous perception which makes a man strong and free. To awaken intelligence in a child, we must begin to understand for ourselves what intelligence is; for how can we ask a child to be intelligent if we ourselves remain unintelligent in so many ways? The problem is not only the student's difficulties, but also our own: the cumulative fears, unhappiness and frustrations of which we are not free. In order to help the child to be intelligent, we have to break down within ourselves those hindrances which make us dull and thoughtless.	प्रज्ञा का परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने से कोई संबंध नहीं है। प्रज्ञा वह सहज प्रत्यक्ष दर्शन है जो मनुष्य को शक्तिशाली एवं स्वतंत्र बनाती है। बालक में यदि इस प्रज्ञा को जगाना है तो यह आवश्यक है कि वह स्वयं भी समझे कि प्रज्ञा क्या है; क्योंकि जब स्वयं अपने ही अंदर अनेक प्रकार से उस प्रज्ञा का अभाव रहेगा तो हम बालक को प्रज्ञावान, विवेकपूर्ण होने के लिए कैसे कह सकते हैं? समस्या यहाँ केवल छात्र की कठिनाइयों की ही नहीं है बल्कि स्वयं अपनी भी है : हमारे भीतर भी भय हैं जो निरन्तर संचित होते रहते हैं; हम भी दुखों और कुण्ठाओं से मुक्त नहीं हैं। प्रज्ञावान् बनने में बालक की सहायता करने के लिए हमें अपने अंदर की उन बाधाओं को तोड़ देना है जो हमें मंद और विचारहीन बनाती हैं।
How can we teach children not to seek personal security if we ourselves are	जब हम स्वयं व्यक्तिगत सुरक्षा की खोज में लगे हैं तो हम बालकों को कैसे इसकी

pursuing it? What hope is there for the child if we who are parents and teachers are not entirely vulnerable to life, if we erect protective walls around ourselves? To discover the true significance of this struggle for security, which is causing such chaos in the world, we must begin to awaken our own intelligence by being aware of our psychological processes; we must begin to question all the values which now enclose us.	शिक्षा दे सकते हैं कि वे इसकी खोज न करें? यदि हम अभिभावक तथा अध्यापक ही जीवन के प्रति पूर्णरूप से खुले नहीं हैं और यदि हम ही अपने चारों ओर सुरक्षात्मक दीवारें खड़ी करेंगे तो फ़िर बच्चों के लिए क्या आशा की जा सकती है? सुरक्षा के लिए संघर्ष विश्व में चारों ओर बड़ी दुर्व्यवस्था उत्पन्न कर रहा है और इस संघर्ष का सही महत्त्व जानने के लिए यह आवश्यक है कि अपनी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं के प्रति जागरूक होकर हम स्वयं अपनी प्रज्ञा को जगाएँ। हमें उन सभी मूल्यों के विषय में प्रश्न उठाना आरंभ करना चाहिए जो आज हमें चारों ओर से घेरे है।
We should not continue to fit thoughtlessly into the pattern in which we happen to have been brought up. How can there ever be harmony in the individual and so in society if we do not understand ourselves? Unless the educator understands himself, unless he sees his own conditioned responses and is beginning to free himself from existing values, how can he possibly awaken intelligence in the child? And if he cannot awaken intelligence in the child, then what is his function?	यह उचित नहीं है कि उसी ढाँचे में बिना विचार के हम अपने को फिट करते रहें जिसमें हम पले हैं। यदि हम अपने को नहीं समझते तो कैसे कभी भी व्यक्ति में, और इस प्रकार समाज में, सामंजस्य हो सकता है? जब तक शिक्षक अपने को नहीं समझता, जब तक वह स्वयं अपनी संस्कारबद्ध प्रतिक्रियाओं को नहीं देखता और अपने को प्रचलित मूल्यों से मुक्त करना आरंभ नहीं करता, तब तक वह कैसे बालक में प्रज्ञा जागृत कर सकता है? और यदि वह बालक में प्रज्ञा जागृत नहीं कर सकता तो फिर उसका कार्य ही क्या है?
It is only by understanding the ways of our own thought and feeling that we can truly help the child to be a free human being; and if the educator is vitally concerned with this, he will be keenly aware, not only of the child, but also of himself.	स्वयं अपने विचारों और भावनाओं की प्रतिक्रियाओं को समझकर ही हम एक स्वतंत्र मनुष्य बनने में बालक की वास्तविक सहायता कर सकते हैं, और यदि शिक्षक का इससे कोई गहरा एवं सक्रिय संबंध है, तो उसमें केवल बालक के प्रति ही नहीं, अपने प्रति भी गहरी जागरूकता होगी।
Very few of us observe our own thoughts and feelings. If they are obviously ugly, we do not understand their full significance, but merely try to check them or push them aside. We are not deeply aware of ourselves; our	हममें से बहुत कम ही लोग ऐसे हैं जो स्वयं अपने विचारों और भावनाओं का निरीक्षण करते हैं। यदि वे विचार एवं भावनाएँ हमें कुरूप प्रतीत होती हैं तो हम उनके पूरे तात्पर्य को समझने का प्रयत्न

thoughts and feelings are stereotyped, automatic. We learn a few subjects, gather some information, and then try to pass it on to the children.	नहीं करते; हम या तो उन्हें केवल रोकने का प्रयत्न करते हैं या उनकी उपेक्षा कर देते हैं। हमें स्वयं अपने प्रति गहरी जागरूकता नहीं है। हमारे विचार और हमारी भावनाएँ घिसी-पिटी हैं, यंत्रवत हैं। हम कुछ विषय सीखते हैं, कुछ जानकारी इकट्ठा करते हैं, और फिर वही बच्चों तक पहुँचाते हैं।
But if we are vitally interested, we shall not only try to find out what experiments are being made in **education**in different parts of the world, but we shall want to be very clear about our own approach to this whole question; we shall ask ourselves why and to what purpose we are **educating** the children and ourselves; we shall inquire into the meaning of existence, into the relationship of the individual to society, and so on. Surely, educators must be aware of these problems and try to help the child to discover the truth concerning them, without projecting upon him their own idiosyncrasies and habits of thought.	परंतु यदि हमारी अभिरुचि सक्रिय है तो हम केवल इसका ही पता लगाने का प्रयत्न नहीं करेंगे कि विश्व के विभिन्न भागों में शिक्षा के कौन से प्रयोग हो रहे हैं, वरन शिक्षा की सम्पूर्ण समस्या के ही प्रति स्वयं अपने दृष्टिकोण को बहुत अधिक स्पष्ट करना चाहेंगे; हम अपने से यह प्रश्न करेंगे कि क्यों और किस उद्देश्य से हम बालकों को तथा अपने आप को शिक्षित कर रहे हैं, हम अस्तित्व के अर्थ का, व्यक्ति के समाज के प्रति सम्बंध का अन्वेषण करेंगे। निस्संदेह शिक्षकों को इन समस्याओं के प्रति जागरूक होना चाहिए और बालक के ऊपर स्वयं अपनी विचित्रताओं तथा विचार की आदतों का आरोपण किए बिना उन समस्याओं के सत्य की खोज में बालक की सहायता करनी चाहिए।
Merely to follow a system, whether political or educational, will never solve our many social problems; and it is far more important to understand the manner of our approach to any problem, than to understand the problem itself.	केवल किसी व्यवस्था-प्रणाली का अनुगमन करना, चाहे वह राजनीतिक हो अथवा शैक्षिक, हमारी अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं करेगा, और स्वयं किसी समस्या को समझने की अपेक्षा यह समझना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है कि उस समस्या के प्रति अभिमुख होने का हमारा क्या तरीका है।
If children are to be free from fear - whether of their parents, of their environment, or of God - the educator himself must have no fear. But that is the difficulty: to find teachers who are not themselves the prey of some kind of fear. Fear narrows down thought and limits initiative, and a teacher who is fearful obviously cannot convey the	यदि बालकों को भय से मुक्त होना है – चाहे वह भय अपने अभिभावकों का हो अथवा अपने परिवेश या ईश्वर का हो – तो शिक्षक को स्वयं भी कोई भय नहीं होना चाहिए। परंतु यही कठिनाई है; ऐसे अध्यापकों को खोजना, जो किसी प्रकार के भय के शिकार न हों, आसान नहीं है। भय विचार को संकीर्ण कर देता है तथा

deep significance of being without fear. Like goodness, fear is contagious. If the educator himself is secretly afraid, he will pass that fear on to his students, although its contamination may not be immediately seen.	आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को सीमित करता है, और एक भयभीत अध्यापक भय–मुक्ति की अवस्था के गहरे महत्त्व को नहीं समझा सकता। अच्छाई की तरह भय भी संक्रामक होता है। यदि शिक्षक स्वयं प्रच्छन्न रूप से भयभीत है तो वह उस भय को अपने छात्रों में सम्प्रेषित कर देगा, यद्यपि यह हो सकता है कि संक्रमण तत्काल न दिखाई दे।
Suppose, for example, that a teacher is afraid of public opinion; he sees the absurdity of his fear, and yet cannot go beyond it. What is he to do? He can at least acknowledge it to himself, and can help his students to understand fear by bringing out his own psychological reaction and openly talking it over with them. This honest and sincere approach will greatly encourage the students to be equally open and direct with themselves and with the teacher.	उदाहरणार्थ, मान लीजिए कि एक अध्यापक जनमत से भयभीत है; वह अपने भय की मूर्खता को समझता है और फिर भी उसके परे नहीं जा पाता। तो उसे क्या करना चाहिए? कम–से–कम वह स्वयं अपने से उस भय को स्वीकार तो कर ही सकता है और अपनी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को छात्रों के सामने रखकर तथा उनके विषय में उनसे खुली चर्चा करके भय के स्वरूप को समझने में उनकी सहायता कर सकता है। ईमानदारी तथा सच्चाई का यह दृष्टिकोण छात्रों को बड़ा प्रोत्साहित करेगा और वे भी अपने बीच और अपने अध्यापक के साथ उसी प्रकार से खुले और निश्छल बनेंगे।
To give freedom to the child, the educator himself must be aware of the implications and the full significance of freedom. Example and compulsion in any form do not help to bring about freedom, and it is only in freedom that there can be self-discovery and insight.	बालक को स्वतंत्रता देने के लिए शिक्षक को स्वयं भी स्वतंत्रता के निहितार्थों के प्रति तथा उसके पूरे महत्त्व के प्रति जागरूक होना चाहिए। किसी अन्य व्यक्ति का उदाहरण और किसी भी प्रकार का दबाव इस स्वतंत्रता को लाने में सहायक नहीं होते, पर केवल स्वतंत्रता में ही आत्म–अन्वेषण तथा अंतर्दृष्टि संभव होती है।
The child is influenced by the people and the things about him, and the right kind of educator should help him to uncover these influences and their true worth. Right values are not discovered through the authority of society or tradition; only individual thoughtfulness can reveal them.	बालक के ऊपर उसके चारों ओर के लोगों तथा वस्तुओं का प्रभाव पड़ता है; इन प्रभावों और उनके वास्तविक मूल्य को स्पष्ट करने में सही शिक्षक को बालक की सहायता करनी चाहिए। समाज अथवा परंपरा के प्रामाण्य के द्वारा सम्यक् मूल्यों को नहीं खोजा जा सकता; केवल व्यक्तिगत विचारशीलता ही उन्हें प्रकट कर सकती है।

If one understands this deeply, one will encourage the student from the very beginning to awaken insight into present-day individual and social values. One will encourage him to seek out, not any particular set of values, but the true value of all things. One will help him to be fearless, which is to be free of all domination, whether by the teacher, the family or society, so that as an individual he can flower in love and goodness. In thus helping the student towards freedom, the educator is changing his own values also; he too is beginning to be rid of the `"me" and the"mine," he too is flowering in love and goodness. This process of mutual **education** creates an altogether different relationship between the teacher and the student.	यदि कोई व्यक्ति इसको गहराई से समझता है तो वर्तमान व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों के प्रति अंतर्दृष्टि जगाने में वह बिल्कुल आरंभ से ही बालक को प्रोत्साहित करेगा। उसका प्रोत्साहन किन्हीं विशेष प्रकार के मूल्यों की खोज के लिए नहीं होगा बल्कि उसका प्रयास होगा कि बालक की खोज सभी वस्तुओं के वास्तविक जीवन-मूल्य के प्रति हो। वह उसकी निर्भय होने में सहायता करेगा, जिसका अर्थ है कि सभी प्रकार के आधिपत्य से मुक्ति--आधिपत्य चाहे अध्यापक का हो अथवा परिवार का अथवा समाज का--जिससे कि प्रेम और अच्छाई में वह एक व्यक्ति के रूप में खिल सके। इस प्रकार स्वतंत्रता की ओर बढ़ने में छात्र की सहायता करके शिक्षक स्वयं अपने जीवन-मूल्यों को भी बदल रहा है; वह भी ''मैं'' और ''मेरा'' से मुक्ति पाना शुरू कर रहा है, वह भी प्रेम और अच्छाई में खिल रहा है। परस्पर शिक्षण की यह प्रक्रिया अध्यापक और छात्र के बीच एक बिल्कुल अलग ही संबंध उत्पन्न करती है।
Domination or compulsion of any kind is a direct hindrance to freedom and intelligence. The right kind of educator has no authority, no power in society; he is beyond the edicts and sanctions of society. If we are to help the student to be free from his hindrances, which have been created by himself and by his environment, then every form of compulsion and domination must be understood and put aside; and this cannot be done if the educator is not also freeing himself from all crippling authority.	किसी भी प्रकार का आधिपत्य या ज़ोर-दबाव, स्वतंत्रता और प्रज्ञा के लिए एकदम बाधा है। सही शिक्षक का समाज में न तो कोई अधिकार-प्राधिकार होता है, न सत्ता; वह समाज के विधि-निषेधों और मान्यताओं से परे होता है। यदि हम बालक को इन बाधाओं से मुक्त करना चाहते हैं - बाधाएँ जिन्हें स्वयं उसने तथा उसके परिवेश ने उत्पन्न किया है - तो बाध्यता और आधिपत्य के प्रत्येक रूप को समझना तथा समाप्त करना होगा; परंतु यदि शिक्षक स्वयं ही अपने को पंगु बनाने वाली सभी प्रकार की सत्ता से मुक्त नहीं करता, तो ऐसा करना संभव नहीं है।
To follow another, however great, prevents the discovery of the ways of the self; to run after the promise of some ready-made Utopia makes the	दूसरे का अनुगमन करना, चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो, 'स्व' की प्रक्रिया की खोज में बाधक बनता है; बने-बनाए यूटोपिया (काल्पनिक स्वर्गराज्य)

mind utterly unaware of the enclosing action of its own desire for comfort, for authority, for someone else's help. The priest, the politician, the lawyer, the soldier, are all there to "help" us; but such help destroys intelligence and freedom. The help we need does not lie outside ourselves. We do not have to beg for help; it comes without our seeking it when we are humble in our dedicated work, when we are open to the understanding of our daily trials and accidents.	के आश्वासनों के पीछे दौड़ने से मन स्वयं अपनी वासना के घेरे में कैद रहता है और फिर भी उसके प्रति अज्ञानी रहता है। यह वासना निरन्तर ही अपनी सुविधा, सत्ता तथा दूसरे की सहायता को प्राप्त करने के पीछे दौड़ती रहती है। पुरोहित, राजनीतिज्ञ, वकील, सैनिक, सभी हमारी ''सहायता'' के लिए तैयार रहते हैं; परंतु ऐसी सहायता प्रज्ञा और स्वतंत्रता को नष्ट करती है। जिस सहायता की हमें आवश्यकता है वह स्वयं हमसे बाहर कहीं नहीं है। हमें सहायता के लिए भिक्षा माँगने की आवश्यकता नहीं है; जब हम उस काम में नम्रता पूर्वक लगे होते हैं जिसके प्रति हम समर्पित हैं और दिनप्रतिदिन आनेवाली परीक्षा की घड़ियों तथा आपत्तियों को समझने के लिए तैयार रहते हैं, तो वह सहायता बिना हमारे प्रयत्न के ही आ जाती है।
We must avoid the conscious or unconscious craving for support and encouragement, for such craving creates its own response, which is always gratifying. It is comforting to have someone to encourage us, to give us a lead, to pacify us; but this habit of turning to another as a guide, as an authority, soon becomes a poison in our system. The moment we depend on another for guidance, we forget our original intention, which was to awaken individual freedom and intelligence.	समर्थन तथा प्रोत्साहन की चेतन अथवा अचेतन लालसा और ललक स्वयं अपनी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है जो सदा तुष्ट कर देने का काम करती है। ऐसी लालसा से हमें बचना होगा। किसी ऐसे व्यक्ति का होना जो हमें प्रोत्साहित करे, जो हमारा नेतृत्व करे तथा जो हमें सांत्वना दे, हमें बड़ा सुविधाजनक लगता है; परंतु दूसरे को मार्ग निर्देशक अथवा अधिकारी समझकर उसकी ओर देखने की यह आदत हमारी व्यवस्था में शीघ्र ही विष का कार्य करती है। जैसे ही हम मार्ग निर्देशन के लिए दूसरों पर आश्रित होते हैं कि हम अपने मूल लक्ष्य को भूल जाते हैं, जो कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और प्रज्ञा को जगाना था।
All authority is a hindrance, and it is essential that the educator should not become an authority for the student. The building up of authority is both a conscious and an unconscious process.	सभी प्रकार की सत्ता एक बाधा है। यह आवश्यक है कि शिक्षक छात्र के लिए सत्ता या प्रामाण्य न बने। सत्ता का निर्माण केवल चेतन ही नहीं वरन अचेतन प्रक्रिया भी है।
The student is uncertain, groping, but	छात्र अनिश्चित है, अँधेरे में टटोल रहा

the teacher is sure in his knowledge, strong in his experience. The strength and certainty of the teacher give assurance to the student, who tends to bask in that sunlight; but such assurance is neither lasting nor true. A teacher who consciously or un consciously encourages dependence can never be of great help to his students. He may overwhelm them with his knowledge, dazzle them with his personality, but he is not the right kind of educator because his knowledge and experiences are his addiction, his security, his prison; and until he himself is free of them, he cannot help his students to be integrated human beings.	है; अध्यापक अपने ज्ञान में निश्चित है, अपने अनुभव में दृढ़ है। अध्यापक की दृढ़ता और निश्चितता में छात्र आश्वस्त रहना भी चाहता है; परंतु ऐसा आश्वासन न तो स्थायी होता है और न सत्य। ऐसा अध्यापक जो चेतन अथवा अचेतन रूप से पर-निर्भरता को प्रोत्साहित करता है, अपने छात्रों के लिए कभी अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो सकता। अपने ज्ञान से वह उन्हें जीत सकता है, अपने व्यक्तित्व से वह उन्हें चमत्कृत कर सकता है, परंतु वह एक सही शिक्षक नहीं है, क्योंकि उसका ज्ञान और उसका अनुभव उसकी एक आदत है, उसकी सुरक्षा है, उसका जेलखाना है, और जब तक वह उनसे अपने को मुक्त नहीं करता, समन्वित मनुष्य बनने में वह अपने छात्रों की सहायता नहीं कर सकता।
To be the right kind of educator, a teacher must constantly be freeing himself from books and laboratories; he must ever be watchful to see that the students do not make of him an example, an ideal, an authority. When the teacher desires to fulfil himself in his students, when their success is his, then his teaching is a form of self-continuation, which is detrimental to self-knowledge and freedom. The right kind of educator must be aware of all these hindrances in order to help his students to be free, not only from his authority, but from their own self-enclosing pursuits.	एक सही शिक्षक बनने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक पुस्तकों और प्रयोग-शालाओं से अपने को निरन्तर मुक्त करता रहे, उसे सदा इसकी सावधानी बरतनी चाहिए कि छात्र कहीं उसे उदाहरण, आदर्श, प्रामाण्य न बना लें। जब अध्यापक अपने छात्रों के माध्यम से अपने को परितुष्ट करने की अभिलाषा रखता है, जब छात्रों की सफलता उसकी अपनी सफलता होती हे, तब उसका शिक्षण आत्म-सातत्य का, अपने अहं को ही बनाए रखने का, एक बहाना होता है, और यह आत्मबोध तथा स्वतंत्रता के लिए हानिकारक है। सही अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह इन बाधाओं के प्रति जागरूक हो, जिससे कि वह अपने छात्रों को केवल अपने ही अधिकार से नहीं वरन उनके अपने आत्म-केंद्रित करने वाले प्रयासों से भी मुक्त कर सके।
Unfortunately, when it comes to understanding a problem, most teachers do not treat the student as an equal partner; from their superior position, they give instructions to the pupil, who is far below them. Such a relationship	दुर्भाग्य से जब किसी समस्या को समझने का प्रश्न उठता है, अधिकांश अध्यापक उस समस्या को समझने में छात्र को समान भागीदार नहीं बनाते; अपने ऊँचे ओहदे से वे शिष्य को आदेश देते हैं मानों वह उनसे कहीं नीचे हो। ऐसा संबंध

only strengthens fear in both the teacher and the student. What creates this unequal relationship? Is it that the teacher is afraid of being found out? Does he keep a dignified distance to guard his susceptibilities, hide importance? Such superior aloofness in no way helps to break down the barriers that separate individuals. After all, the educator and his pupil are helping each other to **educate** themselves.	छात्र एवं अध्यापक दोनों में भय उत्पन्न करता है। इस असमान संबंध का क्या कारण है? क्या अध्यापक भयभीत है कि उसकी पोल खुल जाएगी? क्या अध्यापक अपनी तुनुकमिजाजी को, अपने महत्त्व को छिपाने के लिए एक सम्मानजनक दूरी बनाए रखता है? श्रेष्ठ भावना वाली यह पृथक्ता उन दीवारों को तोड़ने में किसी प्रकार की सहायता नहीं करती जो व्यक्तियों को अलग-थलग रखती हैं। आखिरकार शिक्षक तथा उसके शिष्य दोनों ही अपने को शिक्षित करने में एक-दूसरे की सहायता कर रहे हैं।
All relationship should be a mutual **education**; and as the protective isolation afforded by knowledge, by achievement, by ambition, only breeds envy and antagonism, the right kind of educator must transcend these walls with which he surrounds himself.	सभी प्रकार के संबंधों को पारस्परिक शिक्षा का रूप ले लेना चाहिए; और चूँकि ज्ञान, उपलब्धि, महत्त्वाकांक्षा आदि से मिलने वाला सुरक्षात्मक अलगाव केवल द्वेष एवं विरोध ही उत्पन्न करता है, इसलिए सही शिक्षक को अपने चारों ओर की इन दीवारों को पार करना चाहिए जिनसे वह स्वयं घिरा है।
Because he is devoted solely to the freedom and integration of the individual, the right kind of educator is deeply and truly religious. He does not belong to any sect, to any organized religion; he is free of beliefs and rituals, for he knows that they are only illusions, fancies, superstitions projected by the desires of those who create them. He knows that reality or God comes into being only when there is self-knowledge and therefore freedom.	सही शिक्षक चूँकि पूर्णतया व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा उसके समन्वय के लिए ही समर्पित है, अतः वह एक गहरे अर्थ में सच्चा धार्मिक व्यक्ति है। वह किसी सम्प्रदाय का नहीं होता और न ही किसी संगठित धर्म का; वह विश्वासों एवं कर्मकाण्डों से भी मुक्त होता है, क्योंकि वह जानता है कि वे सब भ्रम हैं, कल्पनाएँ तथा अंधविश्वास हैं, जो उनको बनाने वालों की वासनाओं द्वारा प्रक्षेपित किये हुए हैं। वह जानता है कि यथार्थ अथवा ईश्वर तभी प्रकट होता है जब आत्मबोध हो और इसके फलस्वरूप मुक्ति हो।
People who have no academic degrees often make the best teachers because they are willing to experiment; not being specialists, they are interested in learning, in understanding life. For the true teacher, teaching is not a technique, it is his way of life; like a great artist, he would rather starve than	जिन लोगों के पास कोई अकादमिक पदवी नहीं होती है वे प्रायः बड़े अच्छे अध्यापक बनते हैं, क्योंकि वे प्रयोग के लिए तैयार रहते हैं; विशेषज्ञ न होने के कारण वे सीखने में, जीवन को समझने में रुचि रखते हैं। एक सच्चे अध्यापक के लिए अध्यापन तकनीक नहीं है, वह उसकी जीवन-पद्धति है; एक बड़े कलाकार की

give up his creative work. Unless one has this burning desire to teach, one should not be a teacher. It is of the utmost importance that one discover for oneself whether one his this gift, and not merely drift into teaching because it is a means of livelihood.	भाँति वह अपने सृजनशील कार्य को छोड़ने के बजाय भूखों मरना अधिक पसंद करेगा। जब तक व्यक्ति में अध्यापन करने की ऐसी ज्वलंत अभिलाषा न हो, उसे अध्यापक नहीं बनना चाहिए। यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कि व्यक्ति इसका पता लगाए कि उसमें यह प्रतिभा है अथवा नहीं; केवल जीविकोपार्जन के लिए अध्यापन में आना उचित न होगा।
As long as teaching is only a profession, a means of livelihood, and not a dedicated vocation, there is bound to be a wide gap between the world and ourselves: our home life and our work remain separate and distinct. As long as **education** is only a job like any other, conflict and enmity among individuals and among the various class levels of society are inevitable; there will be increasing competition, the ruthless pursuit of personal ambition, and the building up of the national and racial divisions which create antagonism and endless wars.	जब तक अध्यापन एक व्यवसाय है, जीविकोपार्जन का एक साधन है, न कि एक ऐसी वृत्ति जिसके लिए व्यक्ति समर्पित है, तब तक हमारे तथा संसार के बीच एक गहरी खाई बनी रहेगी; हमारा घरेलू जीवन तथा हमारा काम एक-दूसरे से पृथक एवं विशिष्ट बने रहेंगे। जब तक शिक्षा दूसरी नौकरियों की भाँति एक नौकरी है, तब तक व्यक्तियों में तथा तमाम स्तरों पर विभाजित समाज में द्वंद्व तथा वैर-भाव अनिवार्य रहेगौ, एवं प्रतिद्वंद्विता, व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं का निष्ठुरतापूर्वक अनुसरण और राष्ट्रीय तथा जातीय विभाजनों में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी और ये ही हैं जो संघर्ष एवं कभी न समाप्त होने वाले युद्धों का कारण बनते हैं।
But if we have dedicated ourselves to be the right kind of educators, we do not create barriers between our home life and the life at school, for we are everywhere concerned with freedom and intelligence. We consider equally the children of the rich and of the poor, regarding each child as an individual with his particular temperament, heredity, ambitions, and so on. We are concerned, not with a class, not with the powerful or the weak, but with the freedom and integration of the individual.	परंतु जब सही प्रकार के शिक्षक बनने के लिए हम अपने को समर्पित कर देते हैं, तब हम अपने घर तथा स्कूल के जीवन के बीच दीवारें नहीं खड़ी करते, क्योंकि सर्वत्र हमारा संबंध स्वतंत्रता तथा प्रज्ञा से होता है। हम धनी तथा निर्धन सभी के बच्चों को एक समान देखते हैं तथा प्रत्येक बालक को एक ऐसा व्यक्ति मानते हैं जिसका अपना स्वभाव, अपनी विरासत है, महत्त्वाकांक्षाएँ हैं। हमारा सम्बंध किसी वर्ग से नहीं होता, न तो शक्तिशाली से और न निर्बल से; हमारा संबंध केवल व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अखंडता से होता है।
Dedication to the right kind of **education** must be wholly voluntary. It should not be the result of any kind	यह आवश्यक है कि सही शिक्षा के प्रति समर्पण पूर्णतया ऐच्छिक हो। वह किसी प्रकार के दबाव या व्यक्तिगत लाभ की

of persuasion, or of any hope of personal gain; and it must be devoid of the fears that arise from the craving for success and achievement. The identification of oneself with the success or failure of a school is still within the field of personal motive. If to teach is one's vocation, if one looks upon the right kind of **education** as a vital need for the individual, then one will not allow oneself to be hindered or in any way sidetracked either by one's own ambitions or by those of another; one will find time and opportunity for this work, and will set about it without seeking reward, honour or fame. Then all other things - family, personal security, comfort - become of secondary importance.	आशा के कारण नहीं होना चाहिए, और इसे उस भय से मुक्त होना चाहिए जो सफलता तथा उपलब्धि की लालसा से उत्पन्न होता है। विद्यालय की सफलता अथवा असफलता के साथ व्यक्ति का तादात्म्य भी व्यक्तिगत स्वार्थ के क्षेत्र के ही अंतर्गत आता है। यदि अध्यापन करना व्यक्ति की वृत्ति है, यदि सही शिक्षा को वह मूलभूत आवश्यकता समझता है, तो स्वयं अपनी अथवा दूसरे की महत्त्वाकांक्षाओं को वह अपने मार्ग में बाधक न बनने देगा और न अपने रास्ते से विचलित होगा। वह अपने कार्य के लिए समय तथा अवसर खोज ही लेगा और पुरस्कार, सम्मान अथवा यश की लालसा के बिना ही उसमें लग जाएगा। तब दूसरी सभी बातें, परिवार, व्यक्तिगत सुरक्षा, सुविधा आदि गौण हो जाती हैं।
If we are in earnest about being the right kind of teachers, we shall be thoroughly dissatisfied, not with a particular system of **education**, but with all systems, because we see that no educational method can free the individual. A method or a system may condition him to a different set of values, but it cannot make him free.	यदि अच्छा शिक्षक होने के प्रति हमारी निष्ठा और लगन है तो हम शिक्षा की किसी विशेष प्रणाली से ही नहीं, वरन सभी प्रणालियों से पूर्णतया असंतुष्ट रहेंगे, क्योंकि हम देखेंगे कि कोई भी शिक्षणप्रणाली व्यक्ति को मुक्त नहीं कर सकती। कोई पद्धति अथवा प्रणाली उसे भिन्न प्रकार के मूल्यों की किसी दूसरी व्यवस्था से संस्कारित तो कर सकती है, परंतु उसे मुक्त नहीं कर सकती।
One has to be very watchful also not to fall into one's own particular system, which the mind is ever building. To have a pattern of conduct, of action, is a convenient and safe procedure, and that is why the mind takes shelter within its formations. To be constantly alert is bothersome and exacting, but to develop and follow a method does not demand thought.	हमें इसकी भी बड़ी सावधानी रखनी होगी कि हम कहीं अपनी ही किसी विशेष प्रणाली के फंदे में न फँस जाएँ जिसे हमारा मन सदा रचता रहता है। आचरण अथवा कार्य के किसी प्रारूप को अपना लेना एक सुविधाजनक एवं सुरक्षित प्रक्रिया है, और यही कारण है कि मन अपनी ही निर्मिति में शरण लेता है। निरन्तर सचेत रहना कष्टदायक और श्रमयुक्त होता है, जबकि किसी प्रणाली के विकास तथा उसके अनुगमन के लिए विचारशीलता की आवश्यकता नहीं होती।
Repetition and habit encourage the mind to be sluggish; a shock is needed	पुनरावृत्ति तथा आदत मन को आलसी बनने की ओर प्रवृत्त करती है; उसे

to awaken it, which we then call a problem. We try to solve this problem according to our well-worn explanations, justifications and condemnations, all of which puts the mind back to sleep again. In this form of sluggishness the mind is constantly being caught, and the right kind of educator not only puts an end to it within himself, but also helps his students to be aware of it.	जगाने के लिए एक चोट की आवश्यकता होती है – चोट, जिसे तब हम समस्या की संज्ञा दे देते हैं। इस समस्या का समाधान हम अपनी जीर्ण-शीर्ण व्याख्याओं, औचित्य-समर्थनों एवं निंदाओं से करते हैं और ये सभी मन को पुनः सुला देते हैं। इस प्रकार की तंद्रा में मन निरन्तर फँसता रहता है। एक सही शिक्षक केवल अपने में ही इसका अंत नहीं करता, बल्कि उसके प्रति जागरूक रहने में अपने छात्रों की भी सहायता करता है।
Some may ask,"How does one become the right kind of educator?" Surely, to ask "How" indicates, not a free mind, but a mind that is timorous, that is seeking an advantage, a result. The hope and the effort to become something only makes the mind conform to the desired end, while a free mind is constantly watching, learning, and therefore breaking through its self-projected hindrances.	कुछ व्यक्ति यह प्रश्न कर सकते हैं कि ''सही शिक्षक कैसे बना जाता है?'' निस्संदेह ''कैसे'' का प्रश्न मन के मुक्त होने का सूचक नहीं है; वह एक ऐसे मन का सूचक है जो भीरु है; जो किसी लाभ, किसी परिणाम की खोज में लगा है। कुछ बनने की आशा एवं प्रयत्न मन को उसके इच्छित लक्ष्य के अनुरूप बनाता है; जबकि मुक्त मन सतत रूप से जागरूक रहता है, सीखता रहता है और इस प्रकार स्वनिर्मित बाधाओं को तोड़ कर आगे निकलता रहता है।
Freedom is at the beginning, it is not something to be gained at the end. The moment one asks "How," one is confronted with insurmountable difficulties, and the teacher who is eager to dedicate his life to **education** will never ask this question, for he knows that there is no method by which one can become the right kind of educator. If one is vitally interested, one does not ask for a method that will assure one of the desired result.	स्वतंत्रता आरंभ में ही होती है – वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे अंत में प्राप्त किया जाता है। जैसे ही कोई व्यक्ति पूछता है ''कैसे?'' तो उसके सामने अनेक ऐसी कठिनाइयाँ आ जाती हैं जिन पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। शिक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए इच्छुक अध्यापक रखता है, कभी ऐसा प्रश्न नहीं करेगा, क्योंकि वह जानता है कि कोई भी ऐसी प्रणाली नहीं है जिससे वह सही प्रकार का शिक्षक बन सके। यदि व्यक्ति की जीवंत अभिरुचि है तो वह किसी ऐसी प्रणाली की माँग ही नहीं करेगा जो इच्छित परिणाम का आश्वासन देती हो।
Can any system make us intelligent? We may go through the kind of a system, acquire degrees, and so on; but will we then be educators, or merely	क्या कोई प्रणाली हमें प्रज्ञावान बना सकती है? हमारे ऊपर किसी प्रणाली की सान चढ़ायी जा सकती है, हम पदवियाँ प्राप्त कर सकते हैं, आदि-आदि; परंतु

the personifications of a system? To seek reward, to want to be called an outstanding educator, is to crave recognition and praise; and while it is sometimes agreeable to be appreciated and encouraged, if one depends upon it for one's sustained interest, it becomes a drug of which one soon wearies. To expect appreciation and encouragement is quite immature.	क्या तब हम एक शिक्षक होंगे, अथवा किसी व्यवस्था–प्रणाली के केवल एक मूर्त रूप होंगे? पुरस्कार की इच्छा अथवा एक असाधारण शिक्षक कहलाने की इच्छा केवल मान्यता एवं प्रशंसा की लालसा है, और यह ठीक है कि प्रशंसित तथा प्रोत्साहित किया जाना कभी–कभी अच्छा लगता है परंतु यदि अपनी अभिरुचि बनाए रखने के लिए कोई उस पर निर्भर करने लगे, तो वह एक नशा हो जाता है जिससे व्यक्ति शीघ्र ही मुरझा जाता है। प्रशंसा तथा प्रोत्साहन की आशा करना बिल्कुल अपरिपक्वता है।
If anything new is to be created, there must be alertness and energy, not bickerings and wrangles. If one feels frustrated in one's work, then boredom and weariness generally follow. If one is not interested, one should obviously not go on teaching.	यदि किसी नवीन वस्तु की रचना करनी है, तो यह आवश्यक है कि हम सतर्क एवं स्फूर्तिवान हों, न कि झगड़ते रहें या शिकायत करते रहें। यदि कोई अपने कार्य में कुण्ठा का अनुभव करता है तो प्रायः ऊब एवं थकावट उत्पन्न होती है। यदि व्यक्ति की रुचि नहीं है तो उसे अध्यापन करना जारी नहीं रखना चाहिए।
But why is there so often a lack of vital interest among teachers? What causes one to feel frustrated? Frustration is not the result of being forced by circumstances to do this or that; it arises when we do not know for ourselves what it is that we really want to do. Being confused, we get pushed around, and finally land in something which has no appeal for us at all.	परंतु अध्यापकों में प्रायः जीवंत अभिरुचि का अभाव क्यों होता है? वे कुण्ठा का अनुभव क्यों करते हैं? परिस्थितियों से बाध्य होकर किसी कार्य को करने की वजह से कुण्ठा उत्पन्न नहीं होती; वह तो तब उत्पन्न होती है जब हम अपने विषय में यही ठीक से नहीं जानते कि वह क्या है जिसे वास्तव में हम करना चाहते हैं। भ्रांत होकर हम चारों ओर धक्के खाते हैं और तब अंत में कहीं ऐसी जगह टिक जाते हैं जहाँ हमारी कोई रुचि नहीं होती।
If teaching is our true vocation, we may feel temporarily frustrated because we have not seen a way out of this present educational confusion; but the moment we see and understand the implications of the right kind of **education**, we shall have again all the necessary drive and enthusiasm. It is not a matter of will or resolution, but of perception and understanding.	यदि शिक्षा हमारी वास्तविक वृत्ति है तो तात्कालिक रूप से हम कुण्ठा का अनुभव कर सकते हैं, क्योंकि हमें वर्तमान शैक्षिक भ्रांति से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं दिखाई देता; परंतु जैसे–जैसे हम सम्यक् शिक्षा के निहितार्थों को देख और समझ लेंगे, हममें समग्र ऊर्जा और उत्साह लौट आएंगे। यह किसी संकल्प अथवा दृढ़ निश्चय का विषय नहीं, प्रत्यक्ष दर्शन एवं अवबोध की बात है।

If teaching is one's vocation, and if one perceives the grave importance of the right kind of **education**, one cannot help but be the right kind of educator. There is no need to follow any method. The very fact of understanding that the right kind of **education** is indispensable if we are to achieve the freedom and integration of the individual, brings about a fundamental change in oneself. If one becomes aware that there can be peace and happiness for man only through right **education**, then one will naturally give one's whole life and interest to it.	यदि शिक्षण किसी व्यक्ति की वृत्ति है और यदि वह उचित शिक्षा के गंभीर महत्त्व को देखता है तो वह सही प्रकार का शिक्षक हुए बिना नहीं रह सकता। उसके लिए किसी प्रणाली का अनुगमन करने की आवश्यकता नहीं है। इस तथ्य का अवबोध–मात्र ही कि व्यक्ति की मुक्ति एवं उसके जीवन में अखंडता को उपलब्ध करने के लिए सम्यक् शिक्षा अपरिहार्य है, व्यक्ति में मौलिक परिवर्तन ले आता है। यदि कोई इसके प्रति जागरूक हो जाता है कि उचित शिक्षा के ही द्वारा शांति एवं सुख संभव है, तो वह स्वभावतः अपने जीवन एवं अभिरुचि को उसके लिए अर्पित कर देगा।
One teaches because one wants the child to be rich inwardly, which will result in his giving right value to possessions. Without inner richness, worldly things become extravagantly important, leading to various forms of destruction and misery. One teaches to encourage the student to find his true vocation, and to avoid those occupations that foster antagonism between man and man. One teaches to help the young towards self-knowledge, without which there can be no peace, no lasting happiness. One's teaching is not self-fulfilment, but self-abnegation.	बालक को हम इसलिए शिक्षित करते हैं कि वह आंतरिक रूप से समृद्ध हो सके। इसके परिणामस्वरूप वह अपनी सम्पत्ति को भी सही मूल्य प्रदान करेगा। अंतस् की समृद्धि के अभाव में सांसारिक वस्तुएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं और इससे विभिन्न प्रकार की तबाही एवं कष्ट उत्पन्न होता है। बालक को शिक्षा हम इसलिए देते हैं कि वह अपनी उचित वृत्ति खोज सके तथा उन व्यवसायों से बच सके जो व्यक्ति और व्यक्ति के बीच बैर का कारण बनते हैं। हम बालकों को शिक्षा इसलिए देते हैं कि वे आत्मज्ञान की ओर बढ़ें, जिसके अभाव में न तो शांति संभव है और न स्थायी सुख। शिक्षा आत्म–तुष्टीकरण के लिए नहीं, बल्कि आत्मपरित्याग के लिए होती है।
Without the right kind of teaching, illusion is taken for reality, and then the individual is ever in conflict within himself, and therefore there is conflict in his relationship with others, which is society. One teaches because one sees that self-knowledge alone, and not the dogmas and rituals of organized religion, can bring about a tranquil mind; and that creation, truth, God, comes into being only when the "me"	उचित शिक्षा के अभाव में भ्रम को यथार्थ समझ लिया जाता है और तब अंतस् सदा ही द्वंद्व में रहता है। इसी से दूसरों के साथ अर्थात् समाज के साथ द्वंद्व जारी रहता है। शिक्षण हम इसलिए करते हैं क्योंकि यह बात स्पष्ट है कि संगठित धर्मों के सिद्धांतों अथवा कर्मकाण्डों से नहीं वरन आत्मज्ञान से ही मन शांत होता है; और वह सृजन, सत्य, ईश्वर केवल तभी प्रकट होता है जब ‘‘मैं’’ और

and the "mine" are transcended.	‘‘मेरा’’ का अंत हो जाता है।
Chapter 7	**काम–वृत्ति तथा विवाह**
J. Krishnamurti Education and the Significance of Life 'Sex and Marriage'	
LIKE other human problems, the problem of our passions and sexual urges is a complex and difficult one, and if the educator himself has not deeply probed into it and seen its many implications, how can he help those he is **educating**? If the parent or the teacher is himself caught up in the turmoils of sex, how can he guide the child? Can we help the children if we ourselves do not understand the significance of this whole problem? The manner in which the educator imparts an understanding of sex depends on the state of his own mind; it depends on whether he is gently dispassionate, or consumed by his own desires.	दूसरी मानवीय समस्याओं की भाँति ही हमारी विषय–वासना एवं काम–सम्बंधी आवेगों की समस्या भी जटिल तथा कठिन है; और यदि शिक्षक ने इस समस्या का गहराई से अन्वेषण नहीं किया है तथा उसके अनेक निहितार्थों को नहीं समझा है तो वह उनकी सहायता कैसे कर सकता है जिन्हें वह शिक्षित कर रहा है? यदि अभिभावक अथवा अध्यापक स्वयं ही काम–वृत्ति में जकड़े हुए हैं तो वे बालक का मार्ग निर्देशन कैसे कर सकते हैं? यदि इस समस्या के सम्पूर्ण रूप को एवं उसके महत्त्व को हम स्वयं नहीं समझते तो बालकों की सहायता कैसे कर सकते हैं? काम–वृत्ति से संबंधित अवबोध जिस रूप में बालक को सम्प्रेषित किया जाता है, वह अध्यापक के मन की अवस्था पर निर्भर है; वह इस पर निर्भर करता है कि अध्यापक में सौम्य संयम है या कि वह स्वयं अपनी वासनाओं से आक्रांत है ।
Now, why is sex to most of us a problem, full of confusion and conflict? Why has it become a dominant factor in our lives? One of the main reasons is that we are not creative; and we are not creative because our whole social and moral culture, as well as our educational methods, are based on development of the intellect. The solution to this problem of sex lies in understanding that creation does not occur through the functioning of the intellect. On the contrary, there is creation only when the intellect is still.	हममें से अधिकांश के लिए काम–वृत्ति भ्रांति एवं द्वंद्व से घिरी एक समस्या क्यों है? क्यों हमारे जीवन में इसका इतना प्रमुख स्थान हो गया है? एक कारण तो यह है कि हम सृजनशील नहीं है; और हम सृजनशील इसलिए नहीं है क्योंकि हमारी समस्त सामाजिक और नैतिक संस्कृति ही नहीं वरन हमारी शिक्षण–पद्धतियाँ भी बुद्धि के ही विकास पर आधारित हैं। काम–वृत्ति की समस्या का समाधान इसी अवबोध में है कि सृजनशीलता कभी बुद्धि के कार्य के माध्यम से नहीं आती। इसके विपरीत

	सृजनशीलता तभी संभव होती है जब बुद्धि शांत होती है।
The intellect, the mind as such, can only repeat, recollect, it is constantly spinning new words and rearranging old ones; and as most of us feel and experience only through the brain, we live exclusively on words and mechanical repetitions. This is obviously not creation; and since we are uncreative, the only means of creativeness left to us is sex. Sex is of the mind, and that which is of the mind must fulfil itself or there is frustration.	बुद्धि अर्थात् मन केवल पुनरावृत्ति कर सकता है, केवल स्मरण कर सकता है। वह निरन्तर नवीन शब्दों की रचना कर रहा होता है तथा पुरानी चीजों को नवीन व्यवस्था में ढाल रहा होता है; और चूंकि हम अक्सर केवल मस्तिष्क से ही अनुभव करते हैं, इसलिए हम केवल शब्दों एवं यांत्रिक पुनरावृत्तियों पर ही जीवित रहते हैं। स्पष्ट है कि यह सृजन नहीं है, और चूँकि हम सृजनशीलता से रहित हैं, सृजनशील होने का जो एक साधन हमारे पास बचता है वह काम-वृत्ति ही है। काम-वृत्ति का सम्बंध मन से है, और जो मन की वस्तु है उसे तो अपने को तुष्ट करना ही है, अन्यथा कुण्ठा होती है, निराशा होती है।
Our thoughts, our lives are bright, arid, hollow, empty; emotionally we are starved, religiously and intellectually we are repetitive, dull; socially, politically and economically we are regimented, controlled. We are not happy people, we are not vital, joyous; at home, in business, at church, at school, we never experience a creative state of being, there is no deep release in our daily thought and action. Caught and held from all sides, naturally sex becomes our only outlet, an experience to be sought again and again because it momentarily offers that state of happiness which comes when there is absence of self. It is not sex that constitutes a problem, but the desire to recapture the state of happiness, to gain and maintain pleasure, whether sexual or any other.	हमारे विचार एवं हमारा जीवन संकीर्ण, शुष्क, खोखला तथा रिक्त है; भावनात्मक रूप से हम सदा अतृप्त हैं तथा धार्मिक एवं बौद्धिक दृष्टि से हम सदा अनुकरणात्मक एवं स्फूर्तिविहीन हैं; सामाजिक, राजनीतिक, तथा आर्थिक रूप से हम बँधे हुए हैं एवं नियंत्रित हैं। हम सुखी लोग नहीं हैं; हम जीवन के आनंद से भरे नहीं हैं; न तो घर में, न काम-धंधे में, न चर्च में और न ही विद्यालय में हमें सृजनशीलता का अनुभव होता है; अपने दैनिक विचार अथवा कार्य में हमें कभी गहरी मुक्ति का बोध नहीं होता। सभी ओर से पकड़े एवं जकड़े हुए होने के कारण केवल काम-वृत्ति ही हमारे लिए एक मार्ग रह जाती है - एक ऐसा अनुभव जिसे हम बारबार चाहते हैं, क्योंकि वह कुछ क्षणों के लिए सुख की ऐसी अवस्था हमें देता है जो तभी उत्पन्न होती है जब 'स्व' का अभाव होता है। समस्या काम-वृत्ति में नहीं है, समस्या उस वासना में है जो सुख की अवस्था को पुनः-पुनः प्राप्त करना चाहती है, जो आनंद को प्राप्त करना तथा सुरक्षित रखना चाहती है, चाहे वह काम-वृत्ति

	सम्बंधी हो अथवा कोई अन्य।
What we are really searching for is this intense passion of self-forgetfulness, this identification with something in which we can lose ourselves completely. Because the self is small, petty and a source of pain, consciously or unconsciously we want to lose ourselves in individual or collective excitement, in lofty thoughts, or in some gross form of sensation.	हमारी खोज का वास्तविक लक्ष्य आत्म–विस्मरण का यह तीव्र आवेग ही है अर्थात् किसी ऐसी वस्तु के साथ तादात्म्य, जिसमें हम अपने को पूर्णतया भुला सकें। परंतु 'स्व' तो संकीर्ण, क्षुद्र तथा कष्ट का स्रोत है, अतः चेतन अथवा अचेतन रूप सें हम व्यक्तिगत या सामूहिक उत्तेजनाओं में अथवा ऊँचे विचारों में या फिर किसी फूहड़ उत्तेजना में अपने को भुला देना चाहते हैं।
When we seek to escape from the self, the means of escape are very important, and then they also become painful problems to us. Unless we investigate and understand the hindrances that prevent creative living, which is freedom from self, we shall not understand the problem of sex.	जब हम 'स्व' से पलायन चाहते हैं तो पलायन के साधन बड़े महत्त्व के हो जाते हैं, और तब वे भी हमारे लिए कष्टप्रद समस्याएँ बन जाते हैं। जब तक हम सृजनशील जीवन में रोड़ा अटकाने वाली उन बाधाओं का अन्वेषण नहीं करते तथा उन्हें नहीं समझते – सृजनशील जीवन, जो कि स्व से मुक्ति है – तब तक हम काम–वृत्ति की समस्या को नहीं समझ पाएंगे।
One of the hindrances to creative living is fear, and respectability is a manifestation of that fear. The respectable, the morally bound, are not aware of the full and deep **significance of life**. They are enclosed between the walls of their own righteousness and cannot see beyond them. Their stained-glass morality, based on ideals and religious beliefs, has nothing to do with reality; and when they take shelter behind it, they are living in the world of their own illusions. In spite of their self-imposed and gratifying morality, the respectable also are in confusion, misery and conflict.	सृजनशील जीवन की अनेक बाधाओं में से भय भी एक है, और सम्माननीयता इसी भय की एक अभिव्यक्ति है। जो सम्माननीय हैं, जो नैतिक रूप से कहीं बँधे हैं, वे जीवन के सम्पूर्ण एवं गहरे महत्त्व के प्रति जागरूक नहीं हैं। वे अपनी ही नैतिकता की दीवारों में बंद हैं और उनके परे नहीं देख सकते। किन्हीं आदर्शों एवं धार्मिक विश्वासों पर आधारित उनकी धूमिल नैतिकता का वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है, और वे इसी की शरण लेकर अपने भ्रम के संसार में ही रहे चले जाते हैं। अपनी स्व–आरोपित तथा परितोष देनेवाली नैतिकता के बावजूदये सम्माननीय व्यक्ति भी भ्रांति, कष्ट तथा द्वंद्व में रहते हैं।
Fear, which is the result of our desire to be secure, makes us conform, imitate and submit to domination, and therefore it prevents creative living. To live creatively is to live in freedom,	भय हमारी सुरक्षित होने की वासना का परिणाम है, और यह हमें प्रभुत्व का अनुयायी बनाता है, उसका अनुकरण कराता है तथा उसके अधीन करता है; अतः वह सृजनशील जीवन के लिए बाधक

which is to be without fear; and there can be a state of creativeness only when the mind is not caught up in desire and the gratification of desire. It is only by watching our own hearts and minds with delicate attention that we can unravel the hidden ways of our desire. The more thoughtful and affectionate we are, the less desire dominates the mind. It is only when there is no love that sensation becomes a consuming problem.	है। सृजनशीलता के साथ जीने का अर्थ है मुक्ति का जीवन, जिसका अर्थ है निर्भयता; और सृजनशीलता की अवस्था तभी संभव होती है जब मन वासना तथा उसके तुष्टीकरण में जकड़ा नहीं जाता। अत्यंत सूक्ष्म अवधान से अपने मन और हृदय का अवलोकन करके ही हम अपनी वासना के प्रच्छन्न रूपों को प्रकाश में ला सकते हैं। जितने अधिक विवेकपूर्ण तथा प्रेममय हम होंगें, उतना ही हमारे मन पर वासना का प्रभुत्व कम होगा। जब प्रेम नहीं होता तभी उत्तेजना एक विनाशकारी समस्या बन जाती है।
To understand this problem of sensation, we shall have to approach it, not from any one direction, but from every side, the educational, the religious, the social and the moral. Sensations have become almost exclusively important to us because we lay such overwhelming emphasis on sensate values.	उत्तेजना की इस समस्या को समझने के लिए हमें उसे किसी एक दृष्टि से नहीं बल्कि शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, सभी दृष्टियों से देखना होगा। विषय-भोग विशेष रूप से हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण इसलिए हो गये हैं क्योंकि हम ऐंद्रिक मूल्यों को बहुत अधिक महत्त्व देने लगे हैं।
Through books, through advertisements, through the cinema, and in many other ways, various aspects of sensation are constantly being stressed. The political and religious pageants, the theatre and other forms of amusement, all encourage us to seek stimulation at different levels of our being; and we delight in this encouragement. Sensuality is being developed in every possible way, and at the same time, the ideal of chastity is upheld. A contradiction is thus built up within us; and strangely enough, this very contradiction is stimulating.	पुस्तकों, विज्ञापनों, सिनेमा तथा अनेक दूसरे तरीकों से विषय-भोग के विभिन्न पक्षों पर निरन्तर ज़ोर दिया जा रहा है। राजनीतिक तथा धार्मिक तमाशे, थियेटर तथा दूसरे प्रकार के मनोरंजन आदि सभी हमें प्रोत्साहित करते हैं कि हम अपने जीवन में विभिन्न स्तरों पर उत्तेजनाओं की तलाश करें; और इस प्रोत्साहन में हम आनंद लेते हैं। विषयासक्ति या भोगलालसा को सभी संभव तरीकों से बढ़ाया जा रहा है और उसी के साथ ब्रह्मचर्य के आदर्श का भी झंडा खड़ा किया जाता है। इस प्रकार हमारे अंदर एक अंतर्विरोध पैदा होता है, और आश्चर्य की बात है कि स्वयं यह अंतर्विरोध भी उत्तेजना देता है।
It is only when we understand the pursuit of sensation, which is one of the major activities of the mind, that pleasure, excitement and violence cease	उत्तेजना का पीछा करना मन की मुख्य क्रियाओं में से एक है और जब हम इसे समझते हैं तो भोग, उत्तेजना तथा हिंसा हमारे जीवन के प्रमुख अंग नहीं रहते।

to be a dominant feature in our lives. It is because we do not love, that sex, the pursuit of sensation, has become a consuming problem. When there is love, there is chastity; but he who tries to be chaste, is not. Virtue comes with freedom, it comes when there is an understanding of what is.	चूँकि हम प्रेम नहीं करते, विषय-वासना या उत्तेजना के पीछे दौड़ना खासी जटिल समस्या हो गयी है। जहाँ प्रेम है वहाँ पवित्रता होती है; परंतु यह उसे उपलब्ध नहीं होती जो ब्रह्मचर्य के प्रयास में रत है। सदाचार स्वातंत्र्य के साथ आता है, इसका आगमन 'जो है' के अवबोध के साथ होता है।
When we are young, we have strong sexual urges, and most of us try to deal with these desires by controlling and disciplining them, because we think that without some kind of restraint we shall become consumingly lustful. Organized religions are much concerned about our sexual morality; but they allow us to perpetrate violence and murder in the name of patriotism, to indulge in envy and crafty ruthlessness, and to pursue power and success. Why should they be so concerned with this particular type of morality, and not attack exploitation, greed and war? Is it not because organized religions, being part of the environment which we have created, depend for their very existence on our fears and hopes, on our envy and separatism? So, in the religious field as in every other, the mind is held in the projections of its own desires.	जब हम युवा होते हैं, तब हमारी काम-विषयक इच्छाएँ बलवान होती हैं, और अधिकांश व्यक्ति इन वासनाओं को नियंत्रित तथा अनुशासित करके उनसे निपटने का प्रयत्न करते हैं; क्योंकि हम समझते हैं कि नियंत्रण के अभाव में हम पूर्णतः कामासक्त हो जाएँगे और वह हानिकर होगा। संगठित धर्मों को हमारी काम-विषयक नैतिकता की बड़ी चिंता है; परंतु राष्ट्रीयता के नाम पर तो वे हमें हिंसा तथा हत्या की, द्वेष एवं चालाकियों से भरी निष्ठुरता की और शक्ति तथा सफलता के पीछे दौड़ने की अनुमति दे देते हैं। उन्हें इस विशेष प्रकार की नैतिकता की चिंता क्यों है? वे शोषण, लालच तथा युद्ध पर आक्रमण क्यों नहीं करते? क्या ऐसा इसलिए नहीं है कि संगठित धर्म हमारे ही द्वारा निर्मित उस परिवेश का अंग होने के कारण स्वयं अपने अस्तित्व के लिए हमारी आशंकाओं पर, हमारे द्वेष व पृथकतावाद पर निर्भर करते हैं? अतः दूसरे क्षेत्रों की भाँति धार्मिक क्षेत्र में भी मन स्वयं अपनी वासनाओं के प्रक्षेपण में जकड़ा रहता है।
As long as there is no deep understanding of the whole process of desire, the institution of marriage as it now exists, whether in the East or in the West, cannot provide the answer to the sexual problem. Love is not induced by the signing of a contract, nor is it based on an exchange of gratification, nor on mutual security and comfort. All these things are of the mind, and that is why love occupies so	जब तक वासना की समस्त प्रक्रिया का हमें गहरा अवबोध नहीं है, तब तक विवाह-संस्था, चाहे वह पूर्व में हो अथवा पश्चिम में, काम-वृत्ति की समस्या का समाधान नहीं दे सकती। किसी इक़रारनामे पर हस्ताक्षर करके प्रेम नहीं उत्पन्न किया जा सकता; यह न तो परितोष के लेन-देन पर आधारित है, और न पारस्परिक सुरक्षा एवं सुविधा पर। ये सभी वस्तुएँ मन की हैं, और यही कारण है कि प्रेम

small a place in our lives. Love is not of the mind, it is wholly independent of thought with its cunning calculations, its self-protective demands and reactions. When there is love, sex is never a problem - it is the lack of love that creates the problem.	का हमारे जीवन में इतना छोटा स्थान है। प्रेम मन का विषय नहीं है, वह विचारणा तथा उसकी चतुर योजनाओं से, उसकी आत्मसुरक्षात्मक आवश्यकताओं एवं प्रतिक्रियाओं से पूर्णतया मुक्त है। जब प्रेम होता है तब काम–वृत्ति कभी भी समस्या नहीं होती – प्रेम का अभाव ही इस समस्या को उत्पन्न करता है।
The hindrances and escapes of the mind constitute the problem, and not sex or any other specific issue; and that is why it is important to understand the mind's process, its attractions and repulsions, its responses to beauty, to ugliness.	मन के अवरोध तथा पलायन में ही सारी समस्या निहित है, काम–वृत्ति या अन्य किसी विषय–विशेष में नहीं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम मन की प्रक्रिया को, उसके आकर्षणों और विकर्षणों को, सुंदर तथा कुरूप के प्रति उसकी अनुक्रिया को समझें।
We should observe ourselves, become aware of how we regard people, how we look at men and women. We should see that the family becomes a centre of separatism and of antisocial activities when it is used as a means of self-perpetuation, for the sake of one's self-importance. Family and property, when centred on the self with its ever-narrowing desires and pursuits, become the instruments of power and domination, a source of conflict between the individual and society.	हमें अपना अवलोकन करना चाहिए; हमें इसके प्रति जागरूक होना चाहिए कि हम लोगों को किस दृष्टि से देखते हैं; स्त्रियों एवं पुरुषों की ओर कैसे देखते हैं। हमें समझना चाहिए कि परिवार को जब आत्म–सातत्य का साधन समझा जाता है और उसका उपयोग आत्म–गौरव के लिए किया जाता है तो वह पृथकतावादी तथा समाज–विरोधी कार्यों का केंद्र बन जाता है। सम्पत्ति एवं परिवार जब सदा अधिकाधिक संकीर्णता की ओर बढ़ती वासनाओं तथा कोशिशों में जीने वाले 'स्व' पर केंद्रित होते हैं, तो वे सत्ता तथा आधिपत्य के उपकरण बन जाते हैं; ये ही व्यक्ति एवं समाज के बीच द्वंद्व के स्रोत हैं।
The difficulty in all these human questions is that we ourselves, the parents and teachers, have become so utterly weary and hopeless, altogether confused and without peace; life weighs heavily upon us, and we want to be comforted, we want to be loved. Being poor and insufficient within ourselves, how can we hope to give the right kind of **education** to the child?	इन सभी मानवीय प्रश्नों के विषय में कठिनाई यह है कि हम स्वयं अर्थात् अभिभावक एवं अध्यापक, अत्यधिक क्लांत एवं निराश, पूर्णतः भ्रांत एवं अशांत हो गये हैं। हमारे लिए जीवन एक बड़ा बोझ है, हम सांत्वना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि कोई हमसे प्रेम करे। अपने भीतर हम खोखले एवं अपूर्ण हैं और तब हम यह आशा कैसे कर सकते हैं कि बालक को सही दिशा दे सकेंगे?
That is why the major problem is not	यही कारण है कि प्रमुख समस्या बालक

the pupil, but the educator; our own hearts and minds must be cleansed if we are to be capable of **educating** others. If the educator himself is confused, crooked, lost in a maze of his own desires, how can he impart wisdom or help to make straight the way of another? But we are not machines to be understood and repaired by experts; we are the result of a long series of influences and accidents, and each one has to unravel and understand for himself the confusion of his own nature.	नहीं है वरन स्वयं शिक्षक है। यदि हम दूसरों को शिक्षा देने में समर्थ होना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हमारे अपने मन तथा हृदय साफ़ हों। यदि शिक्षक स्वयं भ्रांत है, कुटिल है, अपनी ही वासनाओं की भूल-भूलैया में खोया हुआ है, तब वह कैसे दूसरे को विवेक दे सकता है अथवा कैसे दूसरे का पथ प्रशस्त कर सकता है? परंतु हम कोई यंत्र नहीं हैं जिसको किसी विशेषज्ञ द्वारा समझा व सुधारा जा सके। हम प्रभावों तथा घटनाओं की एक लम्बी शृंखला के परिणाम हैं, और हममें से प्रत्येक को स्वयं ही अपने स्वभाव में निहित भ्रांति को समझना तथा सुलझाना होगा।
Chapter 8	
J. Krishnamurti Education and the Significance of Life 'Art, Beauty and Creation'	**कला, सौंदर्य और सृजन**
MOST of us are constantly trying to escape from ourselves; and as art offers a respectable and easy means of doing so, it plays a significant part in the lives of many people. In the desire for self-forgetfulness, some turn to art, others take to drink, while still others follow mysterious and fanciful religious doctrines.	हममें से अधिकांश व्यक्ति निरन्तर खुद से पलायन का प्रयत्न करते रहते हैं, और चूँकि ऐसा करने के लिए कला एक सरल एवं सम्मानजनक साधन है, अतः अनेक लोगों के जीवन में कला अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने को भुलाने की इच्छा से कुछ लोग कला का सहारा लेते हैं, कुछ मदिरापान करते हैं, इसी प्रकार दूसरे लोग रहस्यमय एवं कल्पना के तानेबाने में जकड़े धार्मिक सिद्धांतों का अनुगमन करने लगते हैं।
When, consciously or unconsciously, we use something to escape from ourselves, we become addicted to it. To depend on a person, a poem, or what you will, as a means of release from our worries and anxieties, though momentarily enriching, only creates further conflict and contradiction in our lives.	जाने-अनजाने जब हम स्वयं से पलायन के लिए किसी वस्तु का प्रयोग करते हैं तो हम उसके आदी हो जाते हैं। अपनी चिंताओं एवं संत्रासों से मुक्ति पाने के लिए किसी व्यक्ति, कविता, अथवा ऐसे ही किसी दूसरे माध्यम पर आश्रित होना कुछ क्षणों के लिए आनंदप्रद हो सकता है, परंतु हमारे जीवन में वह और अधिक द्वंद्व तथा अंतर्विरोध ही उत्पन्न करता है।

The state of creativeness cannot exist where there is conflict, and the right kind of **education** should therefore help the individual to face his problems and not glorify the ways of escape; it should help him to understand and eliminate conflict, for only then can this state of creativeness come into being.	जहाँ द्वंद्व है वहाँ सृजनशीलता असंभव है, और इसलिए सम्यक् शिक्षा का काम है समस्याओं का सामना करने में सहायता करना न कि पलायन के मार्गों का गुणगान करना। अच्छी शिक्षा द्वंद्व को समझने तथा उसके विलय में व्यक्ति की सहायता करेगी, क्योंकि तभी सृजनशीलता की यह अवस्था संभव है।
Art divorced from life has no great significance. When art is separate from our daily living, when there is a gap between our instinctual life and our efforts on canvas, in marble or in words, then art becomes merely an expression of our superficial desire to escape from the reality of what is. To bridge this gap is very arduous, especially for those who are gifted and technically proficient; but it is only when the gap is bridged that our life becomes integrated and art an integral expression of ourselves.	जीवन से विलग कला का कोई महत्त्व नहीं है। जब कला हमारे दैनिक जीवन से पृथक होती है, जब चित्र–फलक पर, शब्दों में अथवा संगमरमर पर किये गए हमारे प्रयत्नों और हमारी मूल प्रवृत्तियों के बीच खाई होती है, तो कला ''जो है'' की वास्तविकता से पलायन की हमारी सतही इच्छा की अभिव्यक्ति मात्र होती है। इस खाई को पाटना बड़ा कठिन कार्य है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो प्रतिभाशाली तथा निपुण हैं, परंतु हमारा जीवन तभी अखंडित बनता है और कला तभी हमारी समन्वित अभिव्यक्ति होती है, जब यह खाई पट जाती है।
Mind has the power to create illusion; and without understanding its ways, to seek inspiration is to invite self-deception. Inspiration comes when we are open to it, not when we are courting it. To attempt to gain inspiration through any form of stimulation leads to all kinds of delusions.	मन के पास भ्रम को उत्पन्न करने की शक्ति है, और बिना उसके तरीकों को समझे अंतःप्रेरणा की खोज करना आत्म–वंचना को निमंत्रण देना है। अंतःप्रेरणा तभी आती है जब हम उसके प्रति खुले होते हैं; यह याचना करने से नहीं आती। किसी भी प्रकार के उद्दीपन के द्वारा अंतःप्रेरणा को हासिल करने की कोशिश कई तरह के भ्रम उत्पन्न करती है।
Unless one is aware of the significance of existence, capacity or gift gives emphasis and importance to the self and its cravings. it tends to make the individual self-centred and separative; he feels himself to be an entity apart, a superior being, all of which breeds many evils and causes ceaseless strife	जब तक कोई व्यक्ति अस्तित्व के महत्त्व के प्रति सचेत नहीं है, उसकी क्षमता अथवा प्रतिभा स्व को तथा उसकी वासनाओं को ही महत्त्व एवं बल प्रदान करती है। वह व्यक्ति को स्व–केंद्रित तथा विलग बने रहने की ओर प्रवृत्त करती है; वह अपने को एक श्रेष्ठ एवं पृथक सत्ता

and pain. The self is a bundle of many entities, each opposed to the others. It is a battlefield of conflicting desires, a centre of constant struggle between the"mine" and the"not-mine; and as long as we give importance to the self, to the "me" and the"mine," there will be increasing conflict within ourselves and in the world.	के रूप में अनुभव करता है। यह सब अनेक बुराइयों को तो उत्पन्न करता ही है, निरन्तर कष्ट एवं संघर्ष का भी कारण बनता है। स्व अनेक परस्पर विरोधी हस्तियों की गठरी है। ये इकाइयाँ संघर्षरत वासनाएँ हैं और स्व इनका युद्ध-क्षेत्र है, एक ऐसा केंद्र जिसमें 'मेरे' और 'तेरे' के बीच में निरन्तर संघर्ष होता रहता है, और जब तक हम स्व को अर्थात् 'मैं' और 'मेरे' को महत्त्व प्रदान करते रहेंगे हमारे भीतर तथा बाहर विश्व में संघर्ष बढ़ता चला जाएगा।
A true artist is beyond the vanity of the self and its ambitions. To have the power of brilliant expression, and yet be caught in worldly ways, makes for a life of contradiction and strife. Praise and adulation, when taken to heart, inflate the ego and destroy receptivity, and the worship of success in any field is obviously detrimental to intelligence.	एक सच्चा कलाकार स्व के प्रदर्शन और उसकी महत्त्वाकांक्षाओं से परे होता है। तेजोमय अभिव्यक्ति की क्षमता रखना और फिर भी सांसारिक बंधन में पड़े रहना एक ऐसा जीवन निर्मित करता है जिसमें अंतर्विरोध और संघर्ष निहित हैं। प्रशंसा एवं चाटुकारिता को जब सच मान लिया जाता है तो वह अहंकार को फुला देता है और ग्रहणशीलता को नष्ट कर देता है। स्पष्ट है कि किसी भी क्षेत्र में सफलता मात्र की उपासना प्रज्ञा के लिए हानिकारक है।
Any tendency or talent which makes for isolation, any form of self-identification, however stimulating, distorts the expression of sensitivity and brings about insensitivity. Sensitivity is dulled when gift becomes personal, when importance is given to the "me" and the "mine" - I paint, I write, I invent. It is only when we are aware of every movement of our own thought and feeling in our relationship with people, with things and with nature, that the mind is open, pliable, not tethered to self-protective demands and pursuits; and only then is there sensitivity to the ugly and the beautiful, unhindered by the self.	कोई भी प्रवृत्ति अथवा योग्यता जो पृथकता उत्पन्न करती है, अथवा इसका किसी भी रूप में स्व से तादात्म्य होता है, चाहे कितनी भी प्रेरणादायक क्यों न हो, संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति को विकृत करती है तथा संवेदनहीनता लाती है। जब प्रतिभा व्यक्तिगत हो जाती है, जब 'मैं' और 'मेरे' को महत्त्व दे दिया जाता है – मैं चित्र बनाता हूँ, मैं लिखता हूँ, मैं आविष्कार करता हूँ, तो संवेदनशीलता कुण्ठित हो जाती है। जब हम अन्य लोगों, वस्तुओं एवं प्रकृति के साथ सम्बंध और व्यवहार में अपने विचार एवं भावना की प्रत्येक गति के प्रति सचेत होते हैं, केवल तभी दिलो-दिमाग खुला हुआ और लचीला होता है व आत्म-रक्षात्मक आवश्यकताओं और प्रयत्नों से बँधा नहीं रहता, और केवल तभी सुंदर एवं असुंदर के प्रति ऐसी संवेदनशीलता होती है जो

	स्व से मुक्त है।
Sensitivity to beauty and to ugliness does not come about through attachment; it comes with love, when there are no self-created conflicts. When we are inwardly poor, we indulge in every form of outward show, in wealth, power and possessions. When our hearts are empty, we collect things. If we can afford it, we surround ourselves with objects that we consider beautiful, and because we attach enormous importance to them, we are responsible for much misery and destruction.	आसक्ति से सुंदर अथवा कुरूप के प्रति संवेदनशीलता नहीं आती; वह प्रेम द्वारा आती है, जब स्व से उत्पन्न द्वंद्व नहीं होते। जब हम भीतर से क्षुद्र होते हैं, तब सभी प्रकार के बाहरी दिखावे में, अर्थात् धन, शक्ति एवं सम्पत्ति में रस लेने लगते हैं। जब हमारे हृदय खोखले होते हैं, तो हम वस्तुओं का संग्रह करते हैं। यदि हमारे वश में हो तो हम अपने चारों ओर ऐसी वस्तुएँ एकत्रित कर लेते हैं जिन्हें हम सुंदर समझते हैं, और चूँकि हम इन वस्तुओं को अत्यधिक महत्त्व देते हैं, इसलिए तमाम विपदा और विनाश के लिए हम ही ज़िम्मेदार हैं।
The acquisitive spirit is not the love of beauty; it arises from the desire for security, and to be secure is to be insensitive. The desire to be secure creates fear; it sets going a process of isolation which builds walls of resistance around us, and these walls prevent all sensitivity. However beautiful an object may be, it soon loses its appeal for us; we dull. Beauty is still there, but we are no longer open to it, and it has been absorbed into our monotonous daily existence.	परिग्रह की भावना सौंदर्य-प्रेम नहीं हो सकती; वह सुरक्षा की कामना से उत्पन्न होती है, और सुरक्षित होने का अर्थ है असंवेदनशील होना। सुरक्षित होने की इच्छा भय उत्पन्न करती है, वह पृथकता की प्रक्रिया का सूत्रपात करती है और उससे हमारे चारेां ओर प्रतिरोध की दीवारें खड़ी हो जाती हैं। ये दीवारें संवेदनशीलता के रास्ते की रुकावट बनती हैं। कोई वस्तु कितनी ही सुंदर क्यों न हो, शीघ्र ही हमारा आकर्षण समाप्त हो जाता है। सौंदर्य अभी भी वहाँ है परंतु हम उसके प्रति जागरूक नहीं हैं; वह हमारे नीरस दैनिक अस्तित्व का हिस्सा बन गया है।
Since our hearts are withered and we have forgotten how to be kindly, how to look at the stars, at the trees, at the reflections on the water, we require the stimulation of pictures and jewels, of books and endless amusements. We are constantly seeking new excitements, new thrills, we crave an everincreasing variety of sensations. Art is this craving and its satisfaction that make the mind and heart weary and dull. As long as we are seeking sensation, the things that we call beautiful and ugly have but a very superficial significance.	चूँकि हमारे हृदय मुरझा चुके हैं और हम भूल गये हैं कि सौम्य व स्नेहास्निग्ध कैसे हुआ जाता है, सितारों को, जल में पड़ी परछाइयों को कैसे देखा जाता है, हमें चित्रों, जवाहरातों, पुस्तकों और दूसरे तमाम मनोरंजनों से प्राप्त उत्तेजनाओं की आवश्यकता पड़ती है। हम निरन्तर नवीन उद्दीपनों की, नवीन रोमांचों की खोज में लगे रहते हैं; हमें नूतन से नूतन उत्तेजनाओं की वासना होती है। यह वासना तथा उससे प्राप्त तुष्टि ही कला है जो हमारे मन तथा हृदय को थका हुआ व नीरस बना देती है। जब तक हम

There is lasting joy only when we are capable of approaching all things afresh - which is not possible as long as we are bound up in our desires. The craving for sensation and gratification prevents the experiencing of that which is always new. Sensations can be bought, but not the love of beauty.	उत्तेजना की तलाश में हैं, तब तक किन्हीं वस्तुओं को सुंदर अथवा कुरूप कहने का कोई विशेष अर्थ नहीं है। स्थायी आनंद तभी संभव है जब हम वस्तुओं को ताज़गी के साथ देख सकें – परंतु जब तक हम अपनी वासनाओं में जकड़े हुए हैं, यह संभव नहीं है। उद्दीपन तथा तुष्टीकरण की यह इच्छा हमें नित्य नूतन का अनुभव नहीं करने देती। उत्तेजनाएं खरीदी जा सकती हैं, परंतु सौंदर्य के प्रेम को खरीदा नहीं जा सकता जा।
When we are aware of the emptiness of our own minds and hearts without running away from it into any kind of stimulation or sensation, when we are completely open, highly sensitive, only then can there be creation, only then shall we find creative joy. To cultivate the outer without understanding the inner must inevitably build up those values which lead men to destruction and sorrow.	अपने भीतर के खोखलेपन के प्रति जब हम सचेत होते हैं तथा उससे किसी भी प्रकार के उद्दीपन अथवा उत्तेजना में पलायन नहीं करते, जब हम पूर्णतः निष्कपट एवं अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, तभी सृजनशील आनंद की अनुभूति हो पाती है। अभ्यंतर को समझे बिना बाह्य का परिष्कार करना निश्चय ही उन मूल्यों का निर्माण करना है जो मनुष्य को दुख एवं बरबादी की ओर ले जाते हैं।
Learning a technique may provide us with a job, but it will not make us creative; whereas, if there is joy, if there is the creative fire, it will find a way to express itself, one need not study a method of expression. When one really wants to write a poem, one writes it, and if one has the technique, so much the better; but why stress what is but a means of communication if one has nothing to say? When there is love in our hearts, we do not search for a way of putting words together.	किसी तकनीक को सीख लेने से हमें कोई नौकरी मिल सकती है, पर उससे हम सृजनशील नहीं बन पाएँगे; परंतु यदि आनंद है, यदि सृजनशीलता की आग है, तो वह स्वयं को अभिव्यक्त करने का मार्ग खोज ही लेगी; उसकी अभिव्यक्ति के तौर–तरीके के अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। जब कोई व्यक्ति कविता लिखना चाहता है तो वह कविता लिख लेता है और यदि उसके पास उसकी तकनीक भी है तो अच्छा ही है। परंतु यदि अभिव्यक्त करने के लिए कुछ है ही नहीं तो सम्प्रेषण के साधन पर ज़ोर क्यों दिया जाए? जब हमारे हृदय में प्रेम होता है, तब शब्दों के संयोजन के लिए कोई शैली सीखने की आवश्यकता नहीं होती।
Great artists and great writers may be creators, but we are not, we are mere spectators. We read vast numbers of books, listen to magnificent music,	महान कलाकार एवं महान लेखक सर्जक होंगे, परंतु हम सृजनशील नहीं हैं; हम केवल दर्शक हैं। हम बड़ी संख्या में पुस्तकें पढ़ते हैं, बढ़िया–से–बढ़िया संगीत

look at works of art, but we never directly experience the sublime; our experience is always through a poem, through a picture, through the personality of a saint. To sing we must have a song in our hearts; but having lost the song, we pursue the singer. Without an intermediary we feel lost; but we must be lost before we can discover anything. Discovery is the beginning of creativeness; and without creativeness, do what we may, there can be no peace or happiness for man.	सुनते हैं, कला-कृतियों का अवलोकन करते हैं, परंतु कभी भी जो श्रेष्ठतम है, परम है, उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति नहीं करते; हमारा अनुभव सदा किसी कविता, किसी चित्र, किसी संत-व्यक्तित्व के माध्यम से होता है। गायन तभी संभव होता है जब हमारे हृदय में संगीत हो; परंतु संगीत को तो हम खो बैठे हैं, संगीतज्ञ के पीछे दौड़ते रहते हैं। किसी मध्यस्थ के अभाव में हम अपने को खोया हुआ अनुभव करते हैं; परंतु किसी भी खोज के लिए पहले हमारा खो जाना आवश्यक है। खोज सृजनशीलता का आरंभ है और सृजनशीलता के अभाव में हम चाहे जो भी करें, मनुष्य के जीवन में सुख तथा शांति संभव नहीं।
We think that we shall be able to live happily, creatively, if we learn a method, a technique, a style; but creative happiness comes only when there is inward richness, it can never be attained through any system. Self-improvement, which is another way of assuring the security of the "me" and the"mine," is not creative, nor is it love of beauty. Creativeness comes into being when there is constant awareness of the ways of the mind, and of the hindrances it has built for itself.	हम सोचते हैं कि यदि हम किसी तकनीक, किसी शैली को सीख लें तो सुखी एवं सृजनशील जीवन जीने में समर्थ होंगे; परंतु सृजनात्मक सुख तभी आता है जब आंतरिक समृद्धि होती है; वह कभी किसी व्यवस्था-प्रणाली के माध्यम से नहीं प्राप्त हो सकता। आत्म-सुधार भी 'मैं' और 'मेरे' की सुरक्षा के आश्वासन को प्राप्त करने का एक दूसरा तरीका है। वह सृजनशीलता नहीं है और न ही वह सौंदर्य-प्रेम है। सृजनशीलता मन की प्रक्रिया के प्रति और उसके द्वारा निर्मित बाधाओं के प्रति सतत जागरूकता से आती है।
The freedom to create comes with self-knowledge; but self-knowledge is not a gift. One can be creative without having any particular talent. Creativeness is a state of being in which the conflicts and sorrows of the self are absent, a state in which the mind is not caught up in the demands and pursuits of desire.	सृजन के लिए आवश्यक स्वतंत्रता अथवा मुक्ति आत्मबोध के साथ आती है, परंतु आत्मबोध कोई नैसर्गिक वरदान नहीं है। बिना किसी विशिष्ट प्रतिभा के भी कोई व्यक्ति सृजनशील हो सकता है। सृजनशीलता एक ऐसी अवस्था है जिसमें स्व के द्वंद्वों और दुखों का अभाव होता है, जिसमें मन वासना के तकाज़ों और उसकी कोशिशों की जकड़ में नहीं होता।
To be creative is not merely to produce poems, or statues, or children; it is to be in that state in which truth can come into being. Truth comes into being	सृजनशील होना केवल कविताओं अथवा मूर्तियों को रचना या संतान उत्पन्न करना नहीं है; यह तो एक ऐसी अवस्था है जिसमें सत्य अभिव्यक्त होता है। सत्य की

when there is a complete cessation of thought; and thought ceases only when the self is absent, when the mind has ceased to create, that is, when it is no longer caught in its own pursuits. When the mind is utterly still without being forced or trained into quiescence, when it is silent because the self is inactive, then there is creation.	अभिव्यक्ति तभी होती है जब विचार का पूर्णतः अंत हो जाता है; और यह तभी होता है जब स्व अनुपस्थित हो, मन रचना करना बंद कर दे अर्थात् जब वह अपने प्रयासों में नहीं फँसा हो। जब मन पूर्णतया शांत हो और इस शांति के लिए उसे न तो बाध्य किया गया हो और न कोई प्रशिक्षण दिया गया हो; जब उसकी शांति इसीलिए हो कि स्व निष्क्रिय है – सृजन तभी संभव होता है।
The love of beauty may express itself in a song, in a smile, or in silence; but most of us have no inclination to be silent. We have not the time to observe the birds, the passing clouds, because we are too busy with our pursuits and pleasures. When there is no beauty in our hearts, how can we help the children to be alert and sensitive? We try to be sensitive to beauty while avoiding the ugly; but avoidance of the ugly makes for insensitivity. If we would develop sensitivity in the young, we ourselves must be sensitive to beauty and to ugliness, and must take every opportunity to awaken in them the joy there is in seeing, not only the beauty that man has created, but also the beauty of nature.	सौंदर्य का प्रेम स्वयं को किसी गीत में, किसी मुस्कान में अभिव्यक्त कर सकता है और मौन में भी; परंतु हममें से अधिकांश में मौन रहने की और कोई रुझान नहीं होता। पक्षियों तथा भ्रमण करते हुए बादलों के अवलोकन करने का हमारे पास समय नहीं है, क्योंकि हम अपने कार्यों और अपने भोगों में अत्यधिक व्यस्त हैं। जब हमारे अपने हृदय में ही सौंदर्य नहीं है तो हम बालकों की कैसे सहायता कर सकते हैं कि वे सचेत एवं संवेदनशील बनें। हम सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनना चाहते हैं, पर कुरूपता से बचना चाहते हैं। कुरूपता से बचना असंवेदनशीलता की निशानी है। यदि हम बालकों में संवेदनशीलता लाना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम स्वयं सौंदर्य और कुरूपता दोनों के प्रति संवेदनशील हों। बालकों में उस अवलोकन के आनंद की अनुभूति को जगाने के लिए हर संभव प्रयास की आवश्यकता है – ऐसा आनंद जिसकी अनुभूति केवल मनुष्य द्वारा निर्मित सुंदर कृतियों का ही नहीं वरन प्रकृति के सौंदर्य का अवलोकन करने से भी होती है।